

॥ अथ माहम हक इङ्गोक दि मूठी विभाष ॥

| গুকরণ | र्भाष्ट्र | ব্যবস্থায়া" |
|--|-----------|--------------|
| শ্বাংশ-জ্বাংকিথন• | \$ | > |
| দায়োদ্বিধঃ অপুতিবন্ধঃ সপুতিবন্ধ* চ | ર | 5 |
| বিভাগশ ্লেথকথন ° | 3 | > |
| ভাত্ <u>তনি</u> ৰূপণ | ೨ | 3 |
| স্বস্থারকংন॰ | 9 | • |
| বছস্বাহিকৈক্দুব্যবিভাগগীতিঃ | 8 | 8 |
| দানস্থলে স্ত্রনির্গয়ঃ | œ | æ |
| অ্রনাশস্য কারণ কথন | ঙ | & |
| পিতরি কার্য্যাক্ষমে ইপি পুত্রা 🏻 | | |
| ণা॰ বিভাগে ইস্বাতন্ত্ৰ্যকথন ং 🕽 | • | 9 |
| পিত্ৰনুক্তয়া হ্বা পাৰ্জিতসা) | | : |
| পি বিভাগদানাদিকথন॰ ∫ | 9 | b |
| পৈতামহধন বিভাগকালঃ | Þ | > |
| প্তীরংজানিবৃত্তিকালক থন° | ь | >0 |
| বৈতামহে পিতাপুলয়োবিভাগঃ | ه م | >> |
| পিতৃঃ মো পাজিতে বিভাগঃ | >0 | >2 |
| পিতৃক্তবিসম বিভাগঃ | 32 | 30 |
| পিতৃক্তাশান্ত্রীয়বিভাগাসিদিঃ | >> | |
| ক রণবিবাহের বিসমবিভাগাসিদিঃ | /3२ | 3¢ |
| বিভাগমনীহ্মানস্যাপিকিঞ্ছেয় | >2 | >0 |

| পুকরণ° | প্ষে | ব্যবস্থায়া' |
|--|----------------------|--------------|
| জীব্দিভাগে প্রাঃ সংমাণ্শিকাঃ | 50 | 39 |
| थ्यमा भा अञ्च क्षांन॰ | 58 | J. Com |
| পুজাজিতে শিহুর শদর্ | 38 | 3.20 |
| জ্নেকপি হুকাণা পি হুতোবিভাগঃ | » : | २० |
| একেছ্যাথিকিচাগঃ বাল্য } নস্য মিত্রাদৌ স্থাপনঞ | 335 | 23 |
| হৈপত্কৰ্ণাক্ৰণমাাৰশাক্তা | 59 | ২২ |
| নাঠে জ্ তস। বিভাগকথন° | 37 | २७ |
| নিতাকরাম: ১পৈত্ ক্ষনসাপুঞা 🕽 🦠 | 55 | ₹8 |
| জীন্তবাহ্ ননজেৱা নসিদ্নিঃ | 72 | \$ (0 |
| সাধার-ভাবর্ষা সকলহারাদানুম তিং বিনামি তাকরামতে দানাসিলিঃ | 256 | .,& |
| मास्यात्राभारक मजनग्रामान्युकारीय } रेसकक् उमारस्यमण्यास्याः (मास्तिः } | , 4, ¢ | રવ |
| व्याप ्का नशकक् इश्वतम् । गामि निक्षिः | \$2 | 29 |
| (भीय) दर्शक योग | \$ 3 | 20 |
| বিভাগানস্তরোৎপল্লস্য বিভাগঃ | ११ | 22 |
| বিভ্ৰুত্বসা ভাগকখন | \$3 | ್ರಶಿಣ |
| বিদ্যাসময়ে হাজুর ক্ষান্তগভ | | |
| য়াঃ পশ্চাজ্ঞাতনা বিভাগকথন॰ } | ₹8 | 33 |

| ।! দায়দত্তকরত্নাকরে সূচী | পত্ৰ° !! | 3 |
|--|--------------|----------------|
| পুকরণ° | બાર્ફ | ব্যবস্থায়াণ |
| স্পান্ত রিয়াঃ পুসবপুতীক্ষণ° | ३७ | 99 |
| ধুন্ য্যবিভাগকালকথন° | २.৫ | 30 |
| পিত্রুপরমে বিদ্যমানায়া° } মাতরি তদাজ্জয়া বিভাগঃ } | ২৬ | ૭૯ |
| অস্য মতান্তর° | २७ | ৩৬ |
| জোষাংশনিযেখঃ | ঽঀ | ૭૧ |
| বিভাগানধিকারিনিৰূপণ° | ২৮ | જીવ |
| ক্লীবভেদাস্তেষা° লক্ষণঞ্চ | ೨೦ | 3 5 |
| অচিকিৎস্য রোগাঃ | ७२ | ৫১ |
| বিভাজ্যধনকথন॰ | 3 <i>e</i> - | 80 |
| অবিভাজ)ধনকথন° | v e | 8> |
| টৈৰ বাহিন ধনস্থ লপ প | ૭૭ | 8 ২ , |
| বিদ্যাধনপুকারাঃ | ૭૭ | e 8 |
| विभाधनय दशः | 96 | 88 |
| সম্বিদ্যাধিক্বিদ্য য়ো বিভাগঃ | •>> | 3 8 |
| বিদ্যাধনে স্টুম্পুতিপালকস্যা°শঃ | 60 | 8 % |
| সাধারণবাহনাযুধাদ্যাশ্বিত্য যো) ধন মর্জয়ভিতদ্ধনবিভাগপুকারঃ } | ৩৯ | 89 |
| ধু জ†হত ধনকথন॰ | 80 | 8b- |
| প্ৰন্যান্যবিভাজ্যানি | 82 | 82 - |
| দেবতাপুতিমাদিবিভাগপুকারঃ | 8 ર | (%) |
| পুসাদলক্ষাৰ্রস্য বিভাগঃ | 8/3 | & 2 |
| পূর্বনষ্টোঞ্ তন্থারবস্য বিভাগঃ | 88 | 83 |

| 8 | ₹ | i | u | দায়দক কর্জুকিং | সূচীপত্ৰ° | 11 |
|---|---|---|---|-----------------|-----------|----|
|---|---|---|---|-----------------|-----------|----|

| ্র ৪ া দায়দক্তকরজাকতে সূচীণ | প্ৰ° ।৷ | 1 - 2 4. 1 - 2.1 |
|--|----------------------|----------------------------|
| পুকরণ | श्रष्ठ | বাৰস্থায়া' |
| ভীব্তাল্ক (রন্)বিভাক্যকথন | 88 | . ૯૭ |
| शिञ्द् ठवञ्चा षिङ्गाषात्जात्कु प्रमः | 8@ | @ 8 |
| क्यापिनक्षधनमा विভाগक्षनः | 80 | 00 |
| ভটুমার্থক্ তর্ণাপাকরণ° | &3 | ৫৩ |
| বিভক্তৈদ্যানুৰপদংশাদাতব্যঃ | <i>&</i> 3 | 69 |
| দাসকৃতণ্যপি যানিনাদেয় | 89 | 42 |
| গুচদুব্যশক্তারাং কোশদানবিবিঃ | 85 | ራን |
| ्र ज॰म् ष्ट यन स्कल ' | 87 | 20 |
| সংস্কু ধনবিভাগেজে গ্রাণশনিষে বঃ | ٤٤ | ৬১ |
| ত্র্পার্ককোন্য শভাক্ | 00 | હર |
| বিভাক্ষরাশ স্ত্রমতে মৃতিসংস্প্তি } নোধনংসোদরসংস্তা গৃহ্লীয়াৎ } | () e | 30 |
| জীমূতবাহনমতেপুএয়া মৃত্যা } লংস্টিনোধনংতংপতীগৃহীয়াং } | دی | ⊗8 |
| সসত্ত্ত্রীসংস্ইডু'ত্রিদ্য } মানস্তলেবিভাগপুকারঃ } | ৫ | ৬৫ |
| विधानानमः मृष्टीमः मृष्टेरेव 👔 | V | |
| माञ्हरतविভाগপুकांबः } . | ৫२ | ৬৬ |
| জ্যেষ্ঠা॰শস্যনিক্ষ্টির্থকথন॰ | 6.3 | ৬৭ |
| প্রপুশংসা | 8 | ঙ৮ |
| क्रमू अधरम मुथमः शः। विकादः | 00 | 95 |
| अ ङ्गोमानामिनियधः | 400 | 90 |
| পতিপুৰবিহীন য়াঃপ্ৰিয়াভত্ নলপার | <u>তন্ত্র্য়</u> °৫৭ | 95 |
| পত্যপ্ৰারার্থ জীকতন্তাব্রদানাদি | 6P | ૧૨ |

| পুকরণ | र्वाष्ट्र | ব্যবস্থায়া' |
|------------------------------------|-----------------|--------------|
| অপুএধনে পত্মভাবে কন্যাধিকারঃ | 60 | 90 |
| মৃতীয়াঃপিতৃসংক্রান্তেধনেইধিকারিকথ | ন॰৬১ | 98 |
| দৌহিপ্রাধিকারঃ | ৬২ | 90 |
| পিত্রধিকারঃ | ৬৩ | ৭৬ |
| মাত্র ধিকারঃ | &: 5 | 99 |
| ভুাত্রধিকারঃ | ૭૭ | 95 |
| নোদরাসোদরোভয়বিদ্য | | |
| যানে মোদরস্যাধিকারঃ∮ | ⊌ 8 | 95 |
| অবিভক্ততাবরে বিশেষবিধিঃ | & 8 | ৳• |
| ভুাতৃপুত্রাদ্যধিকারঃ | <i>D&</i> | ৮১ |
| ভ্যুত্পৌত্রাদ্যধিকারঃ | 3 & | ৮২ |
| পিতামহ ্থিকারঃ | ৬৬ | ७ ७ |
| পিতৃব্যাদিসপিগুধিকারঃ | હહ | b 8 |
| সপি গুক্তীণামনখিকারঃ | 90 | ৮৫ |
| আটার্য্যাদ্যবিকারঃ | ٩o | ৮৬ |
| সমানপুকবরাধিকার: | 95 | b 9 |
| বুক্সণাধিকারঃ | 95 | र्जस |
| ব্রাহ্মণধুনাতিরিক্তে রাজ্যেধিকারঃ | 95 | とう |
| বানপুস্থাদিধনাধিকারিব | 92 | 20 |
| মিতাকরামতে অপুত্রধনাধিকারিণঃ | 99 | 22 |
| সংস্ষ্ঠিনোমৃতস্য ধনে ভ্রারণিকারঃ | 93 | 52 |
| সংস্প্রাসেদ্রপথকসহোদর 🕽 | | |

| ્ક | It did a man | | | |
|----------------------------------|--|------------------------------|------------------|-----|
| | 78.A.D | र्ग ः, | ব্য বস্থা | য়া |
| • ,र | | 93 | 28 | |
| # S 4 4 | | 99 | 20 | |
| য়েও গ্ৰ | | 96 | 2.9 | |
| | বিক্তস স্থল্প° নক্ষ্রীব্য লক্ণ° | 9 '7/ | ۵٩ | |
| | নিক্রীব্ নলকণ | 95 | 27 | |
| | লেক্ডাৰণৰ জীঞ্নক্পানং | 95 | * * | |
| •्यानसङ्ग्रह •धनुबन ञ् | | 95 | > 0 | |
| | া জীবেমনিক্পণ | ৭৯ | 303 | |
| | ক্রত জীধন প্রাদিভিদের | t o | ১০২ | |
| গ্ৰীধনদান | | b • | ८०६ | |
| জাবনে ভল | িদীনামস্বাভন্ত্য | l- · | :03 | |
| | নৰ, স্ত্ৰাধনভোক্তদণ্ডঃ | 6-3 | 206 | |
| হ পুঁচািয় | ৱীধ নভো গে পুনঃপুতাপনি | 5 2 | 203 | |
| | ज्जांनीना क्षीयनश्रुशायिकाः | ∄ः ८२ | 209 | |
| * | ালন্ধপ্রীবদেভত্র বিভারঃ | 60 | برد | |
| গ্রিয়াঝলা | क्षारमञ्जूरभारम् १८, १० १०।१० | t-8 | :03 | |
| | ভিচারাখাঃ স্ত্রীধনোলছদ ন ং - | 18 | :50 | |
| न तिया र्शि | ारिकी गांध | ba. | 27.2 | |
| ৰাড়ভাল ম | তে যৌজুব্ধনাবিকারিণঃ | ७ द | 225 | |
| নু বল্লাব | । धराविकादिकापा॰ | b 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 550 | |
| स्त्री दृद्धा | ° মাত্রশুসারতোবিভাগঃ | 2-9 | 228 | |
| डाप्ता4 ंड | াহপুকার: | 1 -9 | 338 | |
| বাফাৰ্বাং | ্ল ক্ষৰণ | b b | 330 | |
| | | • | | |

| • | طحم | ~~~~~~******************************** |
|--|-----------------------|--|
| পুকরণ | भ्रष्ठ | ব্যবস্থানা° |
| দৈৰবিবাহকথন' | かか | 223 |
| আৰ্বিবাহ্ল ক ণ° | b - b ' | 2:4:6 |
| পুদাপ তাবিবাহস্বৰূপণ | P-20 | 229 |
| গান্ধৰ্বিবাহলকণ° | トン | \$ ₹ 0.0 |
| আসুরবিধাংযক্তপ | 90 | 252 |
| রাক্সবিবাহল স ্ণ° | ఏం | ३२२ |
| পৈসাচবিবাহ নিৰূপণ° | 200 | 25.3 |
| দার ভাগনতেরু কাদিবিবাছ } চতু ইয়লক গ্রীধন্যবিকারিণঃ } | b) | \$<8 |
| व्यामृतामिरियार्ठ हु है स नक्क जोधनाधिक तिनः | 25 | ऽ२७ |
| অংবীভূরত <u>্রিখনাধিকারিণঃ</u> | 24 | ऽ२७ |
| ব্রদ্ভাপুজ্পুয়ন্বরাধিকারঃ | 30 | ১२१ |
| বর্মস্থাতিরি ভাপুদঃস্থীধনাধিকারিণঃ | 28 | 35F |
| নিভাক্ষরানতে স্ত্রীধনাধিকারিণঃ | ∌હ | े २ क |
| <u>দু</u> (হতুদৌহিত্রীসলবায়ে বিশেষঃ | పడ | 300 |
| অনেক বৈমাত্রেয় বুহিত্সমবায়ে বিভাগঃ | 20 | 2.52 |
| অপুকঃস্ত্রীখনাধিকারিণঃ | ે છ | ५ ०२ |
| ব্যুক্সাদিবিবাহিতন্ত্রীয়নধিকারিণঃ | 29 | 500 |
| म्ञ्सार्यायतन्धिकातिनः | 27 | <i>></i> 08 |
| অসংক্তানাং সংস্কারঃ | シゲ | 200 |
| অবিবাহিত ভগিনানা বিবাহনোগাধনদ | াৰ ১৯ | 308 |
| মৃতপুেত্যোপকারার্থে তদ্ধনাৰ্ক্যয়ক্থ | 4° >> | 209 |

॥ দাস্দত্তকর্ত্তাকরে সূচী**পত্ত** ॥

| K dia (a) | नारह | ব্যবস্থারা ^e |
|--|--------------|-------------------------|
| পুক্রণ° | 300 | 202 |
| দানসাদেশক, লপু:লাদিকথন | >=> | 202 |
| প্রাকৃত কল্পী ধনবাই বিশেষ | ३०२ | >8 € |
| ্রালাকাদ্র ট্রালাক স্থান্ত্রিকাদ্র বিশেষ্ট্র | :00 | 282 |
| ভূত্ৰত্থাৰৱে বিশেষঃ বিধানবহুবি নিমাক শ্ভদানা দিক্সিঃ | 500 | > 8₹ |
| ্ববিচাগৰ বেশিক, ত্ৰা বিভাগঃ বিচাগৰ বেশিক, ত্ৰা বিভাগঃ | 500 | 383 |
| অবিভত্তদশীরাভুক্ত 🚶 | 308 | 388 |
| দুব্যনাথিভাজাত্বকথন° } | \$ 08 | 784 |
| বিভাগসনো এনির্বার্গ বিভাগসত্তিখনপুকারঃ | 200 | >8 |
| বিভক্তকৃত্য° | 200 | 389 |
| বিদেশাগভ্যা বিভাগঃ | 309 | 781- |
| বিল, গঃসক্দেবভবতি | 702 | 78% |
| অন্যাপাবদেঃ | 7.4 | >00 |
| ইচ্ছাক্তবি লগ্ মাপ শ্চ। } ছিপুতিপদাগানমাদঙঃ } | 202 | 362 |
| বিভাগবঞ্চকতা নিন্দা রাজদপুশ্চ | ۵٥. | 5@5 |
| বিভক্তৈঃ স্থাতান্ত্ৰ্যণ দালাদি ক ৰ্ব্য ণ | >>0 | 260 |
| ই তিদায়দভকরত্নকরে দায় ভাগনাবিহ | <u> </u> | ो गमार्था।। |

॥ माध्रमख्यबद्गाकत्॥

॥ ভূমিকা ॥

ভারতবর্ষের মধ্যে বাহ্মণাদি ষাবন্ধন ও বর্ণসন্ধর আপন আপন ধর্মপুতিপালন করত বাস ককিতেছেন তাহারদি গের আচার ও ব্যবহার এবং পুায়শ্চিত্ত নির্বাহের নিমিত্তে মনুও ছাত্র ও বিষ্ণুও হারীত ও যাজ্রবন্ধা ওউলানা ও ছাত্র রাও যম ও আপিত্তম ও সম্বর্ড ও কাত্যায়ন ও বৃহস্পতি ও পরাশার ও ব্যাস ও শান্ত্র ও লিখিত ও দক্ষ ও মৌতম ও ছাত্রপতি ও বনিষ্ঠিও মরীতি ও দেবল ও নারদ পুভৃতি ধর্ম লাত্রক্তা অনেক শ্বাহি সংহিতা করিয়াছেন।

তাহাতে কোন কোন স্থলে নুনিরদিগের মতের বিভিন্নতা আছে তাং বে এ ঋষির শাখার যে যে বান্ধন তাহারাই পুতিগালন করিয়াছেন এবং তাহারদিগের শিষ্যওয়জমান যে যে ক্তিয়াদি তাহারা ও সেই সেই মত স্বলম্বন করিয়াছেন্।

তাহারপর সেই সেই বংশে যাহারা আচার্য্য হইয়াছিলেন তাহারা ঐ সকলমুনিবচন পুমাণদিয়া অন্যহ মুনি বচনের তদনুযায়ি অর্থ করিয়া পৃথকং স্মৃতি সংগৃহ করিয়াছেন ৷ সেই সকল স্মৃতিশাস্ত্র ততদেশীয় রাজার সহায়তায় পুচ লিত হইবাছে তাহারমধ্যে বিজ্ঞানে শ্রাচার্যক্তযাজ্ঞবন্ধা লাহিতার ব্যাখ্যা নিতাক্ষরা নামে যে ধর্ম শাস্ত্র সেই অত্যু ভুল সর্বত্র হিন্দুখানে নান্যরপে পুচলিত হইতেছে । ভাহার পর এতক্ষেশে জীনূতবাহন নামা এক মহা মহো পাধ্যায় হইরাছিলেনভিনি ধর্মারল্লনানে এক স্মৃতি সংগৃহ করিয়াছেন তাহার ব্যবহারৈকদেশ দায়ভাগ মাত্র এদেশে আছে আর পাওয়া যায় না ।।

সংপুতি ঐ দায়ভাগউড়িশা অবধি বেহারের পূই আশাম এবং মেকলির পশ্চিম আর ভোটানের দক্ষিণ ও সন্দুর কিঞ্চিৎ উত্তরএইরূপ চতুঃসীমাবচ্ছিরপূর্ব পশ্চিনে কিঞিৎ ন্যুন বা অধিক ২০০ দুই শত ক্রোশ আর দক্ষিণে তরে অনু মান নাদৈক শত ক্রোশ ১৫০ পযান্ত বাঙ্গালাদেশে। ইয়ার মধ্যে রাচ ও গৌড় ও পৌঞু এবং বরন্দে পুভৃতি অনে ক দেশ ভেদ বোধক সংজ্ঞা আছে কিন্তু এনকলই বসদেশে রঅন্তংগাতি ইহাতে ঐ দায়ভাগনান্য রূপে পুচলিত আছে এবং ঐ মিতাক্ষরা সহিত যে যে বাবস্থার ঐক্য হয় তাহা অন্য দেশে ও চলে।

ভাষার পর অনেক পণ্ডিত এইদুই গুন্তর তাৎপর্যাগ্রহণ করিয়া প্থক পৃথক সংস্কৃত রচনাদ্বারা অনেক সংগুক্ করিয়াছেন কিন্তু ভাষাতে বালকের ও অপণ্ডিত লোকের কিন্তা বিচারকর্তা রাজার দিগের কোন উপকার ক্য় না অথাৎ পণ্ডিত ব্যতীত অন্য জোক ভাষা ক্ইতে ব্যবস্থা দিতে পারে না । অতএব আনি ঐ পূর্নোক্ত দুই গুন্তের পুনিদ্ধ ও পুচলিত যত ব্যবস্থা আছে তাহা সংগৃহ করিয়া পুশোত্তর পুামান পৃথক করিয়া দায়দত্তকরত্নাকর নামে এক গুছু পুস্তত করি য়াছি তাহার এই রীতি আদ্য পুান্ত তাবৎ ব্যবস্থার মধ্যে যেযে স্থানে নিভাক্তরাকারে অথবা।জীমূতবাহনের মতের বৈলক্ষণ্য আছে সেই সেই ব্যবস্থার পুশোতে সেইসেই শাস্তে র নামোল্লেথ আছে।

আর এপুস্তকেতে এই বিশেষ আছে যেব্যবস্থায় এক মুনির বচন পুমাণ ছিল সেই ব্যবস্থায় আমি দুই তিন মুনির বচন সেই পুমাণের পোষক দিয়াছি।

আর জীমূতবাহন আপন পুদ্ধের মধ্যে কেবল যুক্তিছার। যে ব্যবস্থা নিরূপণ করিয়াছেন সেই ব্যবস্থায় আমি অন্য গুম্ব ধৃত সুস্পষ্ট বচন পুমাণ দিয়াছি।

এবং দায়ভাগে কন্যা ধনাধিকারে অপুগ্রস্মৃত্স্য জনারী ঝক্থংগৃহ্নীয়াভদভাগে চোটেতি পরাশর ঝিষর নামকরিয়া এই বচন পুনাণ দিয়াছেন তাহা এই গুন্থ পুন্তত করণ কালী ন এইসকল পুনাণের দ্চতার নিমিত্তে এবং অধিক পুনাণ লাভের নিমিত্তে কোম্পানির পাঠশালায় যত মুলিরদিগের সংহিতা ছিল তাহা আমি দেখিয়াছিলামএবংএস্থানে যেযে সংহিতা নাহি তাহা উৎকলদেশে পুদ্ধোত্তম ক্লেত্তে মৃত্তিন গুলহাত আনাইয়া এসকল পুনাণেরসহিতঐক্য করিয়া যাহা অধিক পাইয়াছি এবং ইহার অর্থের সহিত অর্থের ঐক্যতা আছে তাহা সংগুহু করিয়াছি সেই কালীন ঐপরা

শরের বচনের অনুসন্ধান করিলাম ঐ শৃতিতে সে বচন
না পাইয়া মাধবাচার্যাকৃত পরাশরভাষ্যেতে দেখিলাম
শান্ত লিখন আছে রাজধর্মের তিনটি বচন ব্যতীত কোন
ব্যবহার পরাশর কহেন নাহি তাহা সংস্কৃতপাঠশালার
পণ্ডিতরদিগকে এবং সর্বশান্তবিশারদ মহামান্য দর্বোপামা
যোগ্য শ্রীযুত তাক্তর উইলসন সাহেবকে দেখাইয়া তাহার
বৃত্তান্ত ইতুকেশন মুদায়েরে হিতীরবার মুদ্তি দায়ভাগের
২০০ পৃষ্টে লিখিয়াছি।

সংপৃতি সাধ্নোকেরদিগের নিকটে আমার এই পুার্থনা মহাশরেরা সানুকুল হইরা এণুদ্ধে কৃপাদৃষ্টি পুদান করিলে আমার পরিশুন স্বার্থক হয় আর যদি অসাধুলোক স্বপক্ষ না হইরা বিপক্ষতাচরণ করেন তবে তাহাতে কিক্ষতি হইতে পারে ফলেন পরিচীয়তেইতালং বিস্তরেণ।

ষণা সম্ভঃ সম্ভ মম প্রুসন্ধমনসোবাচাং বিচারোদ্যতাঃ নুতে২ স্ভঃ কম্লানি তৎপরিমলং বাতা বিতর্গ ্র যথ 1

কিম্বাভার্থনয়ানয়া যদি গুণোস্ত্যাসাণ ততত্তে মুয়ণ কভারঃ পুথনণ নচেদতিয়শঃ পুতার্থিনা তেম কিং ॥

॥ দায়দত্তকরত্নাকর॥

॥ অভিধেয়াভিধান ॥

শ্রীগণেশায়নমঃ ॥ পুণম্য গোবিন্দ পদারবিন্দ থোগীনু কংকৈরবভাসচন্দৃ । বুন্ধেশনাগেন্দু স্রন্দৃবল্য । নিনা ভিশোতায়কৃৎ সুরেন্দৃ ।। ভাষাসুবর্ণ স্ত্রেণ ব্যবহার্তি মৌজিকৈঃ । মুনিবাছ্মণিতির্মালা কৃতা সর্হার্থসিদ্ধায় ।। শা জ্ঞাত্যাস পরিশুমার্থসেসে চান্সাক্ষেষা সদা বালানাং গল ভূষণংখলন্গাং শুলং তথা বন্ধুলি । দায়াদার্থিবিবাদসংশয় তমশ্ছেদার্কবন্তুতলে ভূষাদ্দকলিছবন্ধপুভূতো রাজ্ঞাং বিচারোদ্যমে ।। অথ দায়ভাগ ব্যবস্থা সংগৃহতে ।।

পুশঃ---মিতাক্ষরাশাস্ত্রমতে দায়ভাগ শব্দের অর্থ কি এবং দায়ভাগ শাস্ত্রমতে বাকি ॥

উত্তর°— যৎস্বামিসমূল্ধাদেব নিমিভাদন্যস্য স্ব ভবতি তদায় ইতি য়িতাক্ষরাশাস্ত্রমতং ॥ । মরণাদিন। পিত্রাদীনাং স্বত্তনাশে পুঞ্জাদি সম্বন্ধাদ্যদ্ধনং পুঞাদিগতং ভবেভ্রদায় ইতি দায়ভাগমতং ॥

অস্য } পিতৃদারাগত দুব্য মাতৃদারগতঞ্ধ থং। কথি
পুমাণ
ত দায়শকেন তদিখাগোগুনোচাতে ইতি

স্তিসংগৃহধ্তং ।। বিভক্তবাং পিতৃদুবাং দায়
নাজ্মহীমিন ইতি নিঘণ্টু কার ধৃতঞ্চ ।।
পুশুঃ — নিতাক্ষরা শাস্ত্রমতে দায় কয় পুকার ।।
ভাসো
দায়োছিবিধঃ । অপুতিবল্বঃ সপুতিবল্বান্ট যথা
পুত্রণ পোতাসহস্ত্রন পৌত্তেন চ
পিতৃধণ পিতাসহস্ত্রন্ধ মণভবতীতা পুতিব
ল্বাদায়ঃ । পিতৃবাভাত্রাদীনাং তু পুআভাবে
স্থাম্ভাবেচ স্বংভবতীতি পুঅসভাবঃ স্থাম
সভাবশ্চ পুতিবল্বস্তদভাবে পিতৃত্বেন ভুাতৃ
ফেন চ স্বংভবতীতি সপুতিবল্বোদায়ইতি মি
তা্ক্রাশাস্ত্রমত।।

পুথনপুশু) বিভাগোনাম দুবাসমুদায়বিষয়াগামনেক স্ব।
স্যোত্র স্বানাণ তদেকদেশেযু ব্যবস্থানমিতি মিতা
কর। শাল্রসমূত ।।

পূথমপুশু বিজ্ঞান তুহিরণাদার পদ্মসাস্থ সোত্তর হিন্দান প্রাণ্ডিলের বৈশেষিকবা বহারানহতয়া অব্যবজ্তিসা গুটিকাপাতাদি না বাঞ্জন বিভাগইতি দায়ভাগশাত্রসন্মত ।। প্রমপুশু বিভাগোর্থসা পিত্রসা পুত্রের্য পুকল্পাতে । দায় সাপুনাণ বিভাগইতি প্রোক্ত তদ্বিবাদপদ বুবৈরিতি নারদ্বচন্ ।। ১ ।।

প্রামঃ --- ষম্ব কি এবং ষম্ম জিখিবারপুতি কি কিকারণ ৷৷

অসো) যথেষ্ট নিয়োগার্হত্ব স্বত্বত তচ্চ ক্রয়পুতিপুরু ভর° ∫ দিলোকব্যবহারজন্য সম্বন্ধিনিধন্যাজনপুতিগু হক্রমাধীনা স্বত্তকার তোচেতিবিদা সন্মত।। অস্য) পিত্র্যুপরতে পুত্রাবিভজেয়ৢর্ধনণ পিতৃঃ। অস্বা পুমাণ ∫ ম্যাংহি ভবেদেষাং নির্দোধে পিতরিস্থিতইতিদেব লবচন ।। দুবামর্জান বুলেণো জায়েদখ্যাপয়েত্ পুতিগৃহ্নীয়াদিতি জ্ঞতিশ্চা। ২ ৷৷

পুশঃ — স্বত্তনকৰ্যাপার কয় পুকার এবং কার কোন ধন অসাধারণ হয় অথাৎ অন্য অন্য অংশী नकरन यं धरनत ज्ञान भाहरज भारत ना ॥

জান্যা) স্বত্তজনকব্যাপারঃ সপ্তবিধঃ ॥ তত্ত্র সম্বন্ধিনিধ ত্ত্র ।।
ত্ত্র সাদিকালীনস্বীয়জীবন সংবিভাগদেত্যকঃ ।। মহারণামধ্যে পতিতাননাপূর্বত্ণকাষ্ঠানাং সংগ্রু হোনিধ্যাদেঃ পুাপ্তিশ্চেতি দ্বৌ।। ক্রয়োলোক পুনিদাইতি ভাষা ৷ ব্ৰাহ্মণসা পুতিগুছ ইতি চন্তারঃ ॥ ক্রিবসা জয়ইতি পঞ্চ ॥ বৈশাসা कभीमकृषिण्खेशालनानी जिष्ठे ॥ भूममा त्र বেতি সপ্ত।। তত্ত্ৰ ব্ৰাহ্মণাদীনাণ চতুৰ্ণণ পুতি গুহজয় সশীদাদি সেবা ৰূপ ব্যাপার জনিতং ধনমসাধারণ বিভাগকালে বন্ধুভিন্নবিভাল্য মিতি বিদাণ নতং ॥

र नर्थविज्ञानभाषामीयां निर्माणी है । न्या निर्माणी निर्मा পুনাণ॰ ∫ গঃ কর্মবোগশচসৎপুতিগুহএবচেতি মনুবচন॰ ॥

তথা স্বামী ঋক্থক্রয়সন্বিভাগপরিগৃহাধিগমেষু ্ৰান্যাধিক লব্ধ ক্ষত্ৰিয়স্য বিজিত নিৰ্বিষ্টণ হৈৰশাশ দুয়োরিতি গোতমবচন**ঞ**।।

— অনেকেন স্বাস্পদীভূত <mark>বহুমূল্য এক থানি বস্ত্</mark>ৰ ্কিংবা অল**ক্ষার ও কৃপবাপী এবং [দাসী বা দাস** ু কিপা সেতৃক্ষেত্ৰ জল নিগম পুণালীইত্যাদিবিভা গের অযোগ্য দুব্যেতে কি পুকারে স্বত্তব্যক্ত হয়।।

) যত্র বিভাগাযোগ্য বহুসাধারণ বস্ত্রাভরণণ 🔰 দাসীদাসৌবা তত্ত্ব তন্মূল্যৈস্তত্তৎ কল্পিড কালবি শেষে তত্ত্ৰ সেবাফলৈঃ স্বত্ব বাজাতে । অথাৎ দুবাং বিক্ৰীয় মূল্যং বিভক্তা বন্ধু ভিগৃহীতবাং ৷ একাদানীমাসমধ্যে পুতোকং দশদিবলপর্যান্ত**ং** ্কন্ম কারয়িত্ব্যা । কৃথবা**পা**গত° জলমুজ্ত্যস্বস্থ পুরোজনানুসারেণ গুছি ।। তথাযুক্ত্যা মেতুকে ভ্ৰাদিক° বিভজনীয় মিতি বিদ্যা° নৰ ত° 11

অসাপু 🔵 বস্তাদয়োবিভাজ্যায়ৈককণ তৈৰ্নবি 🕡 রভ০ ।ধনণ নাগানি 🕽 ভবেৎ সমূদ্ধানা° বস্ত্রাভরণ**স°ি**ণুত° ॥ মধ্যস্থিত সনাজীব্যু দা**ত্ত নৈক্স্য শক্যতে। যুক্ত্যা বিভ**ঞ্চ নীর° তদন্যথানর্থক° ভবে<।। বিক্রীয় বস্ত্রাভরন মৃণগৃদিগুছি লেখিতং। কৃতাল্লঞাকৃতাল্লেন পরিব র্জাবিভজ্যতে।। একাণ্দ্রীণ কারয়েৎকর্মযথাণ্ডেন श्रहश्रह। दस्तुः नगाः ना जारम् सामान ना मणा भ বিধিঃ।। উদ্তাকুগবাপাস্তঃৰানুসারেণ গৃহতে। পুঁচার । যথাংশেন কর্ত্তব্যোভ্রাতৃভিঃ সদেতি বৃহ স্পতিবচনানি ।।

ধনং পত্রনিবিষ্টন্ত ধর্মার্থং যদ্ধিকপিতং ৷ উদক কৈব দাসশ্চ নিবন্ধোয়ঃ ক্রুমাগতঃ ৷৷ ধৃতং বস্ত্রমলঙ্কারোনানুক্রপন্ত যদ্ভবেৎ ৷৷ যথা কালো পযুক্তানিতথা যোজ্যানিবন্ধুভিরিতি কাত্যায় নবচনানি চ ৷৷ ৪ ৷৷

পুশুঃ — দানস্থলে সম্পুদানক ভূকি গৃহীত হইলে স্বত্তমে
কি দানেতেই স্বজ্জে ॥

আস্যা } যথা পিতৃমরণানস্তরণ গর্ভস্বস্য শিশোঃ পিতৃষা ন্তরণ

সংগাপরমেতদুব্যেস্বরণভবতি তদ্ধরাণি দাতৃস্তা।
গাদেব স্বস্থণ ভবতি পুদানমেব স্থান্যকারণণ নতুষীকারস্য তৎকারণতেতি বিদাণনত ।।
আস্থ্য সন্সাপারমুদ্দিস্য ভূনৌ ভোষণবিনিঃ ক্ষিণেৎ।।
মাণণ

বিদ্যতে সাগ্রস্যান্তোদানস্যান্তো, নবিদ্যতইতি

नात्रम बहनः ॥

পান্নাকে কম্পিত দান-পাত্রাভাবে কথা ভবেৎ। গোত্রজভাত্তথা দদ্যাভদভাবেইনা বন্ধু যুইতি ধৌনাবচনঞ্চা

মঙ্গলার্থ° ৰস্তাযন° যজ্জানা পুজানাতে। পুযু জাতে বিবাহেষু পুদান° ৰান্যকার্ণ মিতিমনু বচনপঃ।। পরোক্ষমক্ষয়॰ দান॰ প্রত্যক্ষাৎ কেটিটশো যথা। পাত্ৰ° মনসি সংচিন্ত গুণৰস্কামভীস্পিত°। অপ্সু ব্ৰাহ্মণহন্তে বা ভূমাবপি জল° জিপেদিতি भवागवकनक ॥ ७ ॥

পুনঃ — স্বনাশের পুতি কি কি কারণ এবং বিভাগের কাল কে 11

অসো ৄ মরণপাতিতাপুবৃজ্যাপুনরাবৃত্তীচ্ছানিবৃত্যাদীনাং 🕤 স্বস্ত্রনাশে কারণত। বিভাগকালস্তু সম্বন্ধিন্ধনা দিন। তৎস্বাদ্যোপর্মেক্তেয়ইতিবিদুযা৹সন্মত্।। অসাপু 🔰 পিতযুঁ। জন্মতে পুঞাবিতজেযুর্ধনণ পিতঃ 11 বিন মাণানি 🕽 ষ্টেবাপ্যশরণে পিত্যু স্পরত স্পৃহে ॥

> পিত্যু গিরতে পুলাবিভজেয়ুর্ধনং পিতঃ। অখা ম্যত হিভবেদেয়াত নির্দোষে পিতরি স্থিতে।। উক্৹পিত•ত মাতৃ•ত সমেত্য ভূচিরঃ ⊲ৰ°া। ভজেরন্পৈতৃক রিক্থমনী শাস্তেবি জীবতো রিতি নারদদেবল মনুবচনানি 1, ভাগা

পুশঃ— পিতা যদ্যপি অত্যন্তবৃদ্ধ অর্থাৎ ব্যবহার কর্মে অপারগ হয়েন তবে পুঞ্জেরদিগের বিভাগে অধি কার হইতে পারে কি না ॥

অসো ৄ পিতরি কার্যাক্ষমে বৃদ্ধে তদাক্রয়া জ্যেষ্টপুত্রো ভর॰ 🔰 ন্যোবা যোগ্যো ব্যবহারান্ হর্যাৎ বিভাগে ভু ন

ষতন্ত্ৰতে বিদা• মত' ॥

অসাপু) জীবতি পিতরি প্রাণামর্থাদানবিসর্গাঞ্চে পেষু মাণানি 🕽 নস্বাতন্ত্ৰ্যত কা**ন° দীনে প্ৰোষিতে আ**ৰ্ত্তি° গতে ৰা জ্যেষ্ঠাৰ্থাণ শ্চিন্তযেৎ ॥

পিত্যাশক্তে ব্যবহারান্জ্যেটেঃ পুতি স্ব্যাৎ ।। **অনস্ত:রাব। কার্য্যক্রস্তদনুমতৌনত্বকামে পিতরি** রিক্থ বিভাগো বৃদ্ধে বিপরীতচেতসি দীর্ঘরোগি বা জ্যেষ্ঠএব পিতৃবদর্থান্ পালয়েদিতরেয়া৽ ঋক্থমূল হি ছটুম্বমস্বতন্ত্ৰাঃ পিতৃমন্তোমাতুর প্যেব মবস্থিতাযাঃ॥

ভাতৃণা° জীবতোঃ পিত্রোঃ সহবাসোবিধীয়তে । ভদভাবে বিভক্তা**নাং ধন্মস্তেষাং বিবর্জতে ইতি** হারীত শদ্ধলিখিতব্যাস বচনানি ॥ १ ॥

িপিতৃবিদ্যমানে পুঞ্জো স্বোপাজ্জিত ধনের অর্থাত্ পিতৃধনের ব্যয়ব্যতিরেকে যাজন প্তিগৃহ দ্বার্থ লন্ধনে যথেষ্টবায় ও বিভাগ মৃতন্ত্রহুইয়া করি তেপারে কি না।।

্) জীবতি পিত্রি স্বয়াগাদিনা লক্ষধনের যদ্যপি 🕽 স্বাম্যমন্তি তথাপি ব্চনানুরোধতঃ পিত্রনুম্তি মন্তরেণ পুঞাযথেষ্টব্যয়ঃ বিভাগঞ্চ কর্তু ন শক্ৰু বন্তীতি বিদা[°] সন্মত° ॥

অনাপু । নজীবতি পিতরি পুঞাঞ্ক্থণ ভলেরন্। যদ্যপি নাণানি 🕽 স্বাম্যু পশ্চাদ ধিগত তৈরনর্চাএব পুঞা অর্থবর্মা বোরস্বাতন্ত্রাত্।।

ভাষ্যা পুঞ্চ দাসক ত্রয় এবাধনা ক্ষৃতাঃ ৷ যতে সমধিগচ্ছি যসৈতে তস্য তদ্ধনং ৷৷ অধনাস্ত্রয় এবোজাভাষ্যদাসস্তথাসূতঃ ৷ তেষাং যত্কিঞ্চনদুব্যং তত্ত্বদুব্যং পুথীভিত্যিতিশভুলি থিত্যনুনারদ্বচনানি ৷৷ ৮ ৷৷

প্রাঃ — পিতামহধনবিভাগের কোনকালঅর্থাত্ পৌত্তের। কথন বিভাগ করিতে পারে ।।

অস্যো) মরণাদিনা পিত্তঃ স্বাম্যোপরমে নির্দোষে জীবতি তর॰) চ পিতরি তদনুমত্যা জীবস্ত্যা॰ মাতরি তদুজোনি বৃত্তানস্তরণ পৌলাঃ পৈতামহধনবিভাগণ কর্তৃণ শক্নুবস্তীতি বিদুষাণ সন্মতং ।।

অস্যপু ৄ পিজোরভাবে ভাু চুনা'বি ভাগনে পুদর্শি এন মাতু মাণ॰ ৢ নিবৃত্তে রজসি জীবতোরপি সশ্যতইতি বৃহস্পতি বচন॰ ॥

> মাত্রনির্তেরজানি পুভাসু ভাগনীযুচ ।। নির্ভে ঢাপিরজানিমাত্রজী যতি চেচ্ছতীতি নারদ্গীতম বচনার্জিয়ঞ ।। ১॥

পুশু: — স্ত্রীলোকেরদের রজোযোগ কতবত্সরের পর নিবর্ত হয় ৷৷

অস্যো } জ্রীণাণ পঞ্চাশন্বর্যানস্তরণ রজোনিবর্ত্তে কুচিড়েছা বরণ
সাদিনা শরীরস্যরসপুষ্টতাধিক্যাত্ পঞ্চপঞ্চাশন্দ র্যানস্তরম্পি নিবর্ত্ত ইতি শান্তীয়নিয়নঃ স্বত্রাপি ক্লাচিত্যতি ক্রমাদেতদ্বিপরীতোপি ভ্রতীতি সতাং সন্মতংবা

খন্য } রনাদেব রজঃ জীণা॰ মাসি মাসি ত্রাহ॰ সুবেং।
পুনাণ॰ ঠ ভদ্ধবিদেশাদুর্দ্দ॰ যাতি প্রথাশতঃ ক্যমিতি
সৌশ্রুতীয় ।।

পঞ্পঞ্চাশতোনারী স্থস্থতিতঃ পুনান্। ছাবে তৌনপুনুয়েতে পুনুষ্য়েতে ব্যতিক্লাদিতিভার ছাজীয়ণ্ডা। ১০॥

পুশুঃ — পিতামহধনের বিভাগসময়ে পিতা পুঙার সমান অংশ হইবে কি পিতা অধিক পাইবেন।।

অসো } পি কামছোপাত্যাবরাত্বিরধনেপিতঃ পুল্সাচ ভর॰ সমানাং শোভবেদিতি মিতাক্ষরা ক্যাতং ॥

অস্তপু } ভূৰ্ব পিতা মহোপাত্র নিরক্ষোদুবানের বা॥ তত্ত্ব মাণানি } ক্যাৎ বদৃশ স্বাম্য পিত্তঃ পুঞ্জা চোভযোগ

দুবো পিভামহোপাছে স্থাবরে জন্ম তথা। সম
নংশিত্মাখ্যাতং পিতঃ পুত্র টেবহি।
সকলং দুবাজাতং যন্ডাগৈগ্ ছন্তি তৎসমৈঃ।
পিতরোভাত্মহৈনে ধর্ম্যো ভাগঃ সউচ্যতে।।
ইতি যাজ্বদ্যাহ্যশতি কাত্যাহ্য বচনানি।।

অসা । দ্বাবংশৌপুতিপদ্যত বিভল্পন্থনঃ পিতা। জীব প্রমাণ > দ্বিভাগেচ পিতা গৃহ্নীতাং শ্বয়ং ব্যমিতিনারদ

4

বৃহস্পতিবচনার্দ্ধন্ন পিতাস্থ্যনগোচরতয়া জী মূতবাহনেন ব্যাখ্যাত ।। ১১ ॥

পুত্রঃ— স্বোপার্জিত ধনের পিতা কয় অংশ লইবেন্।। অন্যে৷) সমস্তস্থাবরাস্থাবরস্বোপাজ্জিতধনস্য পুলৈঃ সং ভর॰ 🔰 বিভাগে পিতা ভাগদম্ম গৃহ্নীয়াদিতি মিতাক্ষরা কুম্বত° 11

া ছাবংশৌ পুতিপদ্যেত বিভক্ষাত্মনঃ পিতা।। জী প্মাণ 🕽 বদিভাগেচ পিতা গৃহ্ছীভা॰শদ্বয়ণ্যকমিতি স্বো পাজিজ তখনগোচরতয়ানেন নারদ বৃহক্ষতি বচ নাদ্ধদ্বয় ব্যাখ্যাত ॥

উত্তরঞ্জ সমৃদায় স্বোপাজিজত ধনস্য পুত্রৈঃ সম্প্রিভাবে পিতা যথা ক্ষতি তথাস্বয়ং পূণ্ছ পুত্তেভ্যোদদ্যাৎ া পশ্চাৎ ক্ষীণে ধনেপুনরপি পুত্রেভ্যোধনং গৃহীয়া দিতি জীমুতবাহন মত° ॥

) জীবল্লেববা বিভজ্য বনমাশুয়েৎ বৃদ্ধা<u>শু</u>মণ বা পুনাণ ∫ গচ্ছেৎ মলুনেবা বিভজা ভুয়িষ্ঠমাদায় বসেৎ যদ্যু পদস্যেৎ পুনস্তেভ্যো গৃহীয়াদিতি হারীত সূত্র° ৷৷ অথ চেৎ পিতা পুত্রান্ বিভক্তেৎ তস্য ষেচ্ছা স্বয়মুপাতেইর্থে ইতি বিষ্ণুসূত্রঞ।। ১২ ॥

পুরঃ — পিতৃক্তবিভাগে পিতা যদি কোন কারণছেতুক কোন পুত্ৰকে অধিক ধন দেন তাহা বিদ্ধ **হ**য়

कि ना॥

বিৰুপোষ্যায় ভক্তায়াক্ষমায় গুণৰতেবা পুত্ৰায় 🕽 ভরণার্থণ পুসন্নতয়া কৃপয়া সম্মানার্থণ বা যদি পিতা স্বোপাজ্জিত ধনাদধিক পন দদ্যাৎ স ধর্ম্মো বিভাগঃ সিদ্ধাত্যের পশ্চামাতেপিতরি ভ্রাতৃভি রন্যৈরনুশয়ো ন কার্য্য ইতি বিদাণ मन्म ७०॥ অসাপু বিভাগ চেৎ পিতা দ্বৰ্যাৎ স্বেচ্ছয়৷ বিভয়েৎ মাণানি 🕽 সুতান্। জ্যেষ্ঠ বা শুেষ্টভাগেন সর্বে বা সূত্র সমাণ मिनः ॥ পিতৈব বাস্বয়ং পুৱান্ বিভজেদ্য়সি স্থিতঃ। জ্যেষ্ঠ° বা শ্রেষ্ঠভাগেন যথাবাসা মতিভবেৎ ।। পিত্রৈবন্ত বিভক্তা যে সমন্যুনাধিকৈর্ধ নৈঃ ৷ তেষাণ সএৰ ধৰ্ম্যঃ স্যাত্ সৰ্বস্য হি পিতা পুৰুঃ 1 সমন্যনাধিকা ভাগাঃ পিত্রা যেষা পুকল্পিত : । তবৈৰ তৈঃ পালনীয়া বিনেয়ান্তেম্য রন্যথেতি योक्कदनु नांत्रम वृहण्यि वहनानि ।। ১०॥ পুশু: — পিতৃক্ত অন্যায় বিভাগ অর্থার্ত্ শান্ত্রীয় কারণ ব্যতিরেকে ন্যুনাধিক বিভাগ সিন্ধ হয় কি না !৷ ্যদি পিতৃক্ত বিভাগো ধর্মাঃ স্যাত্ তদা সিদ্ধাত্যে **∫ বান্যথা রাগছেষাদিনা তত্ ক্তন্যুনবিভাগঃসূভগা** পুত্রবাত্তপক্ষে যোইধিকবিভাগঃ চ শান্তাভা বান্নদিতি বিদা° সম্বত° 11 **∂ নূনাধিক বিভক্তানা° ধর্মাঃপিতৃক্তঃ স**ৃত **ই**তি श्मांगः । योक्कवत्याप्रः॥

ব্যাধিতঃ ছপিতলৈতৰ বিষয়াশক্তমালদঃ । অধ থাশাস্ত্ৰকারী চ বিভাগেন পিতা পুভূৱিতি নারদ বচনঞ্চ ।। ১৪ ।।

পুশাঃ— পাতিত্যাদি দোষ শুন্য পুত্রকে ছেষ পুযুক্ত অর্থাত্
দুভগা পুত্রহেতুক তাহাকে নিরণশী করিতে পিতা
পারেন কি না ॥

অস্যো) জীবছিভাগে পিতা শান্তীয় কারণ বিনা নৈক ।
তর পত্রমধিক ধনদানেনবিশেষয়ের চৈক পুত্র নিরণ শিন্ত কভু শকু য়াদিতি বিদ্যাণ সমত ।।

খনাপু) জীবদ্বিভাগে তুপিত। নৈক॰ পুত্ত বিশেষয়েত্। মাণ॰) নিৰ্ভাজয়েন্ত বৈক্ষকস্মাত্ কারণ॰ বিনেতি কাত্যায়ন বচন॰ ॥ ১৫ ॥

পূণ্ঃ--- যে ব্যক্তি আপন ক্ষমতায় অধিক উপাদ-াশায় পিতৃ ধনের পিতামহুধনের বা অংশগুহণ ক্রি তে চাহেনা তাহাকে কিকভ্রিয়।

আস্যো) সচেঙাবিদ্যাক্ষমতাদিভিঃ শক্তন্য বিভাগমনীহ ভর॰ । মানস্য ভাতুঃ কালাস্তরে পুত্রাণাং দায়জিঘ্কা। নিব্ভার্থং সাধারণ্ডনেভাঃ কিঞ্চিত্রা ত৹ ভাগ লেখ্যং কার্য়েদিভি বিদাং স্থাতং ।।

অস্পু) ভাতৃণা মন্তনেহেত ধন শক্তঃ স্বক্ষণা ৷ সনি
যাণ (ভালা স্বকাদ শাতৃ কিঞ্চিদ্ধোপজীবনমিতিমনু

বচন^{কা} হৈশক্তস্যানীহ**মানস্য কিঞ্চিদ্মতা পৃথক** ক্রিয়াইতি যাজ্রবন্ধ্য বচনা**র্দ্ধ ॥ ১**৬ ॥

পুদ্ধ:

- যেন্থানে পুঞ্জেরদিগেকে পিতা সমানাংশ করিয়া

দিবেন সে স্থানে পত্নীরা অংশ পাইবেন কি না

এবং পিতামহ ধন বিভাগে পিতামহীরা অংশ

পাইবেন কি না ।।

জন্যা) পিভা যথা সমাংশৈঃ পুঞান্ বিভল্পেওথাংশৈঃ
ভরং) বীর্জিয়ো বিভলেদ্যদি তাঅগৃহীতথ্রী ধনাসূ প্
হীতপ্রীধনাশ্চেরদা তাভ্যোইদাং শমর্থাৎ যাবতা
ধনেন পুঞ্জুল্যাংশো ভবেভদ্দনং দ্যাদিতিমিতা
করাকুণাতং পিতাহ্শ তথাকার্যাইতি চ এ

শাসপু) যদি শ্বর্যাৎ সমানাংশান্ পল্লঃ কার্যাঃ সমাং
নাণং

শিকাঃ। নদত্ত প্রীবনং মাসাং ভত্তাব। শশুরেণ
বায়া অধিবিশ্লবিয়ে দেয়মাধিবেদনিকং সমং।
নদত্ত প্রীধনং মন্যৈ দত্তেত্বর্ধ পুকর্নয়ে দিতি যা
ভ্রবন্ধাবচনদয়ং। পিতানহৃদ্ধ তাঃ সর্বা মাতৃ
তুল্লাঃ পুর্কাত্তি ইতি ব্যাস্বচনাদ্ধ থা। সা

পুশুঃ — এইব্যবস্থা জীমুতবাইনেরমতে কিপুকার ইইবা।
স্থাস্যা) অপুলপত্নীনাম গৃথীতজীধনানাং পুলাং মসদৃশাং
স্থাব বিদ্যান্ত ক্রিছ তন্ধনং দেয়ং ইদি

তাভিঃ পূর্ব পুঞাংশাদধিক্রানি ধনানি ভাগতু ল্যানি রা গৃহীভানি তদা পিত্রা তাভ্যো ভাগোন দেয়ঃ পিতামহধনবিভাগেপি পিতামহাঃ পি ভামহী সপত্নীমাঞ্চ তথা বেদিতব্যা ইতি জীমুত্ বাহন মতং ৷৷

খসাপু) খসুতান্ত পিতঃ পজুঃ সমানা॰শাঃ পুকীর্ত্তিতাঃ ।
মাণ॰) পিতামহু•চতাঃসর্ব্ধাত্তুল্যাঃ প্কীর্ত্তিতাইতি
ব্যাস্বচন॰।নদভ্ভ জীখন॰ যাসা॰ দত্তেবর্জণ পুক
স্থায়েদিতি যান্তল্যুবচনার্জ ।। ১৮ ।।

পুশঃ — পুলকর্ত্ক অভির্ত্ত দুবোর পিত। কয় অংশ পাইবেন ৷৷

খান্যা:) পুঞান্ধির্তসা দুবাসা পিতা ভাগদয়॰ লভেতেতি ভর॰) বিদা॰ মত॰ ॥

শব্যপু } ঘ্য°শহরোদ্ধ হরোবা পুপ্র বিত্তার্জনাৎ পিতেতি মাণ° } কাত্যায়ন বচনাদ্ধ ।। ১৯ ।।

পুশুঃ— যে স্থলে অনেক পুৰুষ পৰ্যান্ত বিভাগ হয় নাহি
অৰ্থাৎ পিতানহ লোকান্তৰ পু'ও হই নাছেন
তাহার এক পুএ আছে আর এক পুএের দুই পুএ
আছে এবং এক পুএের তিন পুএ আছে আর
এক পুএের চারি পৌএ আছে তাহারা দুইজনের
সন্তান সে স্থানে কি পুকারে অংশ ব্যবস্থা ইই
বেক ইতি !!

খন্যো } যত্ৰ মৃতধন্যামিনঃ পুঞ্পৌত্ৰ পুপৌ্ঞাঃ বিদ্যন্তে ভর॰ ১তত্ৰ পুঞ্ৰেণ সহ বিভাগে পৌত্ৰাঃ ৰপিত্যোগ্যাণ

শক্ষিক লভেরন্ পুপৌৱাশ্চ ৰপিতামহযোগ্যা শ' পুগুরু পুত্রৈচকো ভাগঃ সাৎ অর্থৎ ভাগ চতুষ্টয় তত্ত্ব ভবেৎ ৷ পুত্রল্যৈকো ভাগঃ ঘয়েঃ পৌত্রয়োরেকোভাগ**ন্ত্র**য়াণাণ পৌত্রাণামেকো ভা**প** শ্চতুৰ্ণা পুপৌৱাণামেকো ভাগঃ স্যাদিতি জী মৃতবাহন ম**ত** ৷৷ মিতাক্ষরা মতে তু পিতৃব্যেন সহ পৌত্রাঃ স্বপিতৃ যোগ্যা॰শ॰ পুাপু যুঃ তদানীং পুপৌত্রানাংশ ভাজঃ তেয়ামপুত্রধনগুছণপুকরণে গোর্জাধি কারসময়ে পুলিতামহধনগৃহণ পুশক্তি রিতি ॥ অসাপু) অনেক পিতৃকানান্ত পিতৃতোভাগ কল্পনা ॥ ১ ॥ মাণানি ∫ তৎ পুত্রাবিষমসমাঃ পিতৃভাগহরাঃ স্মৃতাঃ ।। ২ ।। অবিভক্তে ইন্জে পুেতে তৎসুত পাক্থভাগিন । জৰীত জীবন থেন লক্ষণ নৈব পিতামহৎ ।। লভেতাংশং স পিত্রন্ত পিতৃব্যাৎ তস্য বা সুতাৎ ৷ न कर्ना कर्निया । जुल्लिश नाम्निका ज्या । লভেততৎ সুতোবাপি নিবৃদ্ধি: পরতো ভবেত্।। 🗢 ॥ পিতা পিতামহল্চৈব তথৈব পুপিতামহ: १ উপাসতে সুড॰ জাত॰ শবস্তাইব পিগ্নলং 🛭 ৪ 📭 অবিভক্তবিভক্তানা॰ঙ্গল্যানা॰ বসতা॰ সহ। ভূয়ো

> যদা বিভাগঃ স্যাদাচতুর্থাদিতিস্থিতিঃ ॥ সম্মিদ্ স্তি পিণ্ডানা দায়ার্থস্য বিভাজন । তাবত্সল্যাঃ সপিণ্ডাঃ স্যুঃ পিণ্ডভেদস্ততঃ পর ।। ৫ ॥ পুরেণ লোকান্ জয়তি পৌজেগানস্থাসমু,তে। অর্থ প্র

সাপৌত্রেশ বৃধস্যাপ্মেতি পিষ্টপ্রশীত।। ইতিযাজ বশ্বাবৃহস্পতি কাত্যায়ন দেবল পুজাপতি মনু वहनानि ॥ २०॥

পুশঃ-- যেহলে সমান স্বামিত্বপুফুজ একব্যক্তি সাধ৷ রণ ধনের বিভাগ করিতে চাচ্চে সে স্থলে একের ইচ্ছায় বিভাগ হয় কি না যদি বিভাগ হয় ভবে দেশান্তরগত এবং অপুণিপ্র ব্যবহার অংশিরদিগের অ'শকাহার নিকটে রাথা জাইবে ইতি ॥

া নাধারণুদ্বো সর্বেষাণ তুলাসামিতাদেকেছয়া 🌖 পি বিভাগো ভবিত্মহঁতি অপুাপ্ত ব্যবহারাণাণ প্রোষিতানাঞ্চ ব্যয়রহিতাবিভাগান্তেয়াং সুহুদ্বস্থু ্নিকটে রাজসন্নিধৌ বা দাক্ষিণে। বিজ্ঞাপ্য ন্যানে ্যুরপুাপ্তব্যবহারাণাভ্ত রাজা তাবত্ স্থমবত্ পালয়েদ্যাবত্তে যোড়শবর্যাবরবয়ক। ইতি বিদু ষা॰ সন্মত ।।।

্অস্তপু) তেষামপুজিব্যবহারাণাং সোলচন্নান স্মৃনি নাণানি 🕽 গুলামিদ্বাদ্যাবহার পুশেনাত্।। : .। অপুলি ব্যবহারাণা॰ধন৹ বায়বিবজ্জিত ৷ ন্যমেযুর্বন্ধু 🕝 🖟 ्ৰিতেষু প্ৰোধিতানা॰ তথৈবচ ॥ ২ ॥ বালদায়া দিক পাক্ৰণ তাব্দাজানুপালয়েত্। যাবত্যাস্যাত্ 🦙 সমাবত্তে যাবচ্চাতীতশৈশবঃ ৷৷ ৩ ৷৷ তথারক্ষ্যুণ ्वावधनुमावाव्हातभुाष्टिः ।। ८ ॥ त्राकृताना ্ৰালানা০ ধনানা পুাপ্ত বাবহার শেত শুোতিয় পত্নী না-বারপত্নানা-পুরীনমানিকানি ।৷ ৫ ৷৷ ইতি

বৌধায়ন কাত্যায়ন মনু বিফু শল্প লিথিত वहनानि ॥ २३ ॥

পুশঃ --- পিতানহ কৃত ও পিতৃকৃত ঋণ যদি থাকেতও **म**ाधरनाथयुक्त स्व अथवा अधिकथन शास्त अथ বা ফিছু ধন না থাকে তবে কি কৰ্ব্য ইতি ॥

च्**त**°

অন্যো ৄ যদি পিতৃক্ত পিতামই কৃত্য ে ন্যাভ্না পুথম 🕤 নৃণণ পরিশোধা পুলৈঃ পৌলৈদা শেষণ থনণ বিভ জনীয়ণ তদানীণ যদি তে শোধনাসমৰ্থা স্তদোত্ ्र मर्ग निक्टिं श्रममाभू हिङ्ख्ि लिथाविष कृष्ण বিভুজেমুঃ ঋক্থগুহণাভাবেপি পিতৃষ্তৰ্ণ পিতা মহকৃতর্থ পুলৈঃ পৌরৈশ্চ শোধানীয়মিতি বিদাণ মতণ ॥

) যদ্ছিত্ত পিতৃদায়েভ্যোদ দ্বুর্ণ পৈতৃকঞ্চ নং । ভুত্ মাগানি ∫ ভি ভাষিভক্তবামৃণীন স্যাদ্যথা পিতা।। ১ ।। ধর্মা ৰ্থাণ পুৰিতদত্তঞ্যদৃগংস্বনিয়েজিত। যদৃশ্যান্থ বিভজেন্দান পৈতৃকাদনা । অভঃ পুঞ্ল জাতেন স্বাৰ্য্য মূলতঃ ৷ স্বাৰ পিতা মোচনীয়ে। যথা নো নরকং বুজেৎ ॥ ২ ॥ ত সাদ ভাগিত পুঞ্জি পুলৈম্নগ্ৰুত ৷ দদ্যঃ পৈতা মহংপৌত্রান্তকভর্থান্তিবভত্তি ॥ ৩॥ ইতি নারদ কতিয়ারন নারদ বচনানি ॥ ३१॥

— পৈতৃক্দুব্য কোনহ্ব্যক্তি অপহর্ণ করিয়া কিম্বা বলাৎকারে ৰত্কাল ভোগ করিয়া থাকে পিতা

যদি আপন ক্ষমতায় তাহা উদ্ধার করেণ সে ধনের অংশ পুত্রের।পাইতে গারে কি না ॥

জনাপ্) পৈতৃকন্ত পিতা দুব্যমনবাওং যদাপুরাৎ।। নতৎ
নানি) পুলৈত্তিত্ব দাদ্ধনক নিঃ খ্রুমজ্জিত ।। ১॥ গৈতা
নিং হৃত পিত্র। স্বশক্তা বদুপাজ্জিত । বিদ্যাশৌ
হ্যাদিনা পুাপ্ত তত্ত্বাম্য পিতৃঃ শ্বত ॥ পুদান ধ্যুজ্যা স্ব্যাৎ ভাগঞ্চৈব ততোধনাৎ । তদ
ভাবে তু তনয়াঃ স্মাশাঃ পরিকীন্তিভিঃ।। ২ ।।
ইতি মনুবৃহস্পতি বচনানি ॥ ২৩ ॥

পুত্র — পৈতৃক অথবা স্বোপাজ্জিত স্থাবরাদি পাঞ্রদি গের অনুমতি বাতিরেকে পিতা দান িনুষ করি তে কিম্বা আফ্রীরলোককে পার্বিত্যিকি দিতে পারেন কি না যদি করিয়া থাকেন বা দিয়াথা কেন সে শিক্ষ হয় কি না ইতি 11

আকা। । পিতৃক্তমা খোপাজ্জিতমাণি স্থাবরাদি ধনমা জর• । পুঞানুজাং বিনা পিতা দানবিজ্ঞাদিকং কভু^{ত্}ন শকুয়াৎ কিন্তু পিত্রাজিতে ভুপুঞাণাং নিষেধা ধিকারস্তৎ পারতজ্ঞভাব প্রৈরন্নতিং কর্ত্রা। পৈতামহে তু ছয়োঃ খামামবিশিটামিতি নিষেধা 5

ধিকারোস্তীতি তত্ক্তম্পি ন সিদ্ধাতীতি মিতা ক্ষরা কুণাত° ॥

) স্থাবরণদ্বিপদক্ষৈব যদ্যপি স্বযমজ্জিত । অসণভূর পুমাণ 🔰 দুত'ন সর্বাল্লদান ন চ বিকর: ।। যা যে জাতাযে প্যজাতাশ্চণে চ গর্ভে ব্যবস্থিতাঃ। ৰৃত্তিঞ্চ তেইতি কাজ্যান্তি ন দানং নচ বিক্রয়ঃ ! ৷ পৈতামহ সমান স্যাৎ পিতুঃ পুএস্য চোভয়োঃ।৷ ৩ ৷৷ পিতৃ পুষাদাৎ সিদ্ধান্তি বস্ত্রাণ্যা ভরনানি চ ৷ স্থাবরাণি न निकार्खिभुगारम मिंठ रेशक्रक ॥ ८॥ ইতি न्यान মনু কাতায়িন ব্লযাজ্যবন্ধা বচনানি ॥ ২৪॥

পূৰ্ণঃ--- এ ব্যবস্থা জীমূতবাহন মতে কি পুকার।! অস্যো ৄ পিড।পৈতৃক্ষ্য স্থোপাডির্রত্য্য বা স্থাবরাদের্ঘন ভর॰ _ ∫বিজয়াদিক∘ কভুঁ∘ পুঞালুমতিমভৱেন তৎলজে চ শকুমাৎ অনুমতি বিরহে তু তসা বিগ্রার জুন कना शुकावायः नार्यः मानिषिक स निकारका १८१ छ জীমুত বাহন মতং !!

্ তৎকরণা<mark>ৎ বিধ্যতিক্র</mark>নোভবতি নতু দানাদ্য পুমাণ° ∫ নিজ্ঞি। বচনশতেনাপি বস্তুনো ইন্যথাকারনা শক্তেরিতি জীন্তবাহন লিখন ।। ২৫ ।।

পুনঃ --- বাধারণ ভূম্যাদির দান বিক্রয় অন্য অংশিরদের অনুমতি ব্যতিরেকে এক ভ্রাতাকত্কি কৃত বিধা ্**হ**য়কিন্।।

অসো) সাধারণ ভাবরাদেদান বিক্রয়াদিক সর্বদায়

দানাদিক ন সিদ্ধাতীতি মিতাক। ক্থাত ।।

অন্যপু

অবিভক্তা বিভক্তাবা সপিপ্তাঃ স্থাবরে সমাঃ ।।

নান

ক্রিক্তানীশঃ সর্বত্ত দান্ধমনবিজ্ঞাইতি মন্ব

চন

দান্তিদ্পাবিভক্তেম্ দ্বাম্য মধ্যস্থাদেক

স্যানীশ্রহাৎ সর্ব ইভানুজ্ঞাইবল্য কার্যোতি মি
তাক্ষর। লিখনধ্য ।।

পুশুঃ — এই ব্যবস্থা জীমুত্বাহনমতে কি পুকার হইবে ।।
জাগো) পাধার ভাবরাদের ন্যাদায়াদানুমতি রিনৈকক তু ক
ভারণ) কৃতদানাদিঃ শাস্ত্রাভাবাদ যুক্তাসম্ভবাচ্চ ন সি
ক্ষোৎ কিন্তু তদংশ্যোগ্যঃ সিদ্ধাত্যেবেতি জীমূত
বাহন মতং ।।

অসাপু স্থাবরদা সমস্তদা গোত্রসাধারণসাচ নৈকঃ দর্যা।
নাণানি ত্ত্রমং দানং পরস্প মতং বিনা ।। ১। মদ্যেকজা
তাবহুবঃ পৃথপ্তমেঃ পৃথক্তিয়াঃ। পৃথক্তমান্তবো
পেতালচেত্ কার্যেষু সম্মতাঃ ।। সভানি যদি
দলুত্তে বিক্রাণায়ুর্থাপিবা । স্ব্যান্থেষ্ট তৎ
নালা ।। ২৬ ।।

পুন্ধ — নেস্থানে এক ভ্রাতা বালক আর ভ্রাতারা দ্রদেশে আছে ইতিমধ্যেপিতৃ শুদ্ধাদিথ্যকার্য উপস্থিত হয় অথবাদুভিক আগতহয় স্থাবরব্যতীত আর কোন ধননাথাকে তবে শুদ্ধাদিরনিমিত্তে অথবা স্টুম্ব ভরগান্থানিমিত্তে গৃহের রক্ষাক্রা ভ্রাতা

ঐ স্থাবরাদির দান বিক্রয় করিতে পারে কি না। ্অস্মো) যদি তাবরবিক্রয়মন্তরেণ যাগশুনাদি কর্মবিরো 🏿 ভর॰ 🔝 ধঃস্যাদথবাপদি পোষ্যবর্গাণাণ ভরণাদিকণ কভুঁণ ন শকু যাভদানোযামনুমতিংবিনাপি গৃহস্ভাুাতা **म्होत्रक्राधि अ**योखिम बार्य जुनुभय क्रमानविक য়াদিকঞ্চাসমর্থে সর্বমপাতি বিদাণ সম্মতং।।

অসাপু) ভরণ পোষাবগদা পুশস্ত স্বগদাধন । নরক । মাণানি 🕽 প্রীড়নে চাসা তৃম্মাদ্যন্নেন তং ভরেৎ IIM বৃদ্ধৌ চ মাতাপিতরৌর্মার্থিভার্যানুতঃ শিশুঃ অপ্যকার্য শতং কৃত্বা ভর্ব্যামনুরবুবীৎ ॥ ২ ॥ একোপি স্থাবরে স্বর্যাদানাধ্যন্দিক্র । আপৎকালে জ্টবার্থে ধর্মার্থেচ বিশেষতঃ ॥ ৩॥ সর্বতএব। ত্মান' গোপায়ীতেতি মনুভূওযাজবল্পগোভয वहनामि ॥२॥॥

পুশুঃ— পোষ্যবর্গের নধ্যে কহিকে গণনা করিয়াছেন। **অসো ৄ পিতৃমাতৃগুক্জীপু**গুবাক্ষবসনা**শ্রিচদরি**দুগিত।তি ভর° ব্যশ্ত পোষাবগানা মধ্যে গণনীয়াইতি সভাণ नषा उ॰ ।।

অসাপু ৄ পিতা মাতা গুৰু ভাষ্যা পুজাদীনাঃ সমাশ্রিতাঃ ৷৷ মাণ বৈ অভ্যাগতোতিথিলৈত্ব পোষ্যবৰ্গ উদাহতইতি मनुबहन ।। २৮॥

পাঃ — যে ছানে ঐ ৰূপ পিতৃক্ত বিভাগের পর পিতা

প্রব্যান্থ প্রজন্মাইয়া লোকাস্তরগমন করেন সে হানে পিতার ঐ অংশ এবং পরে পিতা যাহা উপা জ্জন করিয়া থাকেনঅথবা ঋণকরিয়া থাকেন সে সকল কোন পুগু পাইবেক ম

আয়ে। বিভাগান এর গোনাং গভাধানং কৃতংভবেতে বিভ ভারং বিভাগান এর গোল্মর্ণান ভারং তারভাগং পশ্চাৎ পিরা যদুপাতির তথ্যতংকৃতর্ণমাপি পুাপু, যুর্নভ পূর্ব জাতামাং তন্ধনে তৎকৃত্রপারশোধে চাধিকা রোস্টাতি বিদাং মতং।।

শ্বাণু) উদ্ধৃ পি বিভাগাত্তাত স্ত পিত্রামেব হরেদ্ধন ।। ১।।

মাণানি ∫ বিভক্তাঃ পিত্রামেব ।। হা পিত্রা সহ বিভক্তামে

সাপল্যাবা সহোদরাঃ । ক্যন্যজাক যে তেষাং

পিতৃভাগহরাস্ত তে ।। আনীশঃ পুরজঃ পিত্রে
ভাত্তাগে বিভক্তাঃ ।। আনীশঃ পুরজঃ পিত্রে
ভাত্তাগে বিভক্তাঃ ।। আনীশঃ পুরজঃ পিত্রে
ভাত্তাগে বিভক্তাঃ ।। বিভক্তান্য ভাত্রাইনী

শাঃ পুরজাঃ শ্তাঃ ।। যথা ধনে তথানে পি দানা
ধানক্রেষ্চ । পরস্পার্ননীশাস্তে মুক্তা শৌচো

দক্তিয়া ।। ৫।। ইতি মনু বিফু গৌতমবৃহস্পাতি
কাত্যায়ন ব্চনানি ।। ২০।।

পুশ: --- গিতা যদি পৃথ্থর দিগেকে বিভক্ত করিয়া দিয়াপু
ন্থার দুই এক পুত্রের সহিত একত হইয়া থাকেন
তদনন্তর পুম্বার এক পুত্রজন্মাইয়া লোকান্তর
গতহয়েন সে স্থানে ঐ বিভক্তল পুত্রকাহারস্থানে

্লাপা গাইবেক আর যদি পিতৃক্ত খাণ **থাকে** ভাহা বি শুকারে পরিশো**ধ হই**বে ॥

অসে)

ু মত্র বভাগনেভাল পিতাপুনরেকেনগুলেগো**লা** ভবং বিলেশ্টঃ সন্ ্রমেকংসম্থ পাদ্র্তার রং**স্** - ইদুশ্রন)' বিভক্তর। হা'শংগৃ**ঞ্বি**মার্থ **ে গিড্** ভাগণ ভূাজোভাগঞ্চ কিন্দুতং কৃত্য লংশ ভত্তং পু ক্ল্য ত্রিভিভতিভিগ্ হীতব্য পুথি বাবহারঃ সন্ তথা ঋণা শন্পি দদ্যাদিতি বিদাণ সন্মত ।।

অনাপ্) বিভক্তোযদি দিংস্টঃ পিতা প্জেণ বা নৃতঃ ৷ তদঃ নাগনি 🕽 ললেত সংস্থান্ডাতুভাগং বিভক্তজঃ ।। ১ ।। উ**ৰ্বং** বিবাগাজ্জাত হু পিত্রামেৰ হরেদ্দান । সংস্থাতের বা যে সূৰ্যবিত্**জেত সতৈঃ সহ ॥ ২ ॥ অ**পুণিপ্ৰ**্যৰ** ২ালেশ্চত্যতভো**পি হিন্দভাক্ সাতন্ত্র** হিম্মু**ত** জোটেটিছা, ওপরয়ঃ কৃতংয় তা। অভঃ পুলে**শ** জাতেন ৰাধনুত্ৰজ্ঞা মন্তঃ । ঋণাত্ পিতা माम्भी (यायथा (मा नतकः दुः क्षामिण वृह्म्मा**ज** भनुमातम योख्यवेद्या वर्षमानि ॥ ७० ॥

্যদি কদাচিত্বিভাগৰনয়ে অজ্ঞাত প্রভা নাভা থাকের পশ্চাত দেইগর্জে পুঞ্জক্ষে তবে **লে গুঞ্** কাহত্ত হানে অংশ গাইবে অৰ্থাত্ পূৰ্মত্ পিতৃ ভাগদাত্র গাইবে কি ভ্রাতার্দিদের হানে আ**শ** शिहेरव ॥

অন্যো) বিভাগন্ত নাত্য্যকাইগড়ায়া বা শাদাত্ ভর॰ J পিতরিমৃতে সমুত্পন্নায় ভুগতে পূ**ইলা**বিভ**ত**।

ভূতিরঃ য়য়গৃহীতভাগাত্পুতিমাসং পুতিবত্সবং

যদ্পরি বৃদ্ধা তত্পুবেশ্য পিত্রণাপাকরণাদ্যাবশ্য
ক্সাধারণবায় নিদ্ধাশ্য তাভ্যামায়ব্যয়াভ্যা
বিশোধিতাত পিতৃধনাত্ কিঞ্ছিত্ কিঞ্চিদুদ্ভ্য
স্মাংশং কৃষাত্স্য বিভাগোন্তরোত্পন্নস্ভাগং
দ্যুরিতি স্ভাং সন্মতং 11

জনা) বিভক্তেযু সুতোজাতাঃ সবণীয়া॰ বিভাগভাক্ ॥
পূলান) দৃশ্যাদ্ব ভিজন আদ্বায়বায়বিশোধিতাদিতি

যাদ্ধবন্ধাৰচন ॥

শৈত্বিভক্তা বিভাগান্ত্রোত্পশ্লম ভাগণ দৃদ্
রিভিবিফুসূত্রণ ॥ ৩১ ॥

পুশাঃ — পিতামহোপাভস্থাবরাদিধনপিতার সহিত পুত্রে রাবিভাগ করিয়া লইয়া থাকেন তদনস্তর পিতা পুত্র জন্মাইয়া মরে সেতানে কি ব্যবসায়

আন্যো । যদি ফুলৈতামহং ভূমাদিকং বিভক্তং নিওৱং ভারং । পি জঃপুভোজাতঃ সংগ্রুজাত ভূলিছে। বিভাগং গৃহীয়াভত্র মাতৃনিবৃত্তে রজসি তঘিভাগ বিধান। দিতি জীমুতবাহন মতং ॥

অসা } বিভাক্তেযু সুতোজাতঃ স্বনীয়া° বিভাগভাগি পুমাণ° ঠিতাদি ॥ ৩২ ॥

পুশঃ— যদি বিভাগকালে স্পষ্টগর্তী বিমাতা কিয়া

নাতা **অথবা বিধবা** ভাত্তায়া থাকেন সে

হানে কি কট্ৰা !!

The state of the s

į

ব জীবছিজ্ঞানুই জীবছিভাগেব। স্পষ্টগর্ভায়াণ পিতৃ 🕤 পত্না॰ ভ্ৰাতৃ পত্না'বা পুসৰপৰ্যা**ন্ত॰ পু**তীক্ষা বন্ধ্

ভিবিভাগঃ কাষ্য**ইতি নিতাকরা ক্থাত**া।

ভর°

অস্যো) পিতৃথন বিভাগে পৈতামহধনবিভাগেচ স্পষ্ট ∫ গভারা° পিতৃপত্যা° বিভাগানধিকারিভাতৃপ**্**যা ঞ্পুসৰণ পুতীক্ষা বিভাগঃ কাম্য ইতি জীমূতবা হন মতং ৷৷

- অথ ভাতৃণা॰ দায়বিভাগোযাশ্চা নপত্যাঃ ড্রিইড: সামাপুঞ্লাভাদিতি বশিষ্টসূত্রণ।। ৩৩॥
- পুশ্ন: ভাতারদিগের পরস্পার বিভক্ত হওয়া ধন্মা হয় কোন সময়ে॥
- অস্যো 🤾 পিত্ৰোৰন্ধ বিভাগে ভ্ৰাতৃণা পৃথক পৃথক পঞ্মহা ∫ যজাদিনা পৃথক্ পৃথঞ্চর্মঃ পুরদ্ধতে তম্মাৎ পিতৃ নাতৃ মরণোভরকৃত্বিভাগোধ্য্যঃ সাাদিতি বিদাণ अका छ ।।
- অসাপু) এবং সহবদেযুদ্ধ পৃথপা ধর্মকাম্যয়া ৷ পৃথপু মাণানি 🕽 বদ্ধতেথখন্তস্মাদ্ধর্ম্যা পৃথক্তিরা ॥সাংধকপাকেন বসতাং পিত্দেবছিজাক নিং। একং ভবেদিভক্তা ना॰ उरमदनग्राम् शृंदर शृंदर्।। २ ॥ क्विश्राप्त अ॰वि ভাগেন পুঞাণা° পৈতৃক° ধন° ৷ স্বতে সতি পূ ৰভন্তে তকাৰকা।পৃথক্ ক্ৰিয়েতি মনু বৃহস্পতি কাত্যায়ন বচনানি॥ ৩৪॥

পুশুঃ — যদি পিত্যরণানস্তর মাতা তর্মানা পুলের। বি
ভাগ করিতে পুষর্ভ হয়েন সে স্থানে কি ৰূপা
অংশ ব্যবস্থা হইবে ৷৷

অস্যো

জননাং বর্ত্যানায়াং তদনুমতা৷ তুর্ত্তিনিভাগঃ
ভর

কার্যস্তর নাতৃশ্যতিঃ সপর্নাঞ্চাপ পুঞ্সমাংশঃ
স্যাৎ্যদি তা অগ্হীতঃ বিনাগৃহীত বীধনাদেও
দক্ষা দাত্রামিতি নৈথিলানাং মতং ।।

জ্মাপু বিদ্ভাবে হুজননী তনয়া শ্মনা শিনী। স্থা শ্যা নাণানি বিষ্ণাত্রস্থো হুরীয়া শাস্ত ক্নাকাঃ।।।অসুতাস্ত পিতৃঃ পত্নঃ স্থানা শোঃ পুকীন্তিতাঃ। পিতা মহ্ শ্চাঃ স্থানা ত্লাঃ পুকীন্তিতাঃ।। ২ ।। নাত্রঃ পুঞ্জাগানুসারি ভাগহারিণাঃ।। ২ ।। ন দ্তৃ প্রী ধন থানা দত্তে দ্বা পুকলুয়ে দিতি বৃহস্পতিবাাস বিষ্ণু যাক্তবলু । ব্যানি ।। ৩৫।।

পুশঃ — এই বাবহা জীমূতবাহন মতে কি পুকার হট া।
আস্যো ট জীমূতবাহনেন মাতৃপদসা জননীপার্জ্বা,খ্যানা
ভার

সভ পুঞ্বতীনাংমাতৃণাং পুট্ঞঃ সম্ভেশাদাত্বা
ইতি বস্তদেশীয়পভিতানাং স্মতে ৷৷

অসাপু মাতা চ পিতরি প্রেতে প্রত্বাণশভাগিনী। স মাণানি মাণশহারিনী মাতা পুলাণা সাাশ্তে পতৌ ৷৷৷৷ পিত্রকর্ম বিভজতা মাতাপ্যংশ সমংহরে ৷৷৷৷ নদত্ত স্থাধন ধস্যে দত্তেবর্ম পুকল্লয়েদিতি কা ত্যাধন নারদ যাজ্ঞবন্ধা বচনানি ৷৷ ৩৬ ৷৷

1

পূর্ণঃ— পিতৃ মর্ণের পর সকল ভাতার দিংগর সমানাংশ হইবে কি জ্যুটের শে্রাংশ হইবেক ।।

জানা। । পিতরি মৃতে পুঞাণাং সমাংশং স্যাজ্জে। ইন্য তৃথ্যু
তরং । ইংশা মুনিজিঃ পোজেঃ কলৌ পুনস্তাদ্গজ্যেইন্য
ভক্তেণ বিরহানিষিদ্ধাপি কৃতঃ কিন্তু ভূগতৃতিঃ
স্বেভ্য়া জ্যেইাম বিশিষ্ঠাংশোদাতবাশেত্বা সিদ্ধাং
ত্যবান্যথা স্বেষ্ধাং স্মাংশঃ সাাদিতি বিদু্যাং
স্থাত ।।

জুপুসে] বিভজেরন্ সূতাঃ পিত্রোকর্জন্ত্থসূণ সনং ।

মানানি

সমানতোম্তে পিতরিরিক্থ বিভাগঃ। বর্ণানামা
নুলোম্যানাং বিভাগোরং পুদশিতঃ । সমতেনৈক
জ্যাতানাং বিভাগস্ত বিধীয়তে পৈতৃকে বিভজ্য
মানে দাযাদ্যে সমোবিভাগঃ। পিতৃথাক্থহ্রাঃ
পুলাঃ সর্ব এব স্মাংশিনঃ।

উঢ়ায়াঃ পুনক্ষাভোজ্যেগ্য শোগোবণ্তথা । কলৌপথ ন স্থাতি ভু:তৃজায়াণ কমগুলুং । যথা নিযোগ্যথোন নানুবক্সাবধোপিবা ৷ তথোদ্ধার বিভাগোইপি নৈব সংপুতিবভতে ইতি যাজবদ্ধু । হারীতভ্গুগৈঠীনসৈহ্হস্পত্যাদি পুর্ণেষ্ত বচ নানি ৷! ৩৭ ৷৷

পুশুঃ ---- কেকে বিভাগের অন্ধিকারী অর্থাৎ পিতৃণিত। মহধনে সংশী হইতে পারেনা।। কালে।) জ্বিপভিত্পাতি চাদশাসন্ত্ৰগুঞ্জনাৱজ অবধি
ভ্ৰং) রোক্সভজ্ পঙ্গু দুকাচিকিৎ সারোগগুড়ো পপা
তিক স্ঠিবানপুড় পাশুপতক্পণক বাধি হেও
নইপাণে ব্রিয়জীবৎপি চুতা জনানিক্ত্পিতৃ শুছে।
দিবিমুখ শুছোন হোচিক্টপাণাবাবহার্য সংগাত।
ব্রিণারিনে হ্লু চজারজা ক্লোচাপু এনি ক্র্যুসাক্তে
বিভাগানবিকারিণোভ্রবাঃ পতিতাদ্তে বাভি
চারবতাঃ ব্রিয়শ্চ দায়° নাইভীতি বিদাণ

ज्ञा उ ।।

অস্তপু

অনংশী দ্লীবগতিতোঁ জাতাক্ষবনিরোঁ তথা । উ

নাণানি

অভজড়ন্কাশ্চ যেচ কেচিলিলিল্যাঃ।। ১ ।। পতি

তত্তং সূতঃ দ্লীবঃ পঙ্গু শ্চোসভাকাজ ছঃ । অক্ষো

চিকিৎ নারাগাভোভত বাংস্ত নিরণ শিনঃ।। ২ ।।

মৃতে পিতরিনল্পীবসন্থানভজড়াককাঃ। গতিতঃ
পতিতাপতাও লিন্দীনাং। শভাগিনঃ ।। ৩ ।।

চীবৎ পুজেড়োদারণ বিভজেৎসমণ ল্লীবিশ্বনি

পতিতাপ বিছায়। ৪ ।। পিতৃ ছিট্ পতিতঃ বড়োয

হচনাদৌপ পাতিকঃ। ঔরমা অপিনৈবাংশালতে

নি ক্ষেত্রজাঃ ক্তঃ।। ৫ ।। অতিব্যবহারান্ গুমা।

ভাদনৈবিভূষ্ণ অক্ষজড়লীবিবাসনিবাংধিতাদীও

হচাক্ষিণঃ পতিত্যতজ্জাত বজ্জাং ।। ৬ ।। পতিতঃ

জীবাচিকিৎসা রোগবিকলান্ত্রভাগহরাঃ।। বাংজাক্যা ঋক্ধ পিঞ্জাদকানিবত্তিস্তা। ৮ ।।

অনংশাস্ত্রপাতাঃ পতিতোৎপারঃ গতি

তোভবতীতী, লন্নাত্রস্ত্রী চ সাহি যা প্রগামিনী ॥ ৯॥ अञ्चलमा हा मृत्रहेम्हर मरशिखीम्य स्रक्षायहरू। পুৰ্জা)বিষিত্তৈকৰ ঋক্থুণ তেযু চাইতি ॥ ১০ ॥ অনিযক্তাসূত শৈচৰ পুঞ্জিগামশ্চদেৰরাৎ। উড়ৌ তৌ নাহতে ভাগে জারজাতককামজৌ। সহ্জ ह विवक्य सामार्शेख कुर ठाताथनः ॥ ১১ ॥ भवना জোপ্যগুণবারাইঃ স্যাৎ পৈত্কে খনে। তৎ পিওদাঃ শ্রোতিয়া যে তেষাণ তদভিধীয়তে॥ উত্ত মণাধ্মণেভ্যঃ পিতর ভায়তে সূতঃ। অতত্তিপ রীতেননাত্তি তেন পুয়োজনগাতয়া গবা কিং ক্রি মতে যাৰ ধেৰুৰ গভিনী ৷ কোৰ্থঃ পূজেণ জাতেন सानिविध अभिकः। नास भीगा कि एक । বিজ্ঞানবভিন্তঃ। আচার হীনঃ পুএল্ড মুলোভার जमः स्टः ॥ १२ ॥ शिक्षाप्तिकेष्ठिके । कर्ष ণেইসংক্তঃ সুতঃ শুটোর পরোবেদপারগঃ ॥ ১ ।। অকৃ ৰা পুতকবিগাণি প্ৰেত্সা ধনহা ব্ৰহণ বর্ণানাং যদ্ধরে প্রেক্তি তদু তং নিয়তপরে আছে। তেষাং পতিত্বর্জেভ্যোভক্তবন্ত্রং পুদীরতে।। ১৫।। পুলিচ্ছাদনমাত্রস্ত দেয়° যদক্ষু ভিঃ কৃত° ॥ ১৬ ॥ সর্বেলামপি তু ন্যাযাও দাতুও শক্ত্যা মনীধি।। গুলাভাদন মৃতাত্ত পতিতোহ্দদভবেত্ ।১৭। এতানি মনুযাজ্ঞবন্ধা দেবলাপ্তথে নারদ বৌধা

とうこうようをおおりあり できんじゅか はは縁め かかし けっぱんしょうてき あかり 体験機能物機関機

য়নবিফুৰশিষ্ঠ শঙ্কলিথিতক|ত্যায়নননুব্হজ্পত্য পাস্তৰ শঙ্কাদবলক।ত্যানেশনুব্দন্দি ৷ ৩৭ ৷

পুন্নঃ — ক্রীব কয় পুকার হয় এবং তাহারদিগের স্বর্ন কি। আস্যা) কুরিশ্চ যদ্বিধঃ বাভজাপ্যযন্তঃ যন্তকঃ পণ্ডঃ ফুর ভরং) বোনপুংসকঃ কীলকশ্চেতি !!

> এতে বাংলক্ষনং জন্মপুভৃতি প্রীরূপঃ কিন্তু স্ব নিজা দি পুনান্ কৃষা পশ্চাছিত্যাৎ তথা পুনঃ পুং ভাব মাস্থায় পুরুষাচার গুণধারী যং স বতাজনামা যগুঃ সঞ্জীয়প্তোপি নিগদ্যতে 151 যথা তুপ্তীতুলা বাক্ প্রীরুষ্টোত সঞ্জীর্থা যগুকঃ 1 যথাজন্ম তোলিঙ্কং নাস্তি সোপি যগুঃ 1 হ 1 যোরে গা দিনা প্রান্থেন্ডনং সপগুঃ 1 ৩ 1 যথা সূত্রে কেংগ নভবতি বিহাচ জলে নিম্জ্জতি বীর্ষ্যান্মাদর্গ্রি তা দেলুং পরলিস্ক্টোষ্কশ্চ সঞ্চীবঃ 131 যথা শেলু বীজং নাস্তি সন্পূত্যকঃ 1 ৫ 1 ফা স্থিতা দায়নঃ জ্বিয়ং পরেণ সহ সংযোজ্য ুন্তামের সেব্যতে সঞ্চীলক ইতি স্থাং সক্ষাতং 1

জ্যাগু । বঙ কাৰাতজঃ যন্ত প্তঃকীবোন পুংসকঃ। বীল মানানি । কংশ্ছতি যোচায় কুলিভেনেবিভাবিতঃ। ৬ । যন্যন্তীতুলা বাক্ চেষ্টা ছীধ্যন্য যন্তবোভবেও।। পুনান্ক্রা স্বলিলানি পশ্চাছিন্যা তথৈব চ। ব্রী চপুং ভাবমাস্থায় পুরুষাচারবদন্তনাঃ বাভ্জোনা মধ্তঃ স্যাৎ দ্রাষ্টোপি নিগদতে। ২ । জালাল

দোপি যণ্ডঃ স্ত্যাৎ পণ্ডস্ত প্লানমেহনঃ। ৩। অনে ধ্যানী পুনান্ জ্লীবঃ । ৪। নষ্টরেতা নপুণ সকঃ । কলিকন্ত সুস্তঃ স্যাৎ যঃ কুল্যাদারনঃ স্থ্রিয়° ৷ পরেণ সহ সংযোজ্য কীশ্চান্তামের সেব্যাত । ৬। ন মূত্র° ফেণিত° যস্য বিষ্ঠাচাপ্স নিম জ্জতি । নেঢুপোনাদগুক্রাভ্যাণ হীনণ দুবিঃ স উচ্যতে ইতি দেবল কাত্যায়ন বচনানি ॥ আনেক্য*চৰুগল্ধি*চন্ধন্তীকংশচর্য্যক্তথা 1 সরেভ সম্ভূমী জেয়া অশুক্রঃ যণ্ডসং জিতঃ। পিকোরতা क्षवीक्षत्रामारमकाः श्रृक्रायां **स्वत्यां स्वत्यां** स्वत्यां स्वत्यां स्वत्यां स्वत्यां स्वत्यां स्वत्यां स्वत्या লভতে প্রেছ্রোয়নসংশয়ং। যঃ পৃতিযোনৌ জঃ য়েত সুনৌগদ্ধিকস'জিকঃ। স যোশিংশকনো পঞ্জন। মুখ্য লভতে বলং। স্বে ওদেবুক্ষচর্য্যাদ্যংখ্রী যু পু বৎ পুবর্ততে । সম্ভীকঃ সম্ভবিক্তেয়ণ ঈ্যাকণ শৃণু চাপারণ। দৃষ্ট্য বাবাহমনোষাণ ব্যব্ধয় यঃ পু वर्त्तर । वेदोकः मखिरक्कार मधकः भृगू शक्षमः । নোভান্যায়ন্ত। মো**হাদজনেব পু**ৰভতি। ততঃ ন্ত্ৰ চেষ্টিতাকারোজায়তে যণ্ডসণজ্জ । ঋতৌ পুৰুষবদ্বাপি পুৰন্তে তিঙ্গনা যদি। তত্ৰ কন্যা ি যদি ভবেৎ সা ভবেন্নরচেপ্টিতেতি সৌশ্রুতবচ नानि छ। ७৮।

পুশুঃ--- অচিকিত্ন্য রোগপুস্ত যে হয় তাহার নির°শিত্ব কহিয়াছেন সেই অচিকিত্ন্য রোগ কিকি অর্থাৎ তাবৎ রোগজনে যদিঅতিশয়বৃদ্ধি হয়ঔষধ্যারা উপস্থনা হয় ভবে ভাঙাকেই অচিকিৎ স্যায়ে গবলাজায়কি অন্যকোনজনাস্ত্রীয় ওক্পাতক হেতু যেসকল মহাজাগ কহিলা:ত্ন তাহাকেখচি কিৎ সারোগ হলাজায় আরবিভাগের পর যদি পার্শিত বা ঔষধাদি দারা কোন পুকারে ঐ পর্বোক্ত ব্যক্তিরানি দৌষ হয় তবে অংশ পাইবে কি না ॥

) জনদিলোগানাংপাবলাত্কালান্তরে দুঃসাধ্যত্ত ∫ যদি ম্যাত্ <mark>তথাপি</mark> তত্কারণবশাত্ পিতাদি তথাসতি রোগ সামান্যপীজিতানাং স্ট্রেযাং নি রংশিকাপতেঃ বস্তুতস্ত জন্মান্তরেইকৃত্পায়শিচভা নাং স্বকৃতপাপজন্য মহারোগত্ত্বন পুলিদ্ধা যে দুঃ সাধারোগান্তত্রবাচিকিত সারোগান্তেরাত্তে শনর ভৌবাতরোগমংমেই ফার্মান্সান্সরাশ্রের এজ যক্ষেদরানি চৈতৈযুক্তা অন্যেচ যে বিব নানধি কারিণজেপি যদি বিভাগেভিরমেবৌষ্য প্রায়শ্চি ভশুভগুহপুসন্ন তাভিনিদোষ্ট স্যুস্তদা বিভাগণ লভেরন্নিতি সভা সম্মত ।।

া বাতব্যাধিঃ পুনেহশ্চস্টমশো ভগন্দর: । অশ্রী মানাণি 🔰 রাজ্যুক্তভগতে চাদর্মপ্তমণাক্ষণতৈ পুকৃতিতা ব দুশ্চিকিৎসামহাগদায়।১৷ রাজ্যক্ষাশ্রীজ্য জ্বনেহভগন্ধা: ৷ অশাংসি গুহ্নীত্যটো মহা রোগাঃপুকীর্তিঃ মেনা বাতকাধিরপশারীকটা বুরী চিরজ্বনী গুলুতি মধুমেহীচ রাজযক্ষীচ যোলরঃ । অচিকৎস্যাভবস্তোতে বলমাণসপরিক্ষয় ইতি নিয়ক্ত সংগ্রহানী করাদিপুস্থত সুক্ষত বাভ টারেরিব্রন্থানি ।

কথানু সারিনরকং ভুজ্বাংশ্যণ বুজ্বিতিব । ভূমো কুজলতা গুল্হপশুপ্লি মুগাদিভিঃ । পুতাক্ষণ নকেও ভৃজ্বাহ্যত্বওপূপ্দ্যতে । ছায়াধি লক্ষণণ সর্যাধিকপের বাধ্যতে । প্রস্তিক্ষ কতিও পাপণ ব্যাধিকপের বাধ্যতে । পর্ত্তীর্মণ্যেই বৃত্তভ্তসা ততঃ শ্রু। সর্থা পুত্রস্ত্র সর্স্তাহ বাত্রপীজ্ঞ তেও । ১ । বাত্র্গামী বল'লোহা স্থ্যেহী ভবে মরঃ । ২ ।। ইতি ক্ষাবিপাক পুত ভ্তু ব্যন্তি । স্থ পাপ বিশ্বস্থা পুজ্বার্পতাশ্তণ চরেদিতি শাতা ভপ্রচন্ত্র

মিতাকরারাণ বিশেষমাত্ শহুঃ । বুজাল্ জগীতে জন।পহারী মওলী তি।।

কুটাতি পাতকীতিশূল পাণিধৃতবিষুণু জ্ঞা । ৩ ৷ আজাহা জনহা মন্ত কৃতোয়েনচগোৰথঃ তেচাশাসা চ গৃহত্তে ভুক্তঃ ব ৪° সুদুং সহমিতি শৌনকৰচ ন° !: ৪ ৷ ৷ গুদসা ভাঙ্গুলেকেত্ৰে পাঁখেচ পীড়কা তিক্ত ৷ পুভাষেদিকটাকারে দুইইোম্মতেদকঃ ৷

त्र देव जनसद्भार्छसः कैर्माकाद्माराणि । আচার্য্য ভার্য্যাগম্ম থে সর্বস্তি নরাধ্মাঃ ।। পক পাতমধ্যেণ বাল্ব্দিধনাপহাঃ যোশেষশুলক্ষ ভ্যোবাহন ভদুপীঠক ।। চোরয়েৎ যস্ত দুর্দ্ধিঃ গৃহ্নীয়াৎ জ্রীধন° ভ্রমঃ। সোপ্যনেন চ রোগেণ জন্মাদাৰপি গৃহতইতি ভৃগু বচনানি 🛭 ৫ 🕕 পুতিগুহেণ সংপৃক্তং পাতকং গুছিকস্যচ। যোগৃ হ্নাতি স পাপাত্মা পূতে। ভবতি দানতঃ ।। পাপ পুহ পুহীতসা গাপরোগাতুরসাচ । পূযশোণিত সংমিশ্রে নরকে পচ্যতে ভূশং। মানুষত্মনুপাুাপা শর্কর মরিরোগবান্।। ভুতা বিদ্দত্যনুদিন ভক্দন মুত্রবোধতএ তানিচ।। ৬।। পুরা ধ্যন হতো বিপ্রে। ম্যাস। পহরণ° কৃত'বৃত্তিছেদঃ কৃতোযেন স্থুবিমু করশ্চয়ঃ৷ সর্বন্থেন কৃতোযেন পুজাপীড়াছকর্মণাঃ অত্যুপুক্ষবরোগেণ পাড্যমানস্ত দহতে ॥ তথা মিতাক্ষরায়াও স্মৃতিঃ বুক্ষহা ক্ষয়রোগী সা দিতি ৷৷ বুন্ধহাযম্পীতি রিঞ্সূত্রধং ৷৷ ৭ ৷৷ লোভাত্ ছেবান্ডয়াৎ দ্লেহাৎ यम्धाधन्य व्यक्ति রঃ।সভুছেক্ত নরক' ঘোর' পশ্চাচ্ছোথোদরী ভবেদিতি ভৃগু वष्ठनथ ॥

এ তেষা বিভাগাৎ পুাগেব দোষ পুাগোবন শৈষণ ন পুনবিভক্তস্য বিভাগোভরকালনীয় ধাদিনা দোষ নিহ্রণে ভাগপুাঞ্জিরস্তোব। বিভ ক্তেযু সুভোজাতঃ স্বণীয়া বিভাগভাগিত্যস্য লামান্যন্যায়বাদিতি, বিতাক্ষরা বিথম্প ॥ ৩৯॥

পুনঃ — বিভাজাধন কি বি ।।

অবা । যদ্ধন পিত্পিতার ছ ক্রমার ত পিতৃদ্বাঞ্চ যথ

ভব ।

পুনঃ সাধারণ ধনোপ্যাতেন স্বয়মভিত্ত সর্মান্

তদ্ধন দায়াদৈবিভাজামিতি বিদুষা সন্মত ।।

অসা । পৈতামহথ পিতৃঞ্চ যদানাৎ স্বয়মভিত্ত । দায়া

পুনাণ } দানাণ বিভাগেতু সৰ্বমেত দিভজাত ইতি কাত্যা

য়ৰ বচন° 11 ৪০ 11

পুশ্ব: — অবিভাজ্যধন কিকি অর্থাৎ দায়াদেরা যে ধনের অংশ পাইতে পারে না

আসো) সাধারণ ধনোপঘাতমন্তরেণ মচেষ্টয়া যেন যদুপ।
ভব

জব

জিত নিত্রাচন্দ্রপূপ্তি বিবাহ সনয়ে যেন যদৈ
বাহিক পুাপ্ত সৌর্যাদিনা শক্রপরাজয়েন চ যৎ
পাপ্ত বিদ্যাধনথ পিতামহপিত সাত্পুসাদতে।
যেন মৎ পুাপ্ত তদ্ধন তাস্যব নত্ব্যবিভাগিনা
ভবা শিত্রমিতি বিদাণ সম্মত ॥

শব্দ) অনুপত্মন্পিতৃদ্বা পুলেন যদুপাজ্জিত। ষয়নী
মানানি) হিতলক্সনাকামোদাভ্যহতি। অনাশ্তি পিতৃ
দ্বা সমস্তাপ্নোতি যদন । দায়াদেতো নতদ
দ্যাঘিদ্যালক্স যন্তবেৎ ।। পিতৃদ্ব্যাবিনাশেন
যদন্য শ্ব্যাজিত । দৈত্ৰ নৌঘাহিকথ্যেব দায়া
দানা নতজ্বেত্। দৌ্যাভার্যা ধনে হিল্বা যদ
বিদ্যাধন ভবেত্। জীপোতান্যবিভাজ্যানিপুসা

দে বিক্তিপত্কর। বিদ্যাপ্ত শৌর্যধন থক নৌদারিক ভবেও ॥ বিভাগকালে তভ্রস্থ নান্যে প্রবিক বিভিন্ন কিলিয়াহেন যদপ্ত পিতারা পূর্বিক । তস্য ভরাপহত্রি নাত্র দত্তপ্তত বেৎ ॥ বিদ্যাধনপ্ত যদ্ যস্য তভ্রবিষ্ঠ ভবেদ্ধন । নৈত্রমৌদাহিক ইচব মাধুপক্তি ক্ষের্চ। মাত্রাচ স্থবন দত্ত যথে স্যাৎ প্রতি পূর্বক ॥ তস্যাপ্যে য বিবিদ্ধোমাত। পাই যথা পিতেতি মনুবিষ্ণু ব্যাসমনু কাত্যায়ন বচনানি ॥ ১১॥

পুশুঃ — বৈবাহিক ধন কি পুকার হয় ।।
আস্যা বিবাহ কালে ক্লালা সহ যথ পিত্রাদিভিদী যতে
ভার ু জিনাও বৈবাহিক ধন মিভিসভাহ মতে ।।
ভাসা বৈবাহিকস্ত ভ্রিদ্যাৎ ভার্যায়। যথ সভাই ভমিতি
পুমাণ বিদ্যাধন কত পুকার হয় এবং ভাহারলজন
কি কি ।।

অস্যো ভুর• সভাষাং বিদ্যাবাদাশ্বাদেন প্ৰস্নপং যলকং।

উপন্যাদেন যংপু,প্তং শিষ্যসকাশান্যৎ পুলপ্তং
ঋত্বিত্নাধেন যাগ কৰ্মণি যলকং। জ্যোক্তিঃ শাজা
দিবলেন সন্ধিপাশুনিন্ধনিমিতকলকং। স্মৃতি
শাল্পুশ্মেভরদানাত যথ পুলপ্তং। আত্ম জানো
শাদেশেন যদুপান্জিতং। অধ্যাণনায়াং যত্
বেতন জাপেণ লকং। শিশ্পক্ষন্যিপ যক্ষ্যা
দিবকং পুপ্তেং। সংশা্যনাক্ষ্ বানিজ্যাদিকং

কর্ম যে। যত্র হটাত করে।তি শ্রীজ্ঞান কর্মণি নিদ্ধে সতি স্থাপন। তলৈ পুসন্নতয়া যদত্ত ।। শক্ত নিরসা বিদাল ত্রেন্ত পুাপ্ত ।। দ্যুতেন যত্ পুাপ্ত পুতিগুহেন যত্ পুাপ্তমেত্হিদ্যা ধনা বেদিতব্যনিতি বিদুষা সমত

আসাপু

বিদ্যাপৃতিজয় পুণ্ড॰ শিলাগেতিক যাত্রত্।

মাণানি

পবিজ্নায়েন যত্ পুণ্ডমেত্রিলাখন॰ ভ্ওঃ

যাস যাউপনাতে তুমলল বিদ্যাপণপুর্কণ। বিদ্যা

দার্জিয়তঃ পুশাত্সন্তির পুশুনির্মাত্। পুজা

নসংশ্লাদালক পুলিয়নাচ মত্য বিভাগিত রক্ষা

য়ণ মুল্যাদ্যকাধিক ভবেলা হাজে ক্ষান্ত শ্রাক্ষ

যত্র পুসতং কর্ম ক্রতে। তিমন্ ক্ষান্তির প্রাদ্য

মা দুতে পুর্কণ। বিদ্যাধনস্ভ ত্রিলা ল বিভাজ্য

বৃহস্পতিরিতি ভ্ও কাত্যার বৃহস্পতি বচনানি।
বুলির স্যাধিক লক্ষাতি গৌতনীয়ণ। পুলোগঃ

ক্র্যোগণ্ডসত্র পুতিপুর্বরচেতিনান্বকা। ৪০া

পুশুঃ- — বিদ্যাভ্যাসকালের কিছু বিশেষ নিরম আছে কি যে কোন পুঝারে বিদ্যাশিক। করিয়া ভদারা উপাজ্জিত হনকে বিদ্যাধন বলাজায় । অস্যো । স্বৃহদিত্যক গর পরতক্তি। প্রোগেনাসম্বন্ধি ভর॰ । সকাশাতায়েন যা দিয়া শিক্ষিতা তেন তয়া বিদ্যা রা যদ্ধন পুৰুত্ত ক্ষেত্ত তমা বিদ্যাধন বেদিতবা নিতি বিদুষাণ সম্পত ।।

শ্বন্য পরভক্তে। প্যোগেন বিদ্যা পুল্পান্যতন্ত্রা। তয়।
পুমাণ পুল্পে ধন যকু বিদ্যাপুল্পে তদুলতে ইতি
কান্তায়নীয় ।। ৪৪ ॥

পুশঃ — আপনারহইতে অধিক কিন্তা সনান বিদ্বান্ যেতু।
তাহাকে বিদ্যাধনের বিভাগ দিবে কি না ।।

স্থানে । বিদ্যায় যেন যদুপাজিজত তেল ভালনাভাগছন ।

ভার সম্বিদ্যাধিক বিদ্যায়ে ভালে তৈকা।

লোদেরঃ ন্যুনবিদ্যমুর্ধয়োত্ত্বানোন দের ইতি

বিদ্যাত সম্মতত ।।

অস্তপু নাবিদ্যানান্ত বৈদ্যেন দেয়ং বিদ্যাধনা - কৃচিৎ। ব সমবিদ্যাধিকানান্ত দেয়ং বৈদ্যেন তদ্ধন ।। ১ ।। বৈদ্যে। ইবৈদ্যায়নাকামোদদ্যাদংশংস্কৃতোধনাত্য পিত্ৰং দুব্যং সমাশ্বিত্য নচেত্ত্বন তদ্ভ্জিতিং ।। ২ ॥ व ষয়মজ্জিতমবৈদ্যেভ্যে। বৈদ্যোকামং নদ্দ্যাত্ । ২। যেন চৈষাং ষয়মুপাজ্জিতং স্যাত্ সোপি দ্যা শ্বেদ্য বহরেদিতি কাত্যায়ন নারদ বশিষ্ট গৌত্য বচ নানি ।। ৪৫ ॥ পুশু: — সেই ভ্রাতা যৌগন বিদ্যাভ্যাসকরি^{দিশঠ} গৈছিলেন তৎকালীন যদি মুখুছাতা আগাস ধন দানদারা ভাহার ফটুম পুডিশালন করিয়া থাকে তবে নে ভাহার বিদ্যাধনে অংশ পাইবে কি না।

আন্যা) বিদ্যানভান্যতোভাতুঃ স্বট্রত স্বায়াস্থনদান।
তর

ভর

ভাগ যোবিভ্রাৎসত্মান্যনবিদ্যামূর্থাবা বিদ্যা
ধনাংশং পুাপুর ৭ যদি দ্বো ভাতরো বিভ্রাতাং
তদা তমেকং ভাগং দ্বিধাক্রা দ্বাভ্যাং গৃহীতব্যং
মুনিবাক্যে ভাগনিত্যেকবচননির্দেশান্তযোঃকারণ
সাম্যাত দ্বো দ্বো ভাগোন পুাপুরাতানিতি বিদাং
সম্মতং ॥

• বিদ্যান্ত বিদ্

অনা) সট্সং বিভ্যাভাতিথিবিদ্যান্ধিগভ্তঃ। ভাগং পুনাণং) বিদ্যাধনাভ্সাত্ স লভেতভিতিভাগী সৃদ্ধিত নারদ্বচন ॥ ৪৬॥

ें प्राथितिक किए विशेषण द्वारमात्मायाः। परिकारमाः गारिणि विमीणमणाञ्चा

অসাপু সংলাপ জিউত বিদ্যানাণ ভাতৃণাণ পিতৃতোপিবা।
মানাণি সোন্যাপুণিগুল্ক যদিব তি তি ছিলাজাণ বৃহস্পতিঃ

া ১ । সাধারণ সন্মাশিতা যৎকিঞ্ছাহনায়
ধণ । শৌ্যাদিনাপ্নোতি ধনণ ভাত্রস্ত্র ভাগি
নং । তেনা ভাগদ্রণ দেয়ণ শেষাল্ভ সন্ম ভাগিনঃ

া ২ । দিরভিইয়িত্রিতি চ নারদ বাান বৌধায়ন
বচনানি । ৫৭।

পুরঃ — যুদ্ধ জন্ন করিয়া যে ধন আনে অর্থাৎ আপনার জীবনাঁশা ত্যাগু করিয়া যুদ্ধ করে পশ্চাৎ জয়ী হইলে যাহা লুট করিয়া পায় তাহা বিভাগ হয় কি সা

অন্যা) শজন্ বিজিতা সংগুনে¦জ্যেন যৎ পুাপ্তং ওজা ভরং ∫ জতন ভকেং তজনং তলৈয়ৰ ভাতৃতিবি≑্র ন িবিভালামিতি শুরিণাং সমতে ।।

খস্য) সংগ্রামাদাকতং মারু বিজিতা দ্বিষ্টাং প্রলং। ৠ পুমাণং ∫ মার্থে জীবিতং তাজা তল্পাক্তম্চাতে। পুজাক তং ভবেদ্যারু বিভাজা৹নৈবক্তাব্দিতি কাতাক নীয়৹।। ৪৮ ।।

পামঃ --- আর কি কি দুখা অবিভাজা হয় ।৷

অস্যো বাগন্থান ক্ষিত্তীত প্রস্থান্ত লডভুকাদ ্ঠী য়োপি কৃপবাপী গতা বারি গুরুমন্ত্রিপুরোহিত শ্চ বন্তভূষণ° যদস্যে জিত শাসনাশনক দাসী পিত্রা বৰুদ্ধা চ শিল্পপুরেজিলার্ছনুষ্যাদি পুস্তকঞ্চ গবা দীনা॰ পুচার**•চ রথ্যাগৃহক্ষেত্রথৈ তান্যবিভাজ্যা** মীতি সভাণ সন্মত ।।

ু অবিভাল্য: বংগাত্রাণানাসহসূত্রলাদপি ৷ বাজ্যু মাণানি **১ ক্ষেত্রঞ পত্রঞ কৃতন্মিমূদক° দ্রি**রঃ !! ১ ৷৷ ব**ন্ত্র**° প্রমলক্ষারঃ কৃতাল্লমূরকং জ্রিয়ঃ ৷৷ যোগদ্দেনপুণু চারঞ্জবিভাজাণ পুচক্ষাতে হে প্রতীষ্ট সংক্রদাসু নবিভাগঃ ৷: ৩ ৷৷ কেম•পূর্ত যোগমিষ্টমিত্যাহস্ত বংশিনঃ <u>১ অবিভাচে</u>ত্রক তি প্রোক্তে শর্মাশনুরে বচ।। 8 ।। ন বাস্তভাগোনোদকপাতাল স্বারানু পযুক্ত স্ত্রীবাসসামপা॰ পুচারার্থাগা॰ বিভাগান্ত।। श्रह्मकानि याक्यां क श्रुनारमार के शिक्व करो। মাতৃকশ্চ পুলাদোষস্তম্বিভাগো ন বিদ্যতে।। ৬।। গোপুচার*চ রথ্যা চ বস্ত্র° যচ্চান্ধযোজিত° ॥ ৭ ॥ ইতি ভৃগু ননু গোতম লৌগাফি শহু লিথিক পুজাপিছি কাঁতায়িন বচনানি ॥ ৪৯ ॥

পুর্ব যে বিদ্যাথনাদির অবিভাজ্য কহিয়াছেন হই তে পারে তাহাতে বিশেষ ক্ষমতা ও কারণ দেখা ইয়াছেন সংপুতি যাহা অবিভাজ্য কহিলেন ইহা কি পুকারে ব্যবহার করা যাইবে কোন অংশি

(कुर के खाना का रहेरन एन पूरा नितर्थक मा रहे বৈক অত্বৈএব এ শৈষ্যে মহৎ সন্দেহ উপস্থিত হই ল অনে ক ঋষি অ'র্ভাজ্য কহিয়াছেন বটে তাহা কি পুকারে মীমাণসা হইবে ॥

व्या मा ব্রর০

) এতত্ত্ পূর্ব[°] ময়া বিবৃত[°] দেবতা পুতিমাতু সর্বে **∫ পৃথক্ পৃথক্ মাদি মাদি**বা পূজিতবা। মজিপুরো হিতাদয়শ্চ তথা কর্ম কার্ডিতব্যা যাণ্ড্রিপুচা রাদৌ তন্তদু পযুক্তং কন্ম নর্বাংশিভিঃ কর্তবাং বস্ত্র ভূষণাদিক বৈক্র তন্মুল্য বিভাল্য কৃতান্নঞা কৃতান্দেন পরিবর্জাবিভাজাণ পুস্তকংপভিতৈগৃ'হী তवाः मूटेर्चन् जाः दृश्ही तुवाः यमुवाः यना शुरशांक **নাৰ্হ° তেনানো**ভ্যোমূল্য° দ্বা তদ্গৃহীতব্য° কুপা বাপীগতং জলমুদ্ধতা স্বস্থা জনানু মারেণ গৃহী ভবাঁ° বাহনাদৌ বহনজিয়া যুক্তা। কার্য্নিভবাা পুসাদলব্ধ ধনস্ত যদ্য তদ্যৈবৈতি বিদাণ সম্ম 🤊 段

व्यमानु । वजानरम श्रेवजानगरियः (श्राकुरेखर्म दिग्राह्मिकः। মাণানি ∫ ধন° ভবেৎ সমৃদানা° নত্তাভরণ লংকুিত°। লধ্য স্থিতমনাজীব্য° দাতু^ৱ নৈক্ষ্য ্লকাতে । যুক্তা বিভক্ষনীয়° তদন্যথানথকি° ভবেৎ ৷ বিজ্ঞান্ত বেল্লা ভরণমৃণমুদ্ **পুাছ লেখিত** ৷ কৃতার থাক্তা দ্ধেন পরিবর্ত্য বিভক্তাতে । উদ্ধৃত্য কুপবাপাস্তঃ স্বানুসারেণ ভুজাতে। একাং স্ত্রীং কারয়েৎ কর্ম ফ্পাণ্শেন গৃহে ।গৃহে। বজাঃ সমাংশতোদেরা

দাসানামণার্ম বিশিন্ত । যোগাঞ্চলগতে। বাভঃ

নমকেন বিভক্তাতে ইতি বৃহস্পতি বচনানি॥৫•॥
পূশুঃ — পিতৃ পুসাদাধীন পাগু স্থাবর অর্থাৎ যদি পিতা
কোন পুলকে পুসন্নহইয়া ভূমাগদি দিয়। থাকেন
ভাহার মৃত্যুর পর অন্য ভ্রাতারা আপত্তি করিলে
তাহার অংশ পাইবে কি না॥

আনো। ব ক্ষায়াত ৰাজ্জিত বা ভাবর যদি শিত্রা পুসন্ধত ভর বি পুশান্ত কম্মচিদ্ভে তথ্যরণানন্তর তভুন্যাদি কংসরৈ ভুগত্তিবিভাগ গৃহীতবামিতি নিতা স্কান্ত দায়ভাগনতে স্বাজিত সিদ্ধাতোবেতি স্তাত স্ক্ষাত্র।

অসাপু) পিতৃপুসাদাৎ সিদ্ধান্তি বস্ত্রাণ্যাভরণানি চ। স্থাব মানানি) রাণি ন সিদ্ধান্তি পুসাদে পৈতৃকে মতি, ।। কৌলে রিক্থবিভাগে তুন কশ্চিৎ পুভূতানিয়াৎ ।। ভোগ এবত ক্তিব্যান দানং নচ বিজ্ঞাঃ ।। ১ ।। পিতৃপুসাদান্ত্রান্তে বস্ত্রাণ্যাভরণানি চ। স্থাবর স্তুল্যেত।পুসাদে সতি পৈতৃক ইতি বৃদ্ধ্যাক্ত বৃদ্ধা কুইস্পতি বচনানি ।। ৫১ ।।

পুশুঃ - --- ক্রমাগতধন পিতৃক্ত বা অন্যে অগহরণ করিয়া থাকে সকল ভাতাকে জ্ঞাত করিয়া যদি একজন আরক্ষ্যতা দারা তাহা উদ্ধার করে তবে অন্য ভূজিরা তাহার অংশ পাইবে কি মানা আব্যা) ক্রালাত পিতৃক্ত বানোর্ছত ভারনুজয়া
ভর
বিল তদুজ্ত তেলেৰ তদ্ গৃহীতবা নত্তনাধা
ভূকি তত্ত বিভাগানিকারঃ ভাবরঞ্চে সাহ
তদা তত্ত বিভাগানিকারঃ ভাবরঞ্চে সাহ
তদা তত্ত বিভাগানিকারঃ ভাবরঞ্চে সাহ
তদা তত্ত্ব বিভাগানিকার
শেষণ ধনণ পুনস্তেন সহ ভূকিতিবিভাগা নিতি
গণ্ডিভানা সম্বত ।।

অস্য । ক্রমান্ড্যাগত দুবা ক্রমভূয়ের ভূমঃ। দায়।
পূসালে । দেভ্যোন তদ্দানাদ্বিদায়া লক্ষমের । পূর্বন স্টান্ত্র
যোভূনীনের ক্রান্তর দুমাৎ ।। মথাভাগ ভক্ষ
ন্তানো দক্ষা শস্তু ভূরীরক মিতি যাজবদ্যু শহু
ন্তানে চিন্দ্র অলক্ষার এব জ্রীধন হইতে যাহাকে

পুনঃ ----জালোকের অলঞ্চার এব জাধন হংতে বাহাকে

যাহাদিয়া থাকে তাহা বিভাগ কালে তদ্দেবর

অথবাতত্পুঞ্জ পৌত্রের। বিভাগ করিবে কি না।
অসমানপতিক্যা যোলকারোধৃতঃ পশ্চাত এরি
ভরণ স্তহিপি সোলক্ষারস্তস্যা এব জীধন কি ু্বাদ

ধ্নকাবিভাকামিতি বিদুষাং সন্মতং।।

অসাপু । বিদ্যাশীর্যাশুনৈ নির্দ্তিবিদ কর্মপুক্তিক । নৈত্র
মাণানি । মৌহাহিক ভুগতুভাত্তির্ন বিভঙ্গতে । লৌর্যা
পুঞ্জি বিদায়াচ জীধন চৈব যৎ স্মৃতঃ । এতৎ
সর্ভ বিভাগেতুন বিভাজান্ত রিক্থিভিঃ। পড়েটা
লীবতি যঃ প্রীভিরলক্কারোধ্তো ভবেৎ। নতঃ
ভাজেরন্ দায়াদাভজমানাঃ পতন্তি তে । নাত্রাচ

ষধন দ্বা ইংশ ন্যাৎ প্রতিপুরক। তদ্যাপ্যের বিধি দৃষ্টে। নাতাপাঙ্কে যথা পিতোঁত পুরুষপতি বৃহস্পতি কাত্যায়ন বচনানি॥ ৫৩॥

পুলঃ — পিতৃথ্ত বস্তভূষণাদি যান 'বাহন বা অজ যদি
থাকে পিতৃথ্য গোত্তর পুত্রেরা তাহা বিভাগ করি
বে কি ন্যুক্তি

আসো । পিতৃপ্তবঁজাল, রীয়াদিক তডোগায়ানবাহনশার অর । নাশনাযুথাদিক ও পুাদভোক্তে পুদাতবামিতি মিতাক্ষরাচলিতদেশকৈদী য়তে চরাচ গৌড় বল বরেনু দেশে তৃব্যবহারো নাস্তীতি বিদাং মতং॥ অন্য । বল্লাক্ষার্শয্যাদিপিন্দুর্যবাহনাযুথ । গল্লালাগৈ

श्रुमान॰ र्रम्म छार्का श्रीका छ। कु उपर्यक्षिक दृश्याकि वहना । वहा।

পুশঃ — মারারণ ধন ব্যয় ব্যতিরেকে অনেক মুর্থ ভ্রাতারা যদি একত হইলা ক্ষিলাভিল্যাদি ছার। ধনোপা ভর্জন করে তবে পিতৃ কৃত বিভাপে অথবা পিতৃ মরণােুহর বিভাগে ভাহার কি পুকার অংশ ভূইবেকা।

আন্যা । পিতৃরুত্যাবিলোধেন বিদ্যাব্যতিরিক পুকারেণ ভারং । ইয়ারং তদ্ধান সংঘৰ্ষজুভিঃ সমং বিভাজ্যং ত্র ন পুনক্ষারাদিকং ন্যুনাধিকচেটাদিক্ধান্যেমনীয় নিতি বিদ্যাং সক্ষতং ।। অস্য বিদ্যানান্ত সর্বেবনিহিতিদেজন ভবে । সম পুনাণ বিভাগঃ স্যাদপ্যত্ত ইতি ধারণা ॥ ২॥ সামা ন্যার্থসমুখানে বিভাগন্ত সমঃ অন্ত ইতি মনু যাক্তবল্যিসার্জবিচন ।। ৫৫ ॥

পূণাঃ — অবিভক্ত দশাতে স্কটুয়ার্থে পিতৃব্য অথবা ভাুতা ও মাতা য়েখণ করিয়া থাগুরুন তাহাবিভাগকালে সকল অংশিরা বিভাগ করিয়া দিবে কি না !!

আন্যা ৄ অবিভক্তেন পিতৃব্যেন ভুাত্রাবা মাত্রা চ স্কটুয়ার্থ° ভর॰ ৢ বদ্ন৽ কৃত৽ ভবেৎ ভদগুে পরিশোধা শেষ৽ ধন৽ সর্বদারাদৈবিভাল্য৽ যদি ধন৽ নাস্তি তথাপি সূর্বে ঋূণু ব্রিভ্জ্য দদ্যবিতি সতা৽ সম্মত৽ ।।

শাস । খানি পুঁতি পুদানক দক্তী শেষণ বিভাজয়েও ।। ১।।
পুনানে । পিত্বোনাবিভক্তেন ভাতা বা যদৃশ কৃতণ। নাত্রা
ক্রম্যৎ কটুছার্থে দদ্যস্তৎসর্ব রিকিথন ইতি কাত্যা
মন নারদ বচনে ।। ৫৬ ।।

শুন্নঃ — ঋণকর্তা পিত্ব্য অথবা ভ্রাতা যদি দ্রদেশে গিয়া থাকেন কিয়া লোকাস্ত্র গত্ স্যেন সে ঋণ কটু স্বার্থ হয় তবে বিভক্ত ত্রাতৃ পূর্প্রা ভ্রাতা আপন ধন ক্ইতে দিবে কি না ।।

আসো) ঋণগৃহীতা পিতৃবাদিযদি প্রোমিতোম্তে। ব। স্বরং) স্যান্তদা ফটুমার্থকৃতম্ণ ভারাদিভিবিতজেদী মানুৰণ দাতবামিতি স্তাং স্মতং ।। অনাপ্) অবিতকৈঃ কটুমার্থে নদুণিণ তুঁক্তণ ভবেৎ। দদু মাণানি) অদ্কিথনি পুতে পুোষিতে বা অটুমিনি।। ১।। গৃহীতা যদি নষ্টঃ স্যাৎ কটুমে চ ক্তোব্যয়ঃ। দা তবাণ বাক্ষ্যেত্র সাংহ পুবিভট্জেরণি মতঃ।।২।। বিভক্তাম্চ দায়ানুর্বাপ্যণ শ্মিতি যাজ্ঞবলু । মনু বিফ্ বচনানি ।। ৫৭ ।।

পুণুঃ — গটুপার্থে হক্ষিগৃহরক্ষক দাস ঋণ করিয়া থাকে।
ভাহা কর্ত্তা ব্যক্তি দিবে কি না ॥

ভাষ্যা । বিদ্যাংথ গৃহরক্ষকদাস কৃতণং গৃংক্ষেনাকশ্যং দা
ভাষ্য । বিজ্ঞাং সন্ধান্ত ॥

অসা) স্কুলাপ্ ইন্থানোপিরাক্ষার মাচরে । বদে পুনালে) শ বা বিদেশির ডিজ্ঞায়ার বিচালয়ে । । ।। পিত্বাভাতপুঞ্জীদাসশিষ্যানুজীবিভিঃ যদ্গৃহী ত॰ স্কুলাপে তদ্গৃহী দাতুমহাত ।। ২ ॥ ইতিয়নু বৃহস্পতি বচনে ॥ ৫৮ ॥

পুনঃ — উপায়ক্ষম যে সকল অংশি তাহারা যদি বিদেশে বাণিজ্যাদি ক্রিতে গিয়া থাকে গৃহেতে এক ব্যক্তি তুর্তি। বাং শিত্বা রক্ষক থাকে বিভাগ কালে সকল অংশি একত্র হইলে ঐ গৃহত্ ব্যক্তি যদি গৃহের কোন দুবা লুক্কাইত করিয়া বলে যে আমি বিক্রয় করিয়া ক্রিয়াইত করিয়াছি অথবা বলে আমি এক শতটাকা ঋণ করিয়াছি তাহাতে সকল অংশির সন্দেহ জিয়ালে কি কভ্রা।

ত্তর.

্বিদশান্তিরতিতের ভারাদির্গৃহত্তেনাবিভক্তেন্য**র** ∫ ণাদিক° কৃত° ভবেত্তস্য সাকিলেখ্যাদিক° পুমাৰ মবগন্য সন্দেহস্থলে সকলাং শিভিমিলিস্বা তল্পৈ কোশঃ পুদাতবাঃ সু যদি তত্ত্ৰ শুচিঃ ন্যাৎ তদ। যানি দুব্য'নি দৃশ্যমানানি তানি সর্বে বিভ **জে**যুঃ তদৃণাপচয়াদিক**ঞ্ছীস্থ**্যরিতি পণ্ডিড না সমত ।।

অস্যপু 🔵 ঋণমেবংবিধং শোধ্যংবিউটিগ বন্ধু ভিঃ সহ 🗠 ঢ নাণানি **বিদ্যাবিশঙ্কায়া° পু**তায়স্তত্ত কীভিতঃ ॥ ১ ॥ প্রেপিকরবাহস্চ দেহিভেরণ ক্রিনিং। দৃশ্ মানা বিভজান্তে কোশং গুটেইবুবীদ্ ভৃগুঃ॥ ২। গ্ছোগক্সরবাহা্দিদোছাভরণ কন্মিণঃ।দৃশ্যমান বিভজান্তে গুঢ়েকোশো বিধীয়তে॥ ৩॥ শঙ্ক বিশ্বাসসন্ধানে বিভাগ রিক্থিনাং পুনঃ। তেয়াং সমূহকভূত্ত্ব কোশমেৰ পুদাপয়েদিতি কাতা য়ন ভৃগু বৃহস্পতি পুজাপতি বচনানি ॥ ৫১ 🔑

– সংস্টধন কি পুকার এবং সংস্টার লক্ষণ কি ॥ ় বিভাগানস্তর শিত্রা ভুাত্রা চ পিতৃৰ্যেন বা সহ সং 🕽 প্রীত্যা পুনরেকত্রসংস্থিতঃসন্ পূর্দ্ধবিভক্ত ধনমেকী কৃত্য সর্বেধানে কমত্যা যত্ত্ব ধন্ তিশান ধন্ যদ্মম ধনং ভত্তবধনমিতি ব্যবস্থয়া পুাগ্জাত্তব শেষিক অন্ধনাশেনোৎ পদ্মাপরিচিতবৈশেষিক ৰত্ব**জন সংস্টধ**নমিতি দায়ভাগ মঙ্গা

্ট ভুরুঞ্চ

÷

পুাক্জাতবৈশেষিক স্বত্তনাশেনোৎপদ্মসামুদ রি ক স্বত্তকন প্রত্তিত্ত স্থানিমিতি মিতাকরাসম্পত ত দ্সাস্তিতিস স্থাস সৃষ্টাশেতি বিদুষা সম্পত ।।

স্বসাপু) বিভক্তোঃ প্নঃ পিত্রা ভূাত্রা চৈকত্র সংস্থিতঃ। মাণ) পিতৃবোনচবা পুী তা। স তু সংস্থ উচাতে ইতি বৃহ্ স্পাতি বচন্ণ॥ ৬ ॥

পূশুঃ — সংস্থার িণুনর্র যথন ধন বিভাগ করিবে তথন কি পুকার অংশ হইবে অর্থাৎ যে দেশে জোটাংশদান ব্যবহার আছে সেদেশে এই সংস্থ ধনের জোটাংশ জোটভাত্য পাইবে কি না।

জাসা) যত্র দেশে জোষ্ঠাংশদানক্যকহারোভি দীয়তে চ ভরং । উত্রাশি সংস্থিধন বিভাগে জোষ্টভূতি। জোষ্ঠাংশং নাপুয়াদিতি বিদাং সন্মতং।।

শাপু বিভক্তাঃসহজীবন্তো বিভলেয়ু শ্লন্থদি।সন্ত্র মাণে বিভাগঃস্যাৎ জৈচিত্তা তত্ত্বন বিদ্যাতে ॥১ ॥ বিভল্তা ভ্যান্তরোধেতু সংপুটিতাকত্র সংস্থিতাঃ। পুনবিভাগ করণে তেষাং জৈচিত্তা ন বিদ্যাতে ॥ ২ ॥ ইতি মনু বৃহস্পতি বচনে ॥ ১১ ॥

পুরঃ — সংস্থি ভাতাদিগেরমধ্যে যদি কোন ভাতা বিদ্যা শুরত্ব পুকাশ করিয়া ধনোপার্জ্জন করিয়া থাকে সে ধন কি পুকারে অংশ হইবে অর্থাৎ অর্জ্জক ব্যক্তি দুই অংশ পাইবে কি না ইতি।। অন্যা সংস্ট্রনাপদাতেনবিদ্যাশৈর্ঘাদিভির্যেন সংস্ট্র ভর॰ স্থিপুরাভভিন্ন নামেককোভাগঃ ন্যাদ্যদি সংস্ট্রনাবিরোধেনোপাভির্ত তদা সর্মের। ভ্রেকো লভেতেতি বিদ্যাং সম্মতং !!

আসাপু) বিভক্তাঃ পিত্বিভাচেদেকত্র পুলিবাসিনঃ।
মাণে) বিভক্তের পুন্দা সংস্কাভেভেদেয়ে। যতঃ। সংস্কৃতি নাস্ত যঃ কশ্চি দিদ্যাশোয্যাদিনা ধনং।
পুণপুতি তস্য দাতব্যোদ্যংশঃ শেষাঃ সমাংশিন
ইতি কাত্যায়ন বৃহস্পতি বঁচনে ॥ ৬২।।

পুশ্বঃ — সংস্থ ভাতার মধ্যে অপুত্রক কোনএক ভাতা যদি আশুমান্তর বা লোকান্তরগত হয় তবে তাহার আশ কে পাইবে অর্থাৎ অবীরান্ত্রী পাইবে কি সংস্থ ভাতারা পাইবে ॥

আস্যা } বিভাগাৎ পুগেষ্টি সংস্থিনাং কনিচ দাশ নস্তর
ভর

গতোবা মৃতঃ স্যান্ত্র্যাংশং বক্ষামান্ত্রবন্ত্রানুরা
রেণ সোদরাঃ সংস্থ ভ্রাতরঃ সম্থ বিভক্ষা গৃহ্নীরু
রৈতি মিতাক্ষরা মতং।।

অসাপু ব্যবাণ জোষ্ট কনিষ্ঠোবা হীয়েতাণশ্পুদানতঃ ।
মাণানি স্য়েতানাতরোবাপি তসা ভাগোন লুপাতে ॥
সোদ্র্যা বিভজেয়ুস্ত সমেতা সহিতাঃ সমণ ।
ভূতিরো যেচ সম্সুটা ভগিনাশ্চ সনাভয়ঃ৷৷১৷ভূতি
গামপুজাঃ পুেয়াৎ কশ্চিকেৎ পুবুজেত বা

বিভজেরন্ধন॰ তস্য শেষাস্ত জীধনণ বিনেতি কনু নারদ বচনানি !! ৬৩ !!

পুনঃ — এই ব্যবস্থা জীমূতবাহনমতে কি পুকার হইবে।।

জন্যে।
 পুঞ্ পৌত্র পুপৌত্র পর্যান্তরহিত্য মৃত্যা সংসৃষ্টি
ভারে তাদিবচনোপাত্রাধিকারি ক্রমেন মাত্পর্যান্তা
ভাবে সোদরাসংসৃষ্টিনো লভেরলিতি জীমূত
বাহন মতং।।

আসা বিধা কশ্চিৎ পুনীয়েত পুৰুজেছা কথঞন। ন পুনাণে বিপাত তমা ভাগং সোদকলা বিধায়তে ।। সংব ভৌযৌপুনং পুতিয়া ভৌপরস্পারভাগিনো। অন পতারা ধর্মোয়নভার্ম্যাপিত্কমা চেতি বৃহস্পতি বচনে ।। ৬৪।।

পুশুঃ - — যে স্থানে দুই সংগদর সংস্থ আছে এক সংগদর
পৃথক্ আছে সংস্থ দুয়ের মধ্যে একের অন্যথা

হইলে তাহার স্ত্রী স্পস্তগন্ত্র পশ্চাৎ যদি পুঞ হয়

সেস্থানে কি ব্যবস্থা ইইবে ॥

ভারে বিভাগকালে মৃত্যা পুনরেকঃ সংহাদরঃপৃথক্
ভারে স্থাৎ বিভাগকালে মৃত্যা সংস্থিনঃ পত্যুক্ষেই
গাঁড তিত্র সংস্থিতসোদরছোভয়কারণসভাবাৎ
লংস্থিনোধনং সোদর সংস্থা গৃহনীয়াৎ পশ্চাদ্
বদ্যক্ষ্টগাড়াঃ পুলোভবেতাগং তৎপুলায় বং
স্থা দ্যা দিতি মিডাক্ষ্রা মৃতং ৷

উত্তরঞ্জ সগর্জাবাগান্ত যিত্র পাত্নী বিদ্যাতে সংস্থী ভ্রাতা টি তত্র পাত্নেব গৃহ্জীয়াৎ পত্নাদ্যভাবে সংস্থা গৃহী। মাদিতি দায়ভাগ মতং ॥

অসা সংস্থিনি প্রেত সংস্টোরিক্থ ভাগিতি গৌত পুমাণ স্মানণ স্থিনস্থ সংস্থা সোদরসাত লোদরঃ। দদ্যাদপহরেকাতশং জাতসা চ মৃতস্য চেতিয়াজ বন্ধা বচনগু।। ৬৫ !।

পুশুঃ--- মদি দুই বৈমাত্তে মৃভুাতা সংসৃষ্ট থাকে আর এক বৈমাতে মৃভুাতা পৃথক থাকে সেম্বলে মৃত বৈমা তেমভুাতার ধন কে পাবে আর যেস্থানে অসোদর সংসৃষ্ট স্হোদর পুথক্থাকে সেম্বানে বা কে পাই

আস্যো) সাপজুমাত সভাবে মৃতস্য সংস্**ষ্টস্য ধনং** সংস্**ষ্টী** ভরং

স্থাপুমাৎ যত ভ ভিল্লোদ্য্যঃ সংস্**ষ্টা** সোদরঃ প্ থক্ বিদ্যাতে তত্ত ছয়োঃ কার্ণ সাম্যাৎ ্রভ্যাং বিভ্ছা গৃহীতব্যমিতি সভাং সম্মতং :

অসা) অনোদ্যান্ত সংস্থী নান্যোদ্যোধন হরে ।
পুমান) অসংস্থাপি চাদ্দ্যাৎ সংস্থো নান্যমাত্ক ইতি
যাজ্ঞবকু । বচন ।। ৬৬ ।।

পূখাঃ — স্পৃতি ভ্রাতারদিগের পুন্রিভাগ সময়ে সকলের স্থান অংশ কহিয়াছেন সে কি রূপ সমান পূর্ব বিভাগ কালে কোন ব্যক্তি অজ্জকত্ব নিবস্কে দুই ভাগ পাইয়াছিল অথবা পিতামহবাপিতাসস্তোব

পূৰ্যক অধিক দিয়াছিলেন কিংবা জ্যেষ্ঠাংশ পাই য়াছিল এইৰূপে অধিক অংশপাইয়া যদি পশ্চাৎ দুইতিন ভাুতার সহিত সংস্**টহই**য়াথাকে পুনর্বার विভाগ कार्रल ये वे व्यक्तिका नवा जिल्लाक नगा নাংশ গাইবে কি সমুদায় ধন সকলের নাধার। হইয়াছে অত এব সকলেই তাহা সমভাগ করিলা नहर्दन हेर्छि॥

व्यटमा ন্তর•

) সংভূষ বনিগ্ভিবিষ্মসংখ্যকৈধনৈবাণিজ্য° স্বৰ্ ∫ (দ্ৰুকুৎ পাদিতে দূৰে**) স**ৰ্বেষা° স্বামিকাবিশেষে ইপিষ্থা ধনানুসারেণ**্ভাগো ভব**কি তথাত্রা**পি** কল্পনে বাধকাভাবাৎ পুর্বক্লিগুবিভাগানু সারেণায় বায়বিশোধিতোবিভাগঃ স্যাৎ ৷ সম্বিভাগ কথনন্ত পুনবি'ভাগকালে অংশাধিকাপুরোজক ৰূপৰত্বেপি অত্ৰাংশাধিক্যং ন ভবে দিত্যনেন দিতীয়ভাগএব জ্যোগাংশনিষেবার্থা নত পূর্বপুঞ্জ ধিকভাগন্য পূর্ব পুাপ্তন্যুনধনৈঃ সম্বিভাগ গুাঞ্য র্থ মিতি বিদাণ নমাত ॥

অসাপু) বিভক্তাঃ নহজীবজ্যে। বিভজেনঃ পুনর্মনং : সম ʃ স্তত্র বিভাগঃ স্যাজ্জােগ্র তত্ত্রন বিদ্যাতে 🗧 হি মন बहन° ॥

> মিশাস্ত্র সমস্তত্র বিভাগঃ স্যাৎ প্নতৈচিচ নবি দ্যভ ইতি পঠন্তি॥ যথা যথাবিভাগান্ত ধন॰ **ৰাথাৰ্তামিয়াৎ** ॥ उथा उथा

বিছডিভগিগৌরবমিভি কাত্যায়নীয়ঞ্ ৷৷ সংমা তিরিক্তোহীনোবা তত্রাণশোষস্য যাদৃশঃ। ক্ষয় বায়ো তথা বৃদ্ধিস্তদ্য তত্ত্ব তথা বিধেতি নারদ वहनः ॥ ७१ ॥

পুশুঃ — ধনিরপিতামাত। বিদ্যমান থাকিতে পুঞ্জ পৌঞ্জ রা মৃত ধনে অধীকারী হয় ইহার কারণ কি 11

े कारामाकनिखिंडिश्विरार्वकः मार्थ यरक्रमरेनवर्गः

 পরিশোধয়ে
 বৃদ্ধচর্ষোণার্যনি পরিশোধয়ে
 । পুজাভিঃ পৈত্রন পরিশোধয়ে ৷ কি ক্বা তৃষ্ণ° পুলেষু সংঘাসা পিতা স্থাদিলোকান্ পুাপ্নোতি পুন্নামোনরকাত্ পিতর ভায়ত ইতি পুজঃ। ভঙ্গাদগ্রে পুজ এব পিত্রস্য বসুনঃ পুভৃঃ। পৌত্রেণ স্বগাদিষু চিরকালমবতিষ্ঠতে ভদনস্তরণ পুপৌত্রেণ স্বালোক পুপ্রোচাতঃ পৌল পুপৌত্র योपाइन्हर्ने॰ युक्कः शुर्लीव्यशुक्तमा प्रविश কারাসংভাবা**লাধি**কার ইতি দায়ভাগ স্থাতঃ II

অন্যপু विश्व । বানে বুলি প্রতি খণবান বুলচর্ষ্যেণ শাণানি ∫ ঋষিভাঃ যজেন দেবেভাঃ পুজয়া পিতৃভাঃ এষবা অন্ণী য়ঃ পুত্রী হজা বৃক্ষচারী চেতিশ্রুতিঃ।। পুলামোনরকাত্ মন্দাত্ পিতর আয়তে সুতঃ। তমাত্পুত্ৰ ইতি পুোকেঃ ষয়মেব ময়॰ভূবা।। ১।। পুলামা নিরয়ঃ পোক্ত শিচ্নতন্ত্রণ নৈরয়ঃ। তত্ত্ব বৈ ভায়তে যক্ষান্তকাত্ পুত্ৰইতিক্ষ্ ডঃ ॥ ২ ॥

পৃন্নান্নজায়সে যক্ষাত্ পুল্জেনাসি স'জিডেঃ।।
৩। পিতৃণাম ন্ণোজীবন্দ্রা পুলমুখণ পিতা।
স্কণি তেন জাতেন তক্ষিন্ সংনাস্য তদ্ণ ।
অলিহোত্র এয়োবেদা যজালৈব সদক্ষিণাঃ।
জাইপুলপুসূতস্য কলা নাইস্তি বোড্শা ।। ৪।।
পুলেণ লোকান জয়তি পৌরেণানস্থান্যুতে।
অথ পুত্রস্য পৌরেণ বুধসাল্যোতি পিউপ ।। ৫।।
লোকানস্তা দিবঃ পুাপ্তিঃ পুল পৌল পুণৌল কৈঃ।। ৬।। পুলিতামহঃ পিতামহঃ পিতা স্বয় ।
নোকানস্তা কর স্বাধায় পুলা পৌত্রঃ পুণ্টোত্র লোকানস্তা কর স্বাধায় পুলা পৌত্রঃ পুণ্টোত্র লভানবিভক্তদায়াদান্ স প্রিপ্তানাচক্ষতে।। ৭।।
ইতি মনুহারীত বৌধায়ন শিল্প লিখিত মনুযাক্ষ ।
বব্য বৌধায়ন বচনানি।। ৬৮।।

প্রা: — পুএপৌত্র পুপৌত্রাভাবে মৃতব্যক্তির ধন কে গুহণ করিবে॥

আবো। ব্যাপ্তধনং পূথমং পূত্রাপৃহ্নীয়ুঃ পূত্রাভাবে পৌত্রাশত ।।
উত্তর্গ পূত্রপাত্র পূপৌত্রাণায়ভাবে স্বর্যাত্রসাপুত্রস্ব কৃত্রধনং দোষরহিতা সচ্চরিত্রা ধর্মপদ্দী গৃহ্নী রাদিতি জীমৃতবাহন মতং।।

অসাপু) মুখ্যগৌণসুতাদায় গৃহ্নাতীতি মির্কলিত । মাণানি) তেষামভাবে সর্বেষা দায়াদক্রম উচ্যতে॥ পঞ্চী দুহিতব্রন্ত্রে পিতরো ভ্রান্তর্তথা। তত্ সুতো

গোত্রজোবন্ধুঃ শিষ্যঃ স্বুক্ষচারিণঃ ৷ এযানি ভাবে প্রসা ধনভাগুতরোতরঃ ৷ স্বর্যাত্সা হৃপুত্রস্য সর্ববর্ণেম্বয়ং বিধিঃ।। ১ ।। অপুত্রস্য ধনং পভ্যুভিগামি তদভাবে দুহিত্গামীতি ৷৷ ২ ৷৷ আন্নায়ে স্তিতন্ত্রে চ লোকাচারেচ সুরিভিঃ। শরীরাদ্ধ সমৃতা জায়া পুণা পুণাকলেসমা !! যস্য নোপরতা ভাষ্যা দেহার্ল তস্যজীবতি 🔃 জীব তাদ্ধারীরে চক্থ্যন্যঃ স্বাপ্রাত্য সঙ্গো বিদ্যমানৈস্ত পিতৃমাতৃসনাভিভিঃ ৷ অসুতস্য ুপুনীতস্য পল্লীতজনহারিণী ॥ ৩ ॥ পুর্বপুণী তাগ্নিহোত্রণ মৃতে ভর্ত্তরি তদ্ধণ । বিন্দেত্ পতিবুতা মারী ধর্ম এষ সমাতন ।। ৪ ।। অপু আশ্রন ভভু । পালয়ন্তী বুতে স্থিত। পল্লেব ° দদ্যাত্ত্<mark>পিণ্ড° কৃত্মমর্থ° লভেত চুয়া ৫ য় প্</mark> জ্বী পত্যদ্ধনিহরীয়া স্যাদব্যভি চারিণী । গণ্ডা বেতু দুহিতা যদ্যনুচা ভবেত্ত দেতি সংক্রবন্ধ্য বিষ্ণু বৃহস্পথতি পুজাপতি দৃদ্ধমন্ কাত্যায়ন वहनानि ॥ ७२ ॥

পুশ্নঃ — পুত্র পৌত্রেরা মৃত ধনে অধিকারী হইয়া যেৰূপ বায় করেন অর্থাত্ যথেষ্টদান বিক্রয়াদি করেন পত্নী তক্ষপ স্থাবরাদির দান বিক্রয় করি তে পারেন কি না 11

অসো । প্রীত্রন যারভ্রীর ভুঞাটতবনতু সূক্ষ্ বস্তপরী ভরং । বানাদিনা যথেষ্ট্রায়ং ভাররাদেশচ দানাধ্যন বিজ্ঞান তুর্মইতি সভাওল্পেন্তায়াপের্হতরে। বিকারিপ্যোভ্রে গুরিভি বিদাণ সম্মতং ॥

অন্যপু) জ্রাণাং বপতি দায়াস্থ উপভোগকলং স্কৃতঃ । না
নাণানি) পহারং স্থিয়ঃ রুষ্টাঃ পতিদায়াৎ কথঞ্জন ।। ১ ।।
নৃতে ভতুরি ভত্তাংশং লভেত জলপালিকা। যাব
ভ্জাবিং নহি ভ্রান্য দানাধ্যনবিক্তয়ে অপুতা
শয়নং ভতুই পালম্ভী গুরৌ হিতা। ভঞ্জীতা ময়
ধাই কান্তা দায়াদাউল্মাপু যুৱিত দানক্র্যপুত্ত
ব্যাস কাত্যায়ন বচনানি ।। ৭০ ।।

পূন্ধ — অবীরা ত্রী কোন সলকে আসুষ করিয়া থাকিবে আর আল্লভরণার্থ এবং স্বস্তবশাশুড়ী ও পতির পিতৃব্য মাতৃলাদি বাক্স্যা দৌহিত্র থাকে ইহার দিগের ভরণ পোষণার্থে এবং অভ্যাগতও অভিথি ইহারদিগের পাসার্থে আরপতি স্বগার্থে ও নিত্য নৈনিভক শাুদ্ধাদির নিমিত্তে স্থাবর বিক্রর করি তে পারে কিনা।।

আসো) ভর্তির মৃতে রপুঞারাঃ পতিরক্ষঃ পুভুর তত্তেষাণ ভর° স্থানাদীনা ভর্তি ক্পিত্বাদী হিত্রনাতৃলা দী নাণ দীনান্থিভ্যাগতাতিথানাঞ্চ পোষণণ তয়া বশ্য কার্যালা পতিস্লাভাবে স্পিত্রলনা শ্বিতা কালণ গন্ধেও ॥ নাচ বর্লাশাকৌ ভর্ত্ব রৌর্দিহিক্জিয়ানালিক সাগানিকাদিশুরাদার্থ গুজাবরণ পুথ্য লাব্যন্থ স্থাতি তদ্শকে। বি জ্বনপি পতিষ্ণাৰ্থমৰ্থানুৰূপণ ভত্পিতৃষ্যাদি ভো। দদ্যাদিতি বিদ্যাণ সমতে ।।

দ্বাগান বিনিখোগার্থরকাস ভরণে চল ক্রিরঃ। পরিকারি প্রভিন্ন বিন্ধাগার্থরকাস ভরণে চল ক্রিরঃ। পরিকারি পে পতিকলে নির্মানুষ্যে নিরাশুরে। তথ সপিতে কু চাসৎস্ব পিতৃপক্ষঃ পুড়ঃ ক্ষুভঃ।। ১।। ভরণণ পোষ্য কর্মাণ্যাক্রনতং ভরেৎ।। ২।। একোলি হাবরে ক্যাণ্যাক্রনতং ভরেৎ।। ২।। একোলি হাবরে ক্যাণ্যাক্রনতং ভরেৎ।। ২।। একোলি হাবরে ক্যাণ্যাক্রন্তি বিশেষতঃ।। ৩।। বুভোপ বাসনির ভারুক্রার্মের ক্রাণ্যাক্রনা ব্রভাগ বিক্রান্তিত্ব হিলান্ত্রঃ হুদ্বিরমাত্রান্ পুল্বের করা প্রভাগ বৃদ্ধানাথাতিথান ক্রিয়ঃ।। ৫।। ভাররণ প্রভাগে বৃদ্ধানাথাতিথান ক্রিয়ঃ।। ৫।। ভাররণ

য়েজুাদ্ধং নাস্থাণাগিকাদিকং। পিতৃতা গুৰুদৌ হিৱান্ভৰুঃ স্বজীয়নাতৃলান্ । গুজুৱেৎ কৰা পূভাড্যাং বৃদ্ধাংশাগাতি থান্ জ্বিয়ং ॥ ৬ ॥ ইতি নারদ মনু যাজবন্ধা কাত্যায়ন বৃহস্পতি পুজাপ

জন্ম হেম কুপাংধান্য রসাম্বর । আদ' দাণা

তি বচনানি ॥ १১ ॥

পুশুঃ — অবীরাজ্ঞা পতি স্বর্গার্থে পতির সপিওভিন্ন অন্য ব্যাহ্মণকে স্থাবর দিতে পারে কি না আর কিয়ৎ সংখ্যক দান বিক্রয় করিতে পারে এবং যদি সর্বস্থি দান করিয়া থাকে তাছা সিদ্ধ হয় কি না ॥ - चाला **इ**त्रं

) পতিপুত্ৰ বিহীনান্ত্ৰী **পতিম**ৰ্গাৰ্থ° পতি স**পিশু** ∫ ভিয়েভ্যোপি বিপুনুখোভাঃ স্থাবর° দাতু° শক্রে। তি। সমুদায়ভত্দায়সার্দ্ধ পত্যপকারার্থ^ক দাত্ত বিক্রেতৃথ শকুষাৎ কটুম্বভরণার্থনামভর[্] গার্থখ যাবতা ধনেন নির্বাহোভবেৎ তদুপযুক্তস্থা वर्रविक्यः सर्या ९ यमि अर्द्धविक्यः विना सर्वे 🔻 রক্ষা নস্যান্তদা সর্বস্বং ক্রমেণ বিক্রীণীয়াৎ। যদি পতিদলিওঃ কোপি নস্যান্তদান্মপোষণার্থণ সংস্থা প্যান্যথ সর্ভ্রণ দদ্যাথ।। পত্যৌর্জদেছিক জিয়া দার্থ দর্খ দত্ত তয়া চেত্তদ্পি সিক্ষাত্রীতি তি नुयाः मन्नाजः ॥

খনাপু 🕽 ন্তে ভর্রি সাধী জীবুক্সচর্য্য বুতে ছ ভা। দ্লাতা , ं मानानि ∫ ुर्किप्तिन प्रमा• **चलर्डु न निनाक्षनी॰ ॥ घर्या** চানুদিন° ভক্ত্যা অতিথানাঞ্চ পূজন° ।। বিষ্ণোর। রাবনক্ষৈব ছব্যালিতানুপোষ্ণ°। দানানি বিপু मुर्थारज्या प्रमा**ः शृ**शाविवर्षायाः **উপবাদাः म्ह**ंवि বিধান্ স্বৰ্যাচ্ছাজোদিতান্ শুভে ৷৷ লোকাস্করস্তৃ• ভর্তারমান্ত্রানঞ্চ বরাননে ॥ তার্যত্যুভয়ু৽ নারী নিত্য° ধর্মাপরায়ণা। সাসমুত্ পল্লান্ধনাদর্জতদর্থ স্থাপয়েত্ পৃথক্। মাস্যাগ্মাসিকে শান্ধে ৰাৰিকে চ প্যত্নতঃ ।: সৱত এবাত্মান গোপায়ীত ॥ ৩॥ জটুম্বভরণা **দ্ব্রা° যত্কিঞ্চিদতি** রিচাতে। ত**দে** য়ুমু পহ ডা:নাত্নতদোৰনবাপুয়াত্। ৪ ॥ স**র্দ**° গুত্রভান্তি কটুৰ ভর াধিকং ॥ যদুব্যং তত্ স্বকং

দেয়নদেব° ন্যান্ততোন্যথা।। ৫ ৷৷ স্ব°ষ্ঠটুম্বা বিরো থেন দেয়° দারসুতাদ্তে । নানুয়ে সতি সর্বস্থ* যজাল্যলৈ পুতি জ্বতং ॥ ७॥ নিঃকেপপুএদারাং ▶চসর্স্বলানুয়ে সভী ভিব্যাস বৃহস্পতি গৌতম নারদ কাত্যায়ন যাজ্বল্যু নারদ বচনানি।। এবঞ্চ ভন্তু ভৌদ্ধ দৈহিকক্রিয়াদ্যর্থণ দানাদিক নপ)শুনতং ।। অতএব **নাপছারং জি**য়ঃ **স**র্চা রিত্যাহ। অপহার*চধন স্বাদ্যানুপযোগে ভবতি। অভএব বভুনাশক্তো আধ্যনমপানুমত !! ் তত্রাপ্যুশক্ত্নৌ বিক্রয়ণমপিন্যাযস্যাবিশেষাদিতি कीमुख्यें ह्न लिथनानिह ॥ १२ ॥

গুল্লাল পাল্লীয় মরণানন্তর যদি অনেক কন্যা থাকে এবং মল্লিকট জাতি থাকে তাহার মধ্যে পুথম মৃত ব্যক্তির ধন কে পাবে।।

খংসা⊹্ বিপুঞ্সা দৃতসা ধন° পতা ভাবে দুহিত⊹ বা**পিও** উর॰ - ∫ সমবায়ে পুথমমনূঢা কন্য: পুানুহাৎ। ভদ ভাবে স্ভাবিত পু্তায়ঃ পুএৰ আশ্চ জুল্যোধিক। রস্তরোম্বেক ড: গেটারে এক তরাধিকারস্তায়ার ভা বেপি বন্ধ্যা পুঞ্ছীনবিধবয়োৱাধিকারঃ স্বপুঞ ছারেণ পাইণপিওদানাভাবাদিতি জীমূতবাহন্ মত° ।

নস্পু) যথেবআতথাপুলঃ পুলেণ দুহিতা সমা। ত্যামা যাণানি ∫ অনিতি\$ভ্যাণ কথমতন্যোধনণ হরেত। পাত্যুঈন

হরী গতীতা বিনাদৃহিতা স্তা। অসাদসাথী
সংভবতি পুলবদ্হিতা নৃণা । তস্যাঃ পিতৃধন
ছনাঃ কথ গৃহাতি মানবং ।। ২ ।। সদৃশী সদৃশেনে।
চা বাধী কুলমণে রতা। কৃতাকৃতাবা পুল্সা
পিতৃদ্ধনহরীতু সা।। ৩ ।। পুল্মচ দৃহিতা তোভৌ
তুলা সন্তানকারকৌ । পুলাভাবেতু দৃহিতা তুলা
সন্তানকারকৌ । পুলাভাবেতু দৃহিতা তুলা
সন্তানকারকৌ । পুলাভাবেতু দৃহিতা তুলা
সন্তানকারকৌ । পুলাভাবেতু দৃহিতা তুলা
সন্তানকারকৌ । অপুলুসা ধন পল্লাভাগানি তদ
ভবে দৃহিত্যানি ।। ৫ ।। পল্লা প্লুজনহরী
যাস্যাদবাভিচারিণী। তদ্ভাকেতু দৃহিতা যদ্যন্তা
ভবে ভবা ।। ৬ । ইতি মনু বৃহদ্ধতি নারদ দেবল
বিষ্ণুকাত্যায়ন বচনানি । ৭৩ ।।

পুরুঃ — বন্ধা ও পুরুহীন বিধবা কন্যার পিতৃথনে অধি কার নাহি কহিয়াছেন কিন্তু যদি পিতৃথন গুহুণ করিয়াপশ্চাৎ পুত্র না জন্মাইয়াসেই কন্যা ইরে তবে ঐ পিতৃ সজান্তধন অন্য ভগিনীয়া পাইবে কি তাহার পতি পাইবে ॥

অস্যো ্ **ভ**র• । কন্য, জাতাধিকার পিশ্চাৎ পরিনীতঃ সতী অবি
স্থানানপুরা যদি মিুহেত তদা তৎপিতৃদায়ে দল্গ।
বিত পুরায়ঃ পুরবত্যশে ভগিন্যাস্থল্যাহিকার
স্থানেক তরাতাবে একতরাধিকারস্থায়ে বিলাম পিতৃদায়ে দানান্দিকারঃ নতু তভ্তু রধি
কার ইতি জীনু চবাং নাদীনং মতং ।।

শন্য । পুভারাঃ পুত্রিকায়ান্ত নভতা দুবামইতি ।। ১॥
পুমাণে । পুভারাঃ পুত্রিকায়ান্ত নভতা দুবামইতি। অপুত্রা

য়াঃ মৃতায়াঃ বা শ্বাগুগুছে তদন্যয়েতি শহুলি उ

থিত পৈঠান্সি বচনে ॥ १৪॥

পুনঃ — কন্যারদিগের অভাবে মৃত অপুত্রের ধন কে পাইবে ॥

জন্যা) অপুত্ৰি স্তমা স্বদুহিত্তভাবে দৌহিলাঃ ধন । ভর॰) মাণুমুরিতি বিদাণ সন্মত ।।

শাণালি ঠিবে তাঁত সুতো পাষ্টে মাত্যাতামহে ধনে। ১৯ দৌলি ক্রেছিলেছ থিলং অক্থমপুরুলা পি তুইরেত্। দ এব দদ্যাত ছৌ পিন্তৌ পিরে মাত্যাতামহে ধনে। ১৯ দেটিলেছে ছিল্লয়োলোকে বিশেবোনোপ পদ্যতে দৌছিলোপি ছম্লেনং সন্তার্যতি পৌনত ॥ পৌরদৌছিলয়োলোকে বিশেবোনাতি ধনতঃ। পৌরদৌছিলয়োলোকে বিশেবোনাতি ধনতঃ। পৌরদৌছিলয়োলোকে বিশেবোনাতি ধনতঃ। তয়োহিমাতাপিতরৌ সন্তুতো তস্য দেহতঃ। ২। অপুরপৌর সংসারে দোহিল্লাখনমাপুমুঃ। পূর্বে বাল্ল অধাকারে পৌলা দৌহিল্লকাঃ সনাঃ। ৩। ইতি বৃহক্ষতি মনুবিফু ব্যনানি। ৭৫।

ু অসাপু } তদভাবে দৌহিত্রগামি তদভাবে পিতৃ**সামি ॥ ।** 🖔 मार्गान 🕽 लिडाइरब म्यूधमा अक्ष॰ ज़ुाछत वरे वा॥ २। ুত্ল্যাদুহিতরোবাপি ধ্রমানঃ পিতাপি বা॥ ৩। বিভক্তে সংস্থিতে দুবাং পুঞাভাবে পিতা হরেৎ ৷ 6 II পত্নী দৃহিতর**ৈচ**ব পিতরৌ ভ্রাতরস্তথেতি বিষ্ণু বৃহস্পতি পৈঠীনৰি কাত্যায়ন যাজ্ঞবহ্য वहनानि ॥ ७१ ॥ ক্রাঃ ---- পিতার অভাবে মাতা আর জ্বাতা যদি **উভর বিদা** মান থাকে তবে কে পাইবে।। জালা) গুলসাপুলসা ধনং পিত্ৰভাৱে সুক্তৃ ভুত্তিমা বা ছর') যে পুথন নাতা পুাপুয়াদিতি বিদা সমত ।। আলাপু) তদভাবে পিতৃগানি ভদভাবে মাতৃ গানি॥ ১ং জাগানি ∫ অনপ্তাসা প্এসা মাতা দায়মবাপু,য়াং।। ২। ভাষ্যাপুণবিধীনসা ভনয়সা মৃতবা চা মাতা अक्षरहा (का मा जाना का नुका मा। ।। है जि বিষ্ণু মনু বৃহস্পতিবচনানি ॥ ११॥ পুশঃ --- মাতার অভাবে অপুঞ মৃত ব্যক্তির ধন কে भाइरव । ্জস্যো) অপুজন্য মৃত্সা ধনং মাত্রভাবে ভাতেরো গৃহনী **ভরণ ∫ যুরিতি বিদাণ সম্মত**ং। ্বিদভাবে মাতৃগামি তদভাবে ভ্ৰাতৃগামি। ১।

্রুমাণে 🕽 পত্নী দুহিতদৈত পিতরৌ ভ্রাতরস্তথেতি বিষ্ণু

यां छन्नु। वहरन । १४ ।

11 माञ्चमङ्कतन्त्रकत् ॥

पूनः - — य लान मरशमत ও अत्मापत छेण्य जाणा विमा गान थारक त्म शानम् च अशूल जाणात धन चत्तु कि शाहेरव ।

আসো । যত্র সোদরাসে নেরৌ বিদ্যমানো স্যাতাং তত্র মৃত তরং । স্যাপুঞ্জস্য সোদরস্য ধনং সোদরং প্রাপুরাভদভা বে বৈমাত্রেয়ঃ ভ্রাতা গৃহ্জীয়াদিতি বিদাং মৃতং। অস্য । ততোদায়মপুল্স্য বিভজেরন সংহাদর। ইতি পুলানং । সালু লিখিত বচনং।

> নুব্যক্ত মুক্ত মৃতি সংগুছে। সোদর্যাঃ সন্তানে। দয্য ভাতরোদ্বিবিধা যদি। বিদ্যানেপ্যনে।
> দর্যো শিন্দ্রীধিনভাগিন ইতি। ৭৯।

- . পুনঃ বিভক্তধনে এব্যবস্থা কহিয়াছেন যদি অবিভক্ত স্থ। বর থাকে তবে এই রীতিক্রমে ব্যবস্থ। ইনে কি উভয় ভ্রাভাই পাইবে।
 - আসো। মৃতস্যাপ্রসা ভাত্তিতিতজ্যাবর গোদরভাত।
 ভার স্থাপুরাথ। অবিভক্তরা রস্ত বোদযায়সোদ্ধৌ
 ভাত্তের সমণ বিভক্তা গৃহ্যীরাতামিভি স্তাং
 সম্মতং।
 - জস্যপু) অবিভক্ত স্থাবরং যৎ সংঘ্রিধানের তভ্তবেত্। বি'
 মানে) ভক্তস্থাবরং পুাছং নান্যোদ্ধৈয়ঃ কথনঞ্চ। ১।
 একোদরে জীবতিতু সাগল্লোন লভেদনং। স্থা
 বরেণোবনের স্যাভদভাবে লভেত বৈ ইতিয়ম
 ব্যুম্পতি বচনে।৮০।

পৃশ্লঃ — ভাতারদিগের অভাবে ধন কে পাবে ।।

অস্যা) ভাতৃণামভাবে ভাতৃপুঞা গৃহ্লীযুর্ত্তাপি পূথমণ
ভর॰) সোদরভাতৃপুঞাস্তদভাবে বৈমাত্রেয় ভাতৃপুঞা

ইতি বিদাণ মতং ।।

আসা) পত্নী দুহিতরদৈচৰ পিতরৌ ত্রাতরস্তথা। তৎ সুত্ত পুমাণে) ইত্যাদি ॥১॥ তদভাবে ভ্রাতৃগামি তদভাবে ভ্রাতৃপূপ্র গামীতি যাজবন্ধাবিষ্ণু বচনে॥ ৮১॥ পুশ্রঃ— ভ্রাতৃ পুথের পরে কার অধিকার হইবে তাহার জন কি॥

আন্যা) ভাতপ্রাভাবে ভাত্পৌত্রাণামধ্বিকারঃ : ভাত্ জরু

পৌলাভাবে পিতৃদৌহিত্রাধিকারঃ : তদভাবে ।

থ্য পোদরাভগিনী পুল স্যাধিকারঃ । তদভাবে ।

বৈমাত্রেযভগিনী পুল স্যাধিকারঃ । তদভাবে ।

পিতামহস্যা ধিকার ইতি বিদাং সন্মতং ।

অসা । তৎসুতো গোত্রজোবন্ধুরিত্যাদিযাপ্তরেল্যুব্চন-।
পুমানণ । স্বদৌহিত্রবং পিত্রাদিদৌহিত্রস্যাপি তন্ডোগ্যপি
গুদানে সন্তারকভাং । অতএব মনুনা প্থপ
শীবামধিকারোন দর্শিতঃ । হয়ানামিত্যনন্তরঃ
স্পিগুদ্য ইতি বচনদ্বয়েনৈ বসংগৃহীতভাদিতি
জীমৃতবাহনলিখিন্ধ ॥৮২॥

পুনঃ — পিতামহের অভাবে অপুএ ধনে কার অধিকার হইবে ।। অস্যো বিষ্ণা পিত্ৰভাবে মাতুত্তথা পিতামহাভাবে পিতা 🔰 মহান্তদ্ধনে ইধিকারঃ স্যাদিতি বিদাণ মত॰ ॥ व्यगालु । मांचर्गाला ह त्वामा शिलू मींच। हरतकन ।) ॥ মাণে ∫ স্বেন ভত্ত । সহ শুকি নাতা চুহ্তে স্বধানয় । 🚎 পিতামহী চ স্কেদৈৰ স্বেদৈব পুপিতামহী । ২ ॥ इंजि मन् देवधायन यहान ॥५०॥ পুশু: --- পিতাসহীর পর কে অধিকারী হইবে !৷ অব্যো) পিতা মহভাবেপিত্বাঃ পিতৃব্য পুঞ্গেতি গুংগী 🕽 ত্রাশ্চাধিকারিণ স্তত্রাপি পূম্ববৎ পিতৃসংহাদরবৈ 🛶 মাত্রেয়স সৃষ্টাস পৃষ্টক্রমোবোদ্ধবাঃ। তদভাবে পিতামহদৌহিত্রাস্তদভাবে পুপিতামহঃ ৷ ততঃ পুপিতামহীচ। তদভাবে পুপিতামহপুঞ্পৌত্র পুপৌরাঃ ক্রেণ ধনভাজঃ ততঃ পুণিতামই দৌহিত্রাস্ততো মাতামহঃ ওদভাবে 🔻 ুলত্তৎ পুত্রপৌত্রাঃ ক্রমেণাধিকারিণঃ সাুঃ ৷ ততামাতা महामोहिबाँ । उपनद्धतः शुगाजामहरउ९शूव পৌত্র পুপৌত্রাঃ তদনস্তর পুনাতানহদৌহিত্রাঃ স্যস্ততো বৃদ্ধপুমাতামহন্তৎ পুঞ্পৌত্রপুপৌত্রাদৌ হিত্রাশ্চ ক্রমেণাধিকারিণঃ ॥ ততঃ পুণৌত্রসা পুর্ণৌত্রপুণৌ্রা ধনিনোম্তস্যাধ্তনসহল্যাঃ ক্রমেণানিকারিগঃ। তদভাবে বৃদ্ধপুপিতামহৃস্য পুত্ৰপৌত্ৰপুপৌত্ৰদৌহিত্ৰাঃ ক্ৰমেণোৰ্ক্তনসঙ্গল্যাঃ সমালোদকাশ্যাধিকারিণ স্তেতু বৃদ্ধপুপিতামই সাপিতা পিতানহাদিপুপাদয়ং ৰগোৱে জন্ম

ৰামোঃ স্তিপযাস্তাণোত্ৰজা আনস্থাক্ৰমণে ধনভাজ ইতি জীমূতবান মত° ।।

অসাপু ৄ মৃতোন পত্যোভার্যশেদভাত্পিত্যাত্কঃ । সর্বে मानामि ∫ प्राथिखकाष्ठ्रः विভक्तित् यथाः भेजः ॥ वस्ता ভাতয়ে। যত্ত্ৰ সম্পল্যা বাহ্মবাস্তর্থা। যেহোসমূত্র ষেষা পোনপত্যধন হরে ।। >।। ভাষা গান্দক কাৰ্য্য ত্ৰিযু পিঞ্চঃ পুৰৰ্ত্ততে। চতুৰ্থঃ স পুনতিভ্যাণ পঞ্চ মোনোপপদ্যতে ॥ অনস্তরঃ সভিভাদ্য खना जना धन° छत्दर। याजाबा ° महलाः गाम्। চাৰ্য্যঃ শিষ্য এৰচেতি বৃহস্পতি মনুৰচনানি।। পিত্রাদিপিওত্রয়েষু সপিওনেন ভিজ্তিবাৎপুর্গাদি ভিশ্চ ত্রিভিত্তৎপিশুসৈয়ৰ দানাৎ যশ্চ জীবন্যৎ পিওদাতাৰ মৃতঃ ৰন্ ৰপিওনাৰৎ পিওভোকা। এবঞ্চ সতিমধাস্থিতঃ পুৰুষঃ পুৰেষাণ্জীবন্ পিও দাতা সমৃতত্ত২ পিওভোক্তাচ পরেষাণ জীবতাণ পিওসংপুদানভূতআসীৎ । মৃটত=চ তৈঃ সহ पोक्बिंगिएमञ्**थिल्डाका । अ**रकारमयामञ् পিগুদাতা যেবা ড০ পিগুদাতারস্তে ইবিভক্তি ওৰপ॰দায়মশুন্তীত্যবিভক্তদায়।দাঃ সণিগুাঃ। পঞ্মস্ত পূৰ্ব সম্বামঃ পঞ্চোন পিণ্ডদাত। । নচতৎ পিগুতোকা। এবমধন্তনোপি পঞ্মান মধ্যমসা পিওদাতা নাপি তংগিওড়োক্তা। এতে ন ৰুদ্ধ পুলিতানহাত্ পুভূতয়ঃ পূর্ব পুক্ষাঃ পুতি নপুঃ পুভৃত্যধন্তনান্তন, ,পুৰুষা এক পিণ্ডভোভৃত্বা

ভাবাৎ বিভক্তদায়াদাঃ সঙ্গল্য। ইত্যাচক্ষ্যতে
ইদপ্ত স্পিত্ত্বং সঙ্গল্য ব্যু দায়পুহণার্থে মৃত্ত্ব
মিতি জীমূতবাহন লিখনানিচ।।
পূপিতামহঃপিতামহঃপিতাম্বরংসোদর্যা ভাতর
সবর্ণায়াঃপুরংগৌরঃপুপৌরএতানবিভক্তদায়াদ স্পিণ্ডানাচক্ষ্যতে।। বিভক্তদায়দান সঙ্গল্যানাই ক্তে। স্পিণ্ডাতাবে সঙ্গল্য ইতি বৌধায়নীয়্প।
তথা । যেন ভাত্ত্বি সহশাদ্ধ মাতাভুত্তে হ ধাময়ং । পিতামহীচ স্বেনিব স্বেনৈব পুপিত্ত

নৃতদেয়মাতামহাদি পিওত্রন্য মাতলাদিভি
দীরিমানআৎ। মাতলাদার্থবিং ধন্য ধন্দারেও
তস্যাপি পিওদাত্আৎ ধনাজ্রন্যহি পুরোজন
ছয়ও। ভোগার্থ দানাদাদৃষ্টার্থপ্য তর্জ্জেন্স তু
নৃত্রাজনে চোগালাভাবেনাদ্ষ্টার্প্র ব্যুক্তং।
অতএব বৃহস্পতিঃ। সমূৎ লাজন দর্মণ ভদর্থে
ছাপয়েৎ পৃথক্। নাস্বালাসিকে শ্রুছে বাধিকৈ
চ প্যক্রতঃ।

তথাপস্তমঃ॥ অস্তেবাদা বার্থান্ তদর্থেষু ধর্ম কৃত্যেষু পুয়োজয়েৎ দুহিভাবা।।

নাসিকাদিনা তজোগার্থ ।। ধর্মক্ত্যেদ্তাদৃষ্টার্থ তে হেতঃ ।। অতএব দত্তভুক্তফল প্রনিতিমর ভি । তমার্ভোগাপিগুদাতুরভাবে তদেয় পিওঃ

দাতৃষ্মান্তলাদের ধিকারোন্যায্য এবেতি দায় ভাগলিথনানি চ ৷ কিন্তুদকবৎ ত্রিভাঃ পিণ্ড দান° চত্তৰ্গে ইমস্তনঃ পিগুদাতা পঞ্মস্ত পূৰ্বত নোন সংপ্রাদানং। মাপ্যখন্তনঃ পঞ্চনঃ পিওদ। তেত্যভিধায়ানস্তর্যামভিদ্ধানোমনুঃ পুদাতৃতা তিশয়েলৈবানস্তর্য্য ভ্রাপয়তি ॥ তক্ষান্যো যত্ত হলে হপালাই তদ্মোত্রোপি স্বদৌহিত্রপিতৃ मोहिबामिः घाउ०मः लाष्ट्राया गाउनामि র্ধনিনো মৃত্স্য নাত্সলগত্যেপুক্ষিক পিওদাতৃ তয়া একশিগুসমধ্বেন স্পিওস্নাূ ত্সাপাধি কারার্থ° ত্রয়াণানিতি বচন°। আনস্তর্যোণ চ चिटमञ्जालं व्यनस्त है कि वहन वनिया । किन मृत्राचीता मृत्रामय शिख्यमियशशिख्योदः शिक् দৌহিত্রাদেরভাবে মৃতদেয়মাতামহাদিপিওদা कृता॰ माज्ञामीनामान खर्गकरमभा विकास बरमा বেবিবাঃ ৷ এতত্পৰ্যান্ত ভাবে সমল্যঃ ৷ সম্ ল্যোবিভক্তপিওঃ পুতিপুণগৃতঃ পুভৃতিপুৰুষ্ত্যু মধ্তনঃ । বৃদ্ধপ্পিতামহস্ততিশা তলাপি পুতিপুণগ্রাদেরানন্তর্গ্যপিওলেপদ্বারেণ ভেষালুপ কারকরাভদভাবে বৃদ্ধপুপিতামহ সন্ততিঃ। মৃতদেহপিওলেপতোগিভাগ বৃদ্ধপুপিতামহাদি ভাঃ শিওদাবৃহাত্। এবং বিধসদলাভাবে সমানোদকাঃ বহল্যপদেনোপাভামন্তরে,তিচ। প্সশৌচাদ্যথন্ত পিওলেপভুজামপি ভদভপিও

লেপভোক্ত স্থেন সপিগুত্ব' ।। মার্কপ্রেরপ্রাণে
নিদিষ্ট ।। যথা ।। পিগুলেপভুজাশ্চান্যে পিতা
মহপিতানহাত্। পূভ্তুকা জয়স্তেয়া থাজনানশ্চ
সথমঃ।ইত্যেব' মুনিভিংপ্রোক্তঃ সম্বর্ধঃ সাগুণৌ ক্ষণা। অশৌচকর ইত্যর্থঃ। অতএব মনুনাপ্যক্তম শৌচপুকরণে। সপিগুভাতু পুরুষে সপ্তমে নিন্ন বর্ততে। সমানোদকভাবস্ত জন্মনায়োরবেদনে।
অন্যথা অয়াণামিত্যনেন বিরোধঃ স্যাদিতি জানু
তবাহন লিখনানি চেতি।। ৮৪।।

পুশৃঃ — প্রিভাম**হী পুশি**তামহীর যে পুকার ধনাধিকার কিহ**ই**য়া**ছেন ডছত্ আর অন্য স্পিওজ্ঞী**রদিগের অধিকার **হইবে কি** ন**া**।

আসো । পিতানহাঃ পুপিতানহাশ্চ দায়গৃহণ বিশেষ
ভার

বচনাদেব লভাতে তল্পনাসপিওবাহিতা নত

বতীতি বিদাশেশভং॥

ি অসঃপু_) নাহঁতি জীতানুর্ভৌ বৌধায়নঃ।।ন দায়° নিরি ় মাণ° - ∫ জিয়া হৃদায়াশ জিপোমত।ইতি ।।৮৫ ।।

পুশঃ — সমানোদকপর্যাস্তাভাবে কাহার পুথম অধিকার
হইবে ৷৷

জন্যে।) সমানোদকপর্যস্তাভাবে পুথমনাচর্যসাধিকারঃ
ভর• । সাভতঃ সহবেদাথায়িস্বুদ্দচারিণঃ শৈষ্যসোভি
ক্রিমূতবাহনমত ।।

আসা

আচার্যাঃ শিষ্য এববেতি সনু বচনা। আচার্যা।
পুনাণ

ভাবে ইন্তেবাসীত্যাপস্তম্বচনঞ্চ। শিষ্যঃ স্বুজ্জ
চারিণ ইতি যাজ্ঞবন্ধ্য বচনঞ্চ। ৮৬।।
পুনাঃ
শিষ্যপর্যান্তাভাবে ধন কে পাইবে।।
আস্যা

ভারণ

ত্বাং নগোত্রজাঃ তদভাবে তথা বিধাঃ সমান
পুবরাশ্চেতি বিদাণ মত।।
আসাপ্
শিশুগোত্রর্য সম্বন্ধা ঋকথ্ণ হরেরু রিতি গৌত
মাণ

শিষ্ণগোত্রর্য সম্বন্ধা ঋকথ্ণ হরেরু রিতি গৌত
মাণ

শিষ্ণা। ৮৭।।
পুনাঃ

যদিসমান পুবর ও নাথাকে তবেধন কেপাইবে।।
অস্যা
উক্ত পর্যান্তাভবে তদ্ গ্রামন্থা ত্রাবদ্যাদিশুণ
অস্যা
ভারণ

ব্রুজ্ঞাঃ ব্রান্ধণা অধিকারিণঃ স্থারিতি বিদুষাণ
সম্মতণ।।

খনা । সর্বেষা নপা ভাবে ভুবান্ধণা ধন হারিণঃ । তৈবি
পুনাণ । দ্যাঃ শুচ্বোদাস্তাত্তথা ধর্মোন হীয়ত ইতি নন্
বচন । শ্যোত্তিয়া ব্যান্ধণ স্যান্ধত্যস্য ধ্বক্থ ।
ভক্তের্মিতিগৌতনীয়ধ্য । ৮৮ ॥

পুশ্ব: --- যদি তদ্পুামন্থবেদত্রয়াধায়ন বিশিষ্ট ব্রাহ্মণ না থাকে তবে কে পাবে ৷৷

শংলা) এতেষামভাবে ব্রাহ্মণ ধনবজ্ঞরন্যত্সর্ধনণরাজ।
 গুলুরাত্ ব্রাহ্মণস্ত ধনণ গুলবদ্ ব্রাহ্মণ পর্যন্ত।
 ভাবে গুলাছরয়ঃ ব্রহ্মণ এব গৃহ্নিয়নত রাজে
 বিদাণ সম্মতণ।।

আসা) আহার্যাণ ব্রাক্ষণ দুবাণ রাজ্ঞা নিতামিতি স্থিতিঃ।
পুনাণ) ইতরেষাস্ত বর্ণানাণ সর্বাভাবে হরের্ণ ইতি ননু
বচনণ।।

বুক্তিগার্থস্য তল্পাশে দায়দশ্চের কশ্চন। বুক্তিগা বৈব দাতব্যমেনস্বী স্যা মৃপোন্যথেতি নারদ বচনঞ্চ ।। ৮৯ ।।

পুনঃ — অপুত্রধনাধিকার পুকরণে যে সকল উত্রাধিক।
রি কহিলেম তাহারা গৃহস্থ ব্যক্তির ধনের অধি
কারী উদাসীনের ধনে অধাত্ বানপুস্থ ও যতি
ূ্আার বুক্ষচারী ইহারদিগের ধনে কাহারঅধিকার
ক্ইবে ॥

অন্যা) বানপুত্স্য ধনং ধ্যাভ্যতা পৃহীয় চেবাচেক ভালং ∫ গুরোঃ শিব্যঃ। যতেইন ভু সাজি যায়তিরের পৃহী য়াত। নৈতিক্রুজচারিণো ধনমাচাষ্যঃ পুগুপুরাজ্য উপজ্বীণ্রুজচারিণো ধনং তত্পিতাম্যাঃপু্রুগু এতদভাবে একত্র বাসী একাশুণীবা পৃহীয়াদিতি সভাং সঞ্জং ।

আসাপু বানপুত্যতি বুজচারিণাণ ধনহারিণঃ। জ্রামেণা
নাণানি চাধ্যসভিষ্য ধর্মজুত্তেক তীথিন ইতি যাজ্ঞবল্পী
য়ণ জ্রামেণ পুতি লো নেনেতাথঃ। উপাস্থাণসাত্তধ
নণ পিত্রাদিভিরেব গুলিং তসা পাঠাথনৈবাচায়।
নিকটগততয়া ভাদ্শবিরহাদিভিদায়ভাগলিধ
নথ্য । ২০ 11

।। অথব্যবস্থান্তর ।।

পুশু: — মিতাক্ষরা মতে অপুএধনাধিকারির ক্রম কি পুকার ৷৷

অসে ভরণ ্ পুঞ্জীভ্রাণামভাবে বিভক্তস্যাসংস্থিনোমৃতস্য ʃ ধনে পুথম॰ পড়্ব্যধিকারিণী তদনন্তরমনূচা কন্যা ততোবিবাহিত। নিধননিরপত্যা তদভাবে ইন্য দুহিতাচ ৷ দুহিত্রভাবে দৌহিত্রা স্ততো মাত। ততঃ পিতা। তদত্তে সহোদরাঃ ভাতরঃ তদভাবে সাপ ভাশ্চ। ততঃ সোদরভাতপুত্রাস্ততো বৈমাত্রেয় ভুাতৃ পুঞাঃ। ততঃ পর পাতামহী ততঃপিতামহ পিতামহপুরাঃ পিতামহপৌরাশ্চ ক্রমেণ ধনভা জঃ। ডতঃ পুপিতামহী পুপিতামহস্তন্য পুঞা পৌরাশ্চ ক্রমেণ। একসুপরি সপ্তমপৃক্ষপর্যান্ত ক্রমোবোদ্ধব্যঃ । তদনস্তর তদুপরি সপ্তম পুক্ষ পর্যান্ত পুর্বরীতিক্রমেণাধিকারিণো বো দ্ধব্যা এতৎ দপিগুসমানোদক পৰ্য্যস্তাভাবেপিত্য सर्दोहिबाः गांठासर्दोहिबाः सांज्**स** शृथा*6 জ্ঞমেণ ধনভালঃ। তদভাবে পুপিতামহদৌহি তাঃ পিত্তমাতামহদৌহিতাঃ পিত্তমাতাল পুঞা ক জ্মেণ। তদভাবে পুমাতামহদৌহিতাঃ মাত্র मीजागहफोक्बाः माजुन्माजुनशुबाक करमगाधि কারিণঃস্যুত্তদভাবেআচার্য্য শিষ্যাদীনামধিকার শ্চেতি সিতাক্ষরামত°।।

) পুঞাঃ পৌভাশ্চ দায়[°] গৃহ্নন্তি তদভাবে পত্না**দর** পুনাৰ° ∫ ইত্যুক্তমৈতি মিতাকরা লিখন°া তথা তহ্মাদ পূজনা স্বৰ্ধাতদা বিভক্তনাদি পৃষ্টি নঃ গরিণীতা জ্রীসংযতা সকলমেব ধনং গৃহুণ ্তীতি স্থিত° ! তদভাবে দুহিতরঃ তল্প চোচা মূল সমৰায়ে ইনুটেৰ গৃহুলতি ।। তথা পুতিহিতা প্তিষ্ঠিত৷ সনবায়ে পুথম মণুতি ষ্ঠিত:নাং ছী ধন॰ দুহিত্যাম পুতিটিতানাঞ্চেত গৌতমস্মর গাৰ । চশক দুহিত্তাৰে দৌছিলোধনভাক্। ভদভাবে পিতরৌ মাতাপিতরৌ ধনভাজৌ। যদ্যীপ যুগপদ্ধিকরণ বচনতহ। ছন্দশুবণাৎ ॥ তদপ্ৰাদক ভাদেক-শেষতা ানগুছণে পিত্ৰোঃ জ মোন পতীয়তে। তথা পি বিগুহবাক্যে মাতৃ শক্ষ্য পূৰ্বনিপাতাদেকশেষ্ডাৰ পকে চনাতা পিতরীবিতি মাতৃশব্দন্য গৃহ ্বণাৎ পাঠক্রমা দেবার্থ জ্বমাবগমান্ধন- সন্ধোলি জ্বমাপেকায়া° পুতীবজনানুরোধেনৈর পুথম॰ মাতা ধনভাক্।। তদভাবে পিতেতি গন্যতে ৷৷ পিত্ৰভাবে ভুাত রোধনভাজঃ ॥ তথা ভাুত্রপি সোদরাঃ পুথমং গৃহ্নীযুর্ভিল্লোদরাণা॰ মাতৃবি পুক্ষীৎ এ সোদরা ণামভাবে ভিলোদর।ধনভাজঃ । ভুাতৃণামপ্য ভাবে ভুাতৃ পূলাঃ পিতৃক্রমেণ ধনভাজঃ ৷ তথা ভ্ৰুচ পিতৃসম্ভানাভাবে পিতামহী গিতামহঃ পিত্ব্যান্তৎ পুলাশ্চ ক্রেণ ধনভাজঃ। পিত

মহসস্তানাভাবে পুপিতামহী পুপিতামহতৎ তত্সুনবশ্চেত্যেবমাস্থমাৎ স্মান্গো আণা° সপিণ্ডানা° ধন্গুহ্ণ° বেদিতব্য' ৷ তেযাম ভাবে নমানোদকানাং ধনসম্বন্ধঃ তেচ সপিগুানা মুপরিসপ্ত বেদিতব্যাঃ জন্মনামজ্ঞানাবধিকাবা। যথাহ বৃহন্মনুঃ। সপিঙতাতু পু*ষ*্য সপ্থে বিনি বৰ্ত্তোসমানোদক ভাবস্তুনিবত্তে তা চত্তদ গাত্। জনায়োঃস্তেরেকে তত্পরংগোত্র্চাত ইতি গোত্রজাভাবে বন্ধবোধনভাজঃ। বন্ধবশ্চ ত্রিব ধা আত্রবন্ধরঃ পিতৃবন্ধরে। মাতৃবন্ধরংশচতি ।। যচোক্ত° ৷৷ আলুপিতৃঘুসুঃ পুলাঃ আলুমাতৃযুসুঃ সুতাঃ ।। আত্মনাতুলপুঞাশ্চ বিজ্ঞেয়াশ্চাত্মবান্ধ বাঃ ৷৷ পিতৃঃ পিত্যুদুঃ পুলাঃ বিতৃষ্যাতু্ঘুদুঃ সুতাঃ। পিতৃশাত্তলপুলাশ্চ বিজেয়া পিতৃবান্ধ বাঃ ॥ মাতৃঃ পিতৃষ্যুঃ পুঞা মাতৃশাতৃষ্যুঃ সৃতাঃ ।﴿ মাভৰ্মান্তল পুঞাশ্চ বিজ্যোমাতৃবান্ধবাইতি ॥ ভত্রভাত্র প্রনন, মবন্ধারে। ধনভালঃ 🌓 তদভাবে পিতৃবন্ধবস্তদভাবে শিষ্যঃ ইত্যাদি মি তাক্ষরা লিখনঞ্চ ৷৷ ১১ ৷৷

পুশু: — অবিভক্ত অথবা সংসৃষ্টি কোন অপুত্রক বাজি মদি মরে তাহার দংসৃষ্ট ভ্রাতাআর পাল্লী থাকে সে স্থানে মিডাক্ষরা মতে ঐ মৃতব্যজির ধন কে পাইবে ।। আসোঁ) অপুত্রবাবিভক্তমা সংস্থিকোন্তনা ধনং সংস্থ ভরং । জুত্থজীননবাহে সোদরসংস্থভাতা পৃহীয়াদি তিমিভাকরা মতং ।।

অসা) সংস্**টিনস্থ সংস্**ঠী সোদস্য ভুসোদরঃ 1 দদাাচা। পুনাণং } গহরেক**শ'** জাতি<mark>না চুম্তনা চেতি যা</mark>জ্বলা বচনং ॥

পূ‡্র - — যদি অসোদর ভুগো সংস্ট থাকে আর সহোদর পৃথক থাকে তবে কি পুকার অংশ হইবে ।।

জন্যে। ব্রামহোদরঃ কংস্টঃ সোদর কা কংস্টস্তর সংস্ট ভর॰ বিভারা বিভারা প্রায়াতামি ভি মিতাকার। মতং ॥

জন্য } আনোদ্যান্ত সংস্থী নান্যোদ্যোধনং হয়েত্। পূলানং } জসংস্থাপি চাদদ্যাৎ সংস্থোনান্যমাত্জ ইজি যাজ্যবন্ধ্যা বচনং ॥ ২৩॥

পুশাঃ — জ্ঞাবন কয় পুকার হয় এবং তাহার স্বরণ কি ।।
জ্ঞাব্যা) জ্ঞাবনং দ্বিবিধংযোতৃকমযোতৃকঞ্চ যৌতৃকদেক
জ্ঞাব্য পুকারমভিহিতংশুনিভিরযৌতুকস্ক বিবিধংপরি
কীন্তি তং তত্তোভয়োঃষট্সংখ্যকানি ষড়ধিকানিচ
পুমাণানি দৃষ্টানি ন তু ন্যুনানীতি বিদাং মতং 11

জ্মাপু । অধ্যশ্ৰসাবাহনিক দভঞ্জ প্ৰীতিকৰ্মনি। ভ্ৰাভ্ াণানি । মাতৃপিতৃপুাগু ষড়িধ ভীধন স্ত ।। ১।। অধ্য গ্ৰাথাবাহনিক ভত্ দায়স্ত বৈৰচ। ভ্ৰাতৃদত্ত পিতৃ ভ্যাঞ্চ ষড়িবং জীবনং শৃতং ॥ ২ ॥ পিতৃমাতৃপতি ভ্যাতৃদত্তনধ্যশ্পুপাগতং । আধিবেদনিকাদ্যঞ্জী ধনং পরিকীর্ত্তিং ॥ ৩ ॥ পিতৃমাতৃদ্বভূয়ভূদত মধ্যশ্পাগতং । আধিবেদনিকং বন্ধু দতং শুলু নদাধেরকমিতি জীবনং ॥ ৪ ॥ বৃত্তিরাভরণং শুলুং লাভশ্চ জীবনং ভবেছ । ভোকুী তৎ মর্মেবেদং পতির্রার্হত্যনাপদীতি মনু নারদ যাজ্বত্বী বিষ্ণুদেবল বচনানি ॥ ৯৪ ॥

পুশঃ — যাতুক ধনের চিহ্নকি অর্থাৎ কোন ধন কে যৌ তুক ধন বলাজায়॥

অস্যো) বৃদ্ধিশাদ্ধ সমারভা যাবজ্জু ভিবাদন । তল্পা । ভ্রং) লভাতে যতু জ্ঞিয়া তদ্যৌভক পদ ।। তদেবাধা শুক্তপদেন মুনিভিফ্জমিতি স্তাং স্থাত ।।

জন্য) বিবাহকালে যৎস্ত্রীভোগ দীয়তে হুগ্নসন্থি ।
পুনাণে) তদপ্রাশ্নকৃত সভিঃ জীপনং পরিকীভিতি ।। ১ ।।
বিবাহকালে যত্কিঞ্জিৎ বরায়োদিশ্য দীয়তে
কন্যকায়াশ্চ তত্সর্মবিভাজান্ত বল্লুভিরিতি
কাতায়নব্যাসবচনে ।। ৯৫ ।।

পুড়ঃ — অধ্যাবাহনিকপুড়তি অযৌত্তক ধন অনেক পুকা রকহিয়াছেন সংপুতি তাহার দিগের পুত্যেকের অরুণ কি ইছা সপুমাণে কহিবেন ইতি॥ আন্যো) ভতুর্গৃহ নীয়মানা সতী পিত্তপ্ত বদ্যদূর্য । বর্ণ জিয় । বিদ্যাণ সন্মত ।।

মিতি বিদ্যাণ সন্মত ।।

জনাপু) যৎ পুনর্লভতে নারী নীয়মানা িত্যুলিং । মাণ) অধ্যাবাহনিকং নাম জীধনং তদুদাহতনিতি কাত্যায়নীয়ং॥ ১১॥

উত্তরঞ্চ পাদবন্দনকালে শ্বশুরাদিভিত্ত ইয়া প্রিটয় যদীয়তে ততপুাতি দক্ত জীবনমিতি সতাং সন্মতং ॥

' উত্তরণ্ড থিতীয়ন্ত্রীবিবাহাথী পূর্ব স্ত্রিটের যৎপালিতোমি কণদীয়তে ভদাধিবেদনিক স্ত্রীধন্দি পণ্ডি ভানা সন্মতঃ

, অসাপু বিশ্ব জি হৈ দেয়নাধিবেদনিক সমণ। নদ সাণ বিশ্ব জিলা বাসাংদত্তে জ্বর্দ পুতলুয়েদিতি যাজ্ঞ বহুয়ায়ং॥ ৯৮॥

উত্তরঞ্ বিবাহাত্পূর্ব বিবাহসময়ে পরতোবা পিতৃভ্যাণ ভূাতৃতঃ মাতুলাদিতোবা ভতৃণ্হাদা ভূষণার্থণ ব্যয়ার্থণ স্তিয়া যদ্ধনণ লভতে তত্সৌদায়িকণ শ্রী ধনমিতি বিদাণ সম্মতং য়

অসা । উচয়া কন্যয়া বাণি পত্যুঃ পিতৃগৃহে ইপিবা। পুনাণে ত্রুতুঃ সক্ষণাত্ পিত্রোর্বা লব্ধ সৌদায়িকণ

শ্তং ॥ ১ ॥ যত্কন্তা বিবাহে চ বিবাহাত্ পালত বত্। পিতৃ ভভূগৃহ পুলিং ধনং সোদায়ি কং শৃত্যিতি ক'আয়ন ব্যাস বচনে॥ ২৯॥

উত্তরঞ্জ হারদ্র গুলাবেখা দিনিশা ণিশিলক শিণাণ প্রিয়াত ভত্ত্ কর্মকরণার্থ ভত্ত্বিদিপুরণাত্ত দুবা যামিনঃ সকাশাদুত্ক কেরপেণ যক্ষতাতে ভত্ত্র গৃহ নামে ভাবাল 'রৈ বা যদুত্কো চোদীয়তে ভদপি ভরুণ কথাত ইতি বিদুষাণ সম্মতণ ।।

শব্যপু । গৃংহা প্ৰেরবাহাদিদে হৈ। ভরণ ক্রিণি । মূল্য ।
নাণে । লক্ষ্যত্ ক্ঞিত্ তচ্ছুল পরিকী ভিতি ।। ১ ।।
যদানে ভণ্ড ভার্গ্হেশুল ওত্পরিকী ভিতি নিভি
কাত্যায়ন ব্যাস বচনে ।। ১০০ ।।

উত্তরঞ্চ বিবাহানন্তর পিতুঃ ছলাত্ ভর্ত্রলাদ। জিয়া যল্লক তদ্বাধেয়ক°ীধন° জ্যোমিতি সতা• সন্মত ॥

সম্যা বিবাহাত পরতো যন্ত্র লকং ভত্রলাত বিয়া পুনাণে বিনাহাত পরতো যন্ত্রকং ভত্রলাত বিয়া। উদ্ধান ভত্রিকিঞ্চিত্র সংক্ষারাত্ পুতিতঃ বিয়া। ভত্রিকালাত পিরোর্ঘা অন্নথেয়প্ত ভত্তরিতিকালায়নোশনোবচনে।। ১০১॥

পুশ্বঃ — যদি পতি স্ত্রীকে ধনদিতে পুতিশ্রুতহইয়া লোক। স্তর গতহয় তবে পুত্রেরা তাহা দিবে কি না ॥

জন্যে।) ভজু পুতিশ্রুত যত্ জ্রিয়ৈ তন্দিদ্তেপি তঙ্ 🔰 পুঞাদি ভীরিক্থহরৈর্দেয় মিতি বিদাণ সম্মতং ॥ 🍞 ভন্তুর্নপুতিশ্রুত দেয় মৃণবৎ জ্রীধনণ সুতৈরিতি পুমাণ 🕈 বাৰ্হস্পত্যং ॥ ১০২ ॥ পুশুঃ — যেস্থানে পতি পুতিশ্রুত হইয়া থাকে সে স্থানে ় তাহাই দিবে অনিৰূপিতবিষয়ে কত দিবে অ থাৎ জ্রীধন দানের নিয়ুমাথে কোন বিশেষ বচন আছে কিনা। অংব্যা) পতিক্তস্ত্রীধনদানস্থলে স্বোপাজ্জিতি তথ্য স্বে 🕽 হৈছৰ নিয়ামিকা অন্যত্ৰত জ্ৰিয়ে গ্ৰামাচ্ছাদন পুণাকর্সকরণার্থণ দ্বিসহ্সুকার্যাপণণ কল্ল্ডিদেরণ ব্রথনভ্লেত দ্বিসহ্সু রৌপ্যং সুবর্ণ বা ভারর বর্জ্ঞ স্ত্রিয়ে দেয়া বিভ্রস্যানুসারতোবা যথা শক্তি দেয় মিতি বিদ্যা° সন্মত° ॥ ্) পিতৃ মাতৃ পতি ভুাতৃ জাতিভিঃ লীখন' এইয় 🏸 ्रिजार। 🐧 यथा भक्ति विजश्रुमिन व दा॰ द्वानता न्रस्त ॥ ১ ॥ দিসহসু॰ পরোদায়ঃ দ্রিয়ৈ দেলোধনতা তু ॥ ২ ॥ ইতি কাত্যায়ন ব্যাস বচনে।।১০৩।। পুশঃ-- জ্রীলোক বিদ্যমান থাকিতে তাহার ব্রীধনে পতি পুঞ্জের ভোগ করিতে অধিকার আছে কি म। ।। ্ বিদ্যমানায়া° স্থিয়া° তদ্ধনে পতিপুঞ্জুারাদী ∫ ন'মস্বাতন্ত্ৰ্যাত্তদন° বেচ্ছ্য়া তেভোত্তু° ন শক্যজ ভরণ

ইতি বিদাণ সন্মতণ।।

।। ধায়দন্তকরত্নাকর।।

) নম্ভর্জা নৈবচ সুতোন পি**তা ভ্রাতরোনচ।** আদা ʃ নেবা বিসর্গেবা দ্রীধনে পুত বিষ্ণব ইতি কাত্যা युनीय १११ ३ • 8 11 যদি কোন ব্যক্তিবল ছারা জ্রীধন ভক্ষণ করিয়ী থাকে তবে তাহা হইতে ঐ দ্রীলোক আপন খন কি পুকারে আদায় করিবে ।। ্বী জিয়া অন্ডি মত্যা যদি ভৰু ভিৰুত্ৰা জ্বাতিভিশ্চা ∫ নোৰ্বা বলাৎ ধ্ৰীধন• ভক্ষিত•্ব্যাৎ তেচ্নাক্তা দভাঃ সৰু জক ধন জিয়ে দাপৰেদিতি বিদুষা 🗎 গৰ্মত । ্ব জীবন্তীনা তুতাসা যেতন্ধরে মুশ্রেনান্ধবাঃ৷ তান্ মাণানি 🕽 শিব্যাচ্চের্মণ্ডেন ধার্মিকঃ পৃথিবীপতিঃ । ১ 🎁 ৰদি হেকতরোনীবাং দ্রীধনং ভক্ষয়ে ঘলাং। স वृक्षिक मार्थाः मान्धः टेव नमापु यार । २ । वृथात्मात्कर जात्रार विदेशमगाय नवृष्क्रकः। 🤏 ইতি মনু কাত্যায়ৰ দেবল বচনানি। ১-৫। - জ্ঞীর **স**নুমতিতে **যদি পু**ীতি পূর্ষক কোন বাজি জীখন ভক্ষণ করিয়া পাকে তাহা পুনর্বার দিত্তে হয় কি না ॥ **অ(मा**) **ু পূৰোক্ত বন্ধুনাং মধ্যে যদিকৈমাপি প্ৰীতিপূৰ্বকং** 🕽 জীধন॰ ভক্ষিত॰ তদা লোপ্টিৰদা খনবান্ ভবেৎ

অথাৎ পুতিদানেসমঞ্জিয়াত্তদাসৌ মূলমাত্র° ধনমবশাঃ দদ্যাৎ স্ঘদি সর্বদ্য নির্দ্ধন্তৎ পুঞ পৌত্রৈয় পিকালে দাতব্য যতঃ জ্রীধনস্য কৃদানি ব্দয়োন ভৰতীতি বিদুষাং সন্মতং।

🔰 তদেৰ মন্যনুজাপ্য ভক্ষয়েৎ পুৰ্বিতপুৰ্বকং। মূলমে णुगांग° रेव खमाश्राः नार न यमायनवान् उत्दर्धाः ।। ।।। ত্রীধনক্ষ নরেন্দুগিণ ন কদাচন জীয়াতিঅনাগন ভুজামানমপি বর্ষশতৈরপি।। ২ ।। জীবনানি खर्यासामपूर्णकीविख मानवाः । नाती यानानि

> বস্ত্রণমা তে পাপায়ান্ত্যধোগতিং ॥ 🧇 🛭 ইতি কাত্যায়ন নারদাপত্তপ্ত বচনানি 120%।

- যদি বিপদ সময়ে জ্রী আপন ধন পতিকে দিয়া থাকে পশ্চাৎ পতি তাহা শোধন করিবে কি না এবং জ্রীয়দি শা দেয় তবে দুর্ভিক্ষাদি সময়ে পতি खय़ छी थन पुरुष कतिए शास कि ना यान शुरुष করিয়া খাকে তাহা দিতে হইবে কি না ।

্ব পুর্তিকে স্টুর্ভরণার্থ যক্তকর্মণি বা পুর্রাদ্যনিষ্ট जिन्दात्रगोर्वः नांखि कर्मां वा त्राक्षित्रपुरः छेखमर्ग কৃতাদেধাদৌৰা ব্যাখাগাদ্যান্থলচিত্ত পতিমবলো ক্য বা যত্ৰ স্ত্ৰিয়া কপদা স্বধন দ্তু পশ্চাৎ যদি পতিঃ স্বেচ্ছয়া দদা। ত্রদা স্ত্রী পুাপুয়াৎ। যদ্যেভৎ नगरेत्र जी बेचन॰ नमाखमा পতিঃ स्थनाजाद खोधन गृही छ॰ भकार अन्होद्याकार गामि তি বিদাণ স্থাউ^ন্।

ব্যাধিত বাসনস্থক ধনিকৈরপি পীড়িত জাত। বিসম্ভ যথ পীত্যা দদ্যাদান্মেক্য়া তুসঃ ॥ ১ ॥

দুর্ভিক্ষে ধর্মকার্য্যে, চ ব্যাথে বংপুতিরোধকে। গৃহীত প্রীধন ভর্তান জ্রিরেদান্তনহতীতি।। ২। পুজার্ভিহরণে চাপি জ্রীধন ভাকুনই ইতি কা ত্যায়ন যাজ্ঞবন্ধ্য দেবল বচনানি।। ১০৪।।

পূশঃ— দুভিফাদি ব্যতিরেকে জীরধনে পতির অধিকার আছে কিনা।

শ্বো। । পিতৃমাত্ভত্রবাতিরিক্তাদ্ মলক পথা দিভাই ভর॰ । জিয়া যৎপুাপ্ত শিল্লকর্মণি রলক তমর্নে অনা পদাপি পর্তাঃ মানাং বিদ্যুতে যতঃ জীচ স্বয়ন মতজ্ঞাপতাধীনা ততক্তদ্ভিভ্রতধনমপি পত্যুত্ব তি জিয়াঃ মোপাজ্জিতধনতিয়৽ যদ্যদ্ধনং তৎ । বর্ণ পুর্বোক্ত জীধনং ভেয়েমিতি দায়ভাগ বিদাং সম্মতং !।

ভাষাপু) পাগুং শিল্পৈন্ত বহিত্তং প্রীত্যা চৈব যদনাতঃ।ভত্তু :

সাণানি) স্বান্যং ভবেত্তর শেষস্ত ত্রাধনং শৃতং । ১। ভার্যা
পুরুদ্ধ দাসশ্চরয় এবাধনাঃ শৃতাঃ। রক্তে সমধি
গছন্তি যসৈতে তস্যতন্ধনং । ২। অধনদ্রয়এবো
ভাভার্যা দাসস্তথা সূতঃ। তেষাং যৎকিঞ্চন দুরাং
ভত্তদুরাং পুকীর্ভি তমিঠি ক্রীয়ন মনু নারদ
বচনানি ।। ১০৮ ।।

পুশ: — যদি পতিপুতি পূর্ক দ্রীধন গুহণ করিয়া পুনর্বা র বিবাহ করে ঐ জীতে শ্রীণান্য ভাব ব্যক্ত করে

ভবে ঐ দ্রী আপন ধন বলদারা লইতে পারে কি मा এব॰ গ্রাসাচ্ছাদন পাইতে পারেকি না ইতি॥

্ব প্ৰভিঃ জ্বীখন গৃহীত্বা যদি তাং ন ভজতে দ্বিতীয় 🕽 ভার্যায়া সহবসতি তদা তয়া সংশ্রীত্যা পূর্বং यस ন • দভ • তদ্বাদাজা দাপয়েত্ ভক্তাচ্ছাদনাদিক ৷ যদিন দদাতি পতিস্তদা তদপি জ্বিয়া আকৃষ্য গা্ছমিতি সতা সম্বত ।।

অসাপু) অথ চেৎস্দিভার্যাঃ স্যান্নচ তাণ ভদ্দতে পুনঃ ।পুী भारत रे जा विम्हेमिल हिंद शुक्तिष्ठां ग उपनार । गूर সাচ্ছাদ্দ্বাসনামুচ্ছেদোয়ত্ত যোয়িতঃ। তক্ত ৰনা দদীত শ্রী বিভাগ রিক্থিনা তথেতি কাত্যার্থ वहान ॥ ३०२ ॥

পতি মরণানস্তর যদি তী প্রীধনের ব্থাদান ও ব্যয় করে এবা ভুষ্টা স্থালোককে লইয়া সর্বদা বাস করে তবে কি কর্ত্তা॥

) শক্কিতব্যভিচারায়া বিধবায়াঃ স্ত্রীবনং দায়াদা ज्योद्यिम्यरिकिकिम्स्थानीस् म्या गृह्माया नात्म য়ুরিতি বিদাণ সন্মত ।।

ু বিখব পুৰুবন্ধা চেমারী ভবতি কর্কশা। আয়ু यः ी कशर्गा किया कीवन करा।।) II बरामवः বিধ॰ মধী ব্যাবিৎসু পতিতাৰপি। বস্তুান माना॰ (मग्नु वार्षमु, मृत्र ग्राखित्व देविशांती क मनुबहरन ॥ ३३०॥

্ব পুনঃ — জ্বীলোক যদি নিতান্ত নিৰ্লজ্ঞাও ভুই। হয় তৰে
তাহাকে কি কৰ্ত্ব্য ।।

্ অন্যো

ব্যভিচারিণ্যা নির্জ্জবিধ্বায়াঃ স্ত্রীধনণ বলাদপ্

হর॰

ব্যত্য বজু ভঃ সানির্বাস্য ইতি সভাণ সক্ষতং ।।

ভোষাপ্

কাণানি

চাররভাষাচ স্ত্রীধনণ নচ সাইতি। ১ ।ভরণণ চাব্য

ক্রীরিন্ স্থ্রীণামান্তাবনক্ষ্যাৎ । বজান্তি স্বায়াণ

ভালু দৈচদাছিন্দ্য রিভরাস্ তথা ২ । নির্বাস্যাব্য
ভিচারিণ্যং ব্যতিক্লান্তথেব চেতি কাভ্যায়ন

পুত্র: — জুীলোক লোকান্তর গমন করিলে দায়ভাগনতে
তাহার যৌতুক ধনের অধিকারিক্রম কি পুকার।

नांत्रम योद्धवन्त्रीव्हनानि ।। ১>> ।।

অস্যে। ব্রুলনা তুন্তারা তদ্যৌতুক যদন ভবেত।

ন্তর বিলালি ক্রুলার কিন্তার তদনভার তেন্তার কিন্তার কিন্ত

অসাপু) নাতৃস্ত যৌতুক যত্নুসতি জনারীভাগতব সং॥।।।
নাণানি । জ্ঞীখন দুহিতুণা নপুরানা নপুতি হিতানাঞ ॥২॥

भाजूः পারিণাযা॰ জিয়োডজেরन्।। তা। নাতুদুহি তরঃ শেষম্ণাত্তাভ্যঞ্জতে২ দুরঃ॥ ৪॥ অভাবে দুহি তুপাঞ্ তক্ত ভূবিয় এব চ। ৫ । দুহিত্পামভাবেতু **রিক্থ॰ পুঞ্বেধু তন্তবেত্। ৬।।** নভ্যমজেষু **क्यूमी ब्रायी ভবতি ॥ १ ॥** यशामासीतामी न गाडि मुखा দৌহিত এব বা। তত্সুতো বা ধনং তাসাংখ্যুরাদ্যা: সমাপুরুরি ভ্রন্গৌতন বশিষ্ট যাজ্ঞবন্ধ্য নারদ কাত্যায়ন व्यक्ति कनानि॥ ३३२ ॥

क्रमाक्षा वा वान्यका धनाधिका इस्ता यहि পশ্চাত্ৰক্ষা বা বিধৰা হইয়া লাকান্তর পুঞা হয় ত<u>কে ভত্সংক্রান্তমাত্ ধন তাহার</u> পতি পাই

বে কি অন্য ভগিনারা পাইৰে ॥

) জাতাধিকারাপশ্চাডেছকা। বা বিধবা यहि। ʃ অপুকাকা মৃতা তদ্যাস্তদ্দন ন লভেত্পতিঃ ॥ তত্স জান্ত মাতৃধন ভগিনীনা তদা ভবেত্। পুৰৈঃ সম্ভাৰিতা যাচ যাচ পুল ৰতী তথ।। যুগ शक्तकातिरभी वक्ताविधवरद्यास्त्रकः। मात्रकार्ग

মত ছেতত্তত্পুমাণ নিগদাতে।। भगार्थ । (পৃতায়ার পৃত্তিকায়ান্ত ন ভর্তা দুবামইতি ॥ ১ ॥ साधानि । পুতায়ার পূত্তিকায়াণ তু ন ভর্তা দুবামইতি

। २ । चल्वां ऋं इसावां छ चनुग श्रां ए जपनाया । ৩। ইতি শত্ত্বিপ্ৰিত পৈঠীনৰি বৃদ্ধনৰু বট

नानि । ३३० ।

E4?

যে ছানে অনেক দৌহিত্র থাকে সেছানে মাউলি হীর ধন তাহার। কি রীতিক্রমে সইবে।।

चारमा । पोहिकानहरवा यञ्ज ए समाञ्जनपात छ ।। माजीस छेख॰ । इ। धन॰ मार्च विख्यकतन् विमा॰ मण्ड ।

জন্য) পুতিমাত্তোবা বে বর্গে ভাগবিশেষ ইভি গৌ পুমান । তম বচন । ১১৪।

পুশঃ—— শাস্ত্রেতে ক্ষ্পুকার বিবাহ কহিয়াছেন।

অস্যো বিবাহামূনিতি ধর্মণাত্ত পুদর্শিতাঃ। তান ।
ভর॰ হিণ্কথয়ামাত্র পুমাণেন নিবোধত ।। বৃদ্ধিটিদ
বস্তথৈ বার্ষঃ পুালাপত্যাসুরঃপুমঃ গান্ধরোরাক্ষস ।
১৬০ব পৈশাচন্চ সভাগমত ।।

जागानि रेप्टब्हें प्रवास निवास निव

পুশঃ— বুক্ষিবিবাহের স্বরূপ কি পুকার।

অস্যো

বস্তু লিঙ্কারৈ রাজ্বাদ্য কন্যানচ্চ রিস্বাচাদূরগুণব

ছর॰

ত কন্যাদান॰ ব্রুদ্ধোবিবাহ ইতি বিদাণ নত॰ ।।

আল্র আছ্র দানণ কন্যারা ব্রাজ্য ধর্মঃ পুকান্ডিতঃ।১।

আল্র গুণবড়ে কন্যাদানণ ব্রাজ্য । ২। সং

ক্ত্যালূর কন্যান্ত দদ্যাত্ ব্রুদ্ধোত্লণ ক্তাণ ॥ ৩॥

ব্যুদ্ধোবিবাহ আল্র দায়তে শক্ত্যলঙ্গা ।। ৪॥

ইতি মনু বিষ্ণু নারদ যাক্তবন্ধ্য বচনানি॥১১৬॥
পুশ্রঃ— দৈব বিবাহ কি পুকার ।

चना १ वरळ पूर्वि उट जमा गृष्ठि क क च स्वेट । क स भागित } इच्छा नू जामान हेम्बर शक्ये ॰ शुक्रक छ ॥ ऽ ॥ च्या विकास हेम्बर नाम् चिक कक्ये स्वेट । २ । यस क्षिण हेम्बर । ० । यद्ध स्वाद्धि क हेम्बर । ८ । हे जिस्सू नाइम् विक्यू योद्ध वसू। वक्ष नानि । ১১९ ।

भूनः - भावे दिनारस्त्र नक्त कि।

व्यतः। वतारष्ट्रायुगः मृश्युद्धा धन्म एठा विधिवरण्यनप्रमान खतः । नार्यः। विवाह है कि मृशाः मन्मकः । — অসাপু) এক° গোলিপুন° ছেবা বরাদাদার ধর্মতঃ 1 কন্যা নাণানি) পুদান° বিধিবদার্ফো ধর্মাঃ পুকীর্ত্তিঃ 1 > 1 বস্ত্রগোলিথুনাভ্যান্ত বিবাহস্তার্ম উচ্যতে 1 ≥ 1 গোমিথুনপুহণেনার্ফঃ । ৩ ।। আদায়ার্মস্ত গোযুগ° ইতি মনুনারদ বিষ্ণু ষাক্তবল্যু বচনানি ।। ১১৮ ।।

পুশ: — পুলোপত্য বিবাহের লক্ষণ কি।
অন্যো
সহ ধন্ম চরেত্যুক্ত্য গুণবতে কন্যাদান প্রালাপ
তর বিবাহ ইতি সতাং সন্মতং।
অস্যপু
সহ নৌ চরতাং ধর্ম মিতি বাচানুভাষ্যচ। কন্যা
মাণানি পুদানমভ্যুক্ত পুলোপত্যো বিধিঃ স্মৃতঃ। ১।
সহ ধর্ম চরেত্যুক্ত্য পুলোপত্যো বিধিঃ স্মৃতঃ। ২।
পুথিতঃ পুতিদানেন পুলোপত্যা হি হ স্ত্যু
ত্যা চরতাং ধর্মানম্যা দীয়তেই থিনে। স কায়ং
পাবয়ে ভক্তাঃ বাজুবন্ধ্য বচনানি। ১১৯।

পুণাঃ — গান্ধর্ঘ বিবাহের স্বরূপ কি ।
আস্যা) ইচ্ছয়া বরকন্যয়োঃ সংযোগো গান্ধর্ঘবিবাহ ইতি
ভর॰ ১ পণ্ডিতানাও সন্মতং।
অস্যপু) ইচ্ছয়ানোন্য সংযোগঃ কন্যায়াশ্চ বরস্যতঃ গান্ধ
নাগানি ১ র্ঃ সতুবিজ্ঞেঃ মৈপুন্যকান সংভবঃ । ১ । ছয়োঃ
সকাময়ো মাতাপিতুরতো গান্ধর্যঃ ২ । গান্ধ
ভ্রঃ সময়ান্মিথঃ । পুন ইচ্ছন্তীমিচ্ছতঃ পুাত্

গাঁহার নাম পঞ্নঃ । ৪ । ইতি মনুবিজু বাই. বল্যু নারদ বচগানি । ১২০।

্রাণ — আদ্র বিনাহের স্থাপ কি ।
আন্ন) মাত্রপিত্তা ভাতিতোৰা কন্যারে যথা শভি
ভারণ
১ বনং দ্যা কন্যাদান্দালুরে বিবাহ ইতি বিংশং
মতং ।

गण् । आठिएआपुर्विनः माद्य तमारोग रेटन अविष्ठ । स्थाप्ति । तमार्थित रेटन अविष्ठ । र ।
 काम्यान अविष्ठ । र । विवाद उप्याद्य । र छत्वः उप्याद्य । र । विवाद उप्याद्य । र । विवाद उप्याद्य । र ।
 । विवाद उपयाद । र । विवाद उपयाद । र ।
 । विवाद प्रमाद । र ।

পুত্রঃ -- রাফস বিবাহেয় অফণ কি ।

আসো) বিশ্বাশন্তী কর্তী হ্রা ছিলা ইটা ত্র্যাত্র তরং বিশ্বাল হরণঃরাক্সো বিশ্বাহীত বিশ্বালকাত।

অসাপু হলা ছিলা চ ভিলাচ জোশভীং ক্ষতীং পৃথাত্ নাণানি বিশ্বহ ক্যাভরণং রাজনোবিধি ক্চাতে। ১।

যুদ্ধ পূহ্রণেন রাক্ষসং । ২ । পুলহ হরণা দুজ্জে বিবাহে। রাক্ষসত্থা । ৩ । রাক্ষনো যুদ্ধহন্দ্র শাধ । ৪। ইতি মনু বিশ্বনার্থ যাত্রব্যালক

পুর্ঃ — পৈচাস বিবাহের জন্ম কি ।

🏿 আন্ত্রা পুনতা কন্যাণ্যত্র বরউপগছতি স পৈশাচ ভুৱণ 📑 সংস্কাৰণ্যবিহা**হ ই**তি বিদা**ং সন্মত**় ৷ অবাণু । বুজাং নতাং পুদ্ভাং বা বৰো বলে। পণচ্ছতি। স আলানি 🕽 পাপিটোবিবাহানাং পৈশাচম্চাউলোবনং।১। খুগপ্রভাতি গদাৎ পৈশাচঃ। ২। মৃথ পুরত্তি গ্লাত্ পৈশালকাইনোপ্নঃ 1 ৩ 1 পৈশালঃ ক্ল্ডলাং । ৪ । ইতি মৰু বিঞ্ নার∢ गास्त्रतल्ला बङ्गानि । १२०। পুরঃ — বাকা ভি বিবাহ চতু ইয় লক্ষ যৌতক ধনের দায় ভাগমতে জীমনাধি কারির জন কি প্ৰার। অস্যো) ৰাক্ষটে যাৰ্যগাল প্ৰোপতা প্ৰায় কুল ৷ প্ৰা ভার॰ 🔝 ভাবে লাড ৬৩টি ভাুকা দাকা িজা জনাত্ 🕻 জীন্তবাহন নত নিদ্ ল্যা ছি বা প্তেং। অসাপু) द्किप्तिरार्थभाकार्यभाकार्थाः यक्षमः। अपूजाः মাণানি 🕽 য়ামতী তায়া° ভদুৱৈবত দিয়াতে। ১। অপ্ জ জীধনং ভবু বুলিলাদিয় চত্যু পি। ২ । তগিনী শুলুং সোদয্যাণা। মূৰ্দ্ধু মাতৃস্ততঃ পিতৃঃ। 🤏 🧞 ইতি ননু যাজ্ঞবন্ধা গৌতম বচনানি । ১২৪ ।। পুশুঃ — দায়ভাগ মতে আনুরাদি বিবাহলক যৌতুক ধনের স্বিকারিক্রণ কি পুকার। আন্যো 🔰 আ'ৰুৱাদি বিবাহেধু লঙ্কণ মভু জ্ৰিৱাধনং। তল্লদা

ছর৹ ু 🔰 তা পিতা ভ্রাতা ভর্কাচ ক্রমশঃ পুভুঃ। দেবরোদে

বর সুতভুগতৃখন্ডর পুঞ্জৌ। সমাণ শিনৌ ভৌবুগ

পত্ততঃ স্বতগিনী সুতঃ ৷ ততু 🏲 ভাগিনেয়ঃ স্যাৎ 🦠 ততে।ভুঞ্ফু মু: তালভেং। তদভাবে তু জামাত। শ্বন্ধরাদ্যান্ততঃ পরং। ততঃ পুংধন বজজ্ঞেয়া স পিণ্ডা অধিকারিণঃঝ জীনুতবাহন মতং বিজেয়ং ক্বিস্কুজ্বরঃ ৷

অস্যূপ্

र यन्त्रभाः माध्वन° मन्नः विवादः म्रामूतां नियु । अशु মাণানি ∫জায়ামতীতায়া° ভভুরেব তদিষ্যেতে। ১। আসুরাদিযু যল্লক গ্রেখিন পৈতৃক জিয়াঃ। অ ভাবে তদপত্যানা॰ নাতাপিভ্ৰোস্তদিষ্যতে ৷ বন্ধু দত্তমত বক্নামভাবে ভত্গামি তথ । ২। মাতুঃ ৰসা মাতুলানী পিতৃবান্ত্রী পিতৃৰসা। খঞা পূর্বজপত্নীচ মাতৃতুল্যাঃ পুকার্বিতাঃ । यদাসা মৌরসোনস্যাৎ সুতো দৌছিত্র এববা । তৎ সুতো ৰাধনং তাসাং স্পুঞ্চাটাঃ সমাপুরুহা ৩১ বন্ধু দত্ত তথা ভল্মদাধেয়কমেবচ । অপুজায়ানতী তায়াং বান্ধবান্তদৰাপু্যু 181 ইতিমনু কাত্যা য়ন বৃহজ্পতি যাজ্ঞাবলু । বচনানি ॥ ১২৫॥

পুনঃ — অযৌতুক জীধনের দায়ভাগনতে কি গুকার অধি কারি .জনা৷

অস্যো 133°

ৰ যুগপৎ পুঞ্জন্যানামধিকারস্কৃ:যাতুকে । তয়ে। ∫রন্যতরভাবে তয়োরন্যতর্স্য তং। ঘয়োস্ত য়োর ভাবেতু সমূচা দুহিতুর্তবেৎ । সম্ভাবিতস্তা যাচ যাচ পুলবতী তথা। যুগ পদ্ধনহারিটো তদ্ ভাবে জ্ঞােশিই ৷ পৌত্রদৌহিত্রসাপত্নতৎ সুতা

ধনভাগিনঃ ৷ রঘুনদনমত হেতৎ জীমৃত বাহ্য
সাতু ৷ সপল্লীপুলতঃ পশ্চাদৌ হিত্রসাধন ভবেৎ
দৌহিল্রাৎ পরত শৈচব পুলৌ ক্রসাধবে লমে ৷
ততঃ সপল্লী লৌ নালাসতে ৷ বন্ধাধবে লমে ৷
তদভাবে লভেডল ভুলি মাতা পিতা ক্রমাণ ৷
যক্ষ মাত লিল্লভ শ্বাবেরম্যৌ চুক ৷ শুলুঞাপি
লভেন্তল মাত ৷ তাতঃ পতিঃ ক্রমাণ ৷ দায়ভাগ
বিদ্যমেতন্ত নিগ্দিত ময়া ৷

অগ্যপু) জনন্যা পংস্থিতায়া তু সম সর্বে সংখ্যেরাঃ। মাণানি ∫ ভজেরমাতৃক° রিক্থ° ভগিনাশচ সনাভরঃ। অ নাথেয়ে চ যদত্ত পত্যা পূীতেন চৈব যৎ। পতে। 🦠 জীবতি বৃত্তায়াঃ পুজায়াস্তদ্ধন° ভবেৎ ৷ ১ ৷. সামান্য পৃত্তকন্যানা মৃতায়া জীবন ডিয়া । ২ । জ্রীধন প্রাদপত্যানা দুহিতা চ তদ শিনী ৷ অপুতা চেৎ সমূচাতুলভতে মানমাত্র ক॰। ৩। ভগিন্যো বান্ধবৈঃ সার্দ্ধ॰ বিভক্তেরন্ সভত্কাঃ 1 8 1 পু**ণ্ডেণ লোকান্**জয়তি পৌৱে_ঁ ণানস্তামশুতে । তথা দৌহিজোপি ছমুত্রেদ॰ ন ন্তারয়তি পৌত্রবং। ৫। যদাসামৌরসো ন ग্যাৎ সুভো দৌছিত্র এৰ বা । তত্সুতস্তত্মৃতো বাপি अनुशिक्षाः ममान्यूयः। ७। अनुसाराः स्टत ভৰ্ ভাতা মাতা পিতা ক্ৰমাত্। १। বন্ধু দত্ত॰ তথা শুলুমন্বাধেয়কদেৰ চ। অভীতায়ামপুক

লি ব'দ্ন () গ্ৰ'হু ু । ৮ । আতী তারাম পাত।

রাং বাল্লাদিভরং ধনং । ছুতি মাত। লিভা
ভর্তালভেড হয়থ। জুনং । ইতি মন্দেরর
বৃহস্পতিকাত্য রুমমন্ বহুস্পতি নেবল য জুববু ।
বৌধারন বচনানি । ১১ । ।

ুশুঃ - — বরদত্ত অপুজ জ্রীগণ কে প ইদে।

আনো। 🚶 বরদভ্রণ শত্তর এব লভেড্ নঃঃ বা াবশেষ ভিরং 🔰 মুমরোদীয়ভাগবিদাং মতং।

ভাষাণু) অপাগচ্ছেত্ সমৃচ'য়া॰ দত্ত পূর্ব । চাহরেত্র মানেনি) মৃত্যারা॰ গুনরামদ্যাত্ পরিশোব্যা । াং । ১ । অফ শুলু বরো গ্রীরাত্ । ২ । ইতি । ব আভ বল্য গৈঠীনসিবলনানি । ১০ গ।

পুলু: — বরদন্ত ব্যতীত অন্য মাতৃলাদি ্ত পুঞ্জ কন্যা ধনে কে অধিকারী হটাছ।

জ্পো। } বরদ্ভানত রিজেত্রাবরণ রাচ প্রে। মৃতাহা ভর° স্তাতরে (জ্যাঃ জনার্বা, অধিকারিণঃ। চন্তারে ধন° মাতা পিতাচ ক্রমতে। হরেত। এতেবামশা ভাষে তদগৃত্বীয়ুজীধনাইকাঃ। জীমৃতবাহনন্ত° বিজ্ঞেয়° ক্রিঞ্জীরঃ।

সমাপু) পিতৃ ভাতিগৰ তদ্ধত দুহিতঃ হাবর প্রতা । অতী মাণানি । তায়ামপুলায়া ভাতৃগামিতু সর্ব। । ১ । পুর্থণ মৃতায়াকনাায়। গৃহীযুহ মোদরাঃ স্বয়ং । তিন্তাবে ভবেখা ভূতৰ ভাবে পি তুটাৰ হ । ২ । ইতি ক্। ত্যা হন বৌধায়ন বচনানি । ১২৮ ।

পূশ্য — থিতাজরাশাস্ত্রনতে ত্রীধনাধিকারি জম কি পূকার ॥

অস্থা) পুলান পৃথাবিকে শুক্রে জী ভবত থিকে জিয়া লাগনি) ৷ সাতু দুহিতরঃ শেবম্ণাভাতা ঋতে ২ দুরঃ ৷ ২ ৷ জীবন গদুহিত্পাল পুতানান পুতি হিতানাঞ ৷ ৩ ৷ মানুদুহিতরে৷ ভাবে দুহিতু গাণ তদ্মুঃ ৷ ৪ ৷ সংস্কল্পেয় ভদ্মনী কর্থো ভবতি ৷ ৫ ৷ ঋণাভাতা ঋতেবুং ৷ ৬ ৷ জ নন্যাণ সাহিত্যয়ান্ত সমাস্থলিহে ৷ হাত জ রগাত্ক রক্থ ভগিনাশ্য স নাভরঃ । ৫। ইতি ।

মনুধাজ্বলা গৌতম নারদ বৌধায়ন যাজ্বলা

মনু বচনানি । ১২৯॥

পুরঃ — যেস্থানে দুহিতা আর দোহিত্রী থাকে সেস্থলে
দুহিতারা তাক**ৎ ধন লইবে কি দৌহিত্রী** দিগে কিঞ্জিৎ দিবে ।।

অস্যো } দৃহিতৃণাং সমবায়ে দৌহিতৃণাং চ তত্ত্ব তু। তাভ্যঃ
ভরং } পুীত্যা পুদাতব্যং কিঞ্চিদৃহিত্ভিধনং । মিতাফ
রাশাস্ত্রমতং বহির্বস্থাত পুতি ঠিতং।

্থান্ত। স্মৃত্তি হা ক্ষাত্তি প্রকলিতি প্রাণ বিশ্বন্ধ বিশিষ্ট্রানাল প্রাতি প্রকলিতি ন্নুবচন । ১৩০।

পুশ: — যেস্থানে দুহিতা নাছি আনেক দৌহিত্রী আছে তা হার) দুইতিন দুহিতার গর্ত্তকাতা সেস্থানে কি পুকার ত্রীধনের বিভাগ হইবে।

্ অস্যো } তিরমাতৃ সুতাবহ্যাশে ভদ্য ভাগকলুল। মাতৃ ভর° ∫ দারেণ কর্ত্তবা বিজ্ঞানেশ্বসং মতং। অস্য ৄ পুতি মাতৃতো বা স্বে বর্গে ভাগবিশেষ ইভি পুমাণ ∫ গৌতম বচনং। ১৩১। পুদাঃ——অপুন্ধ জীধন কে পাইবে॥

জনো। } ভত্ত দিয়ং পুগৃহীয়ুর পুজজীধনং পুনং। মিতাক ত্রং } রাশাজ্ঞমতং সামান্যং কথিতং নয়া।। অস্য [†] ্ অতীতায়া মপুজসি বান্ধবান্তদবাপুয়ুরিতি যাত পুমাণ• ৢ বদ্যু বচন• ॥ ১৩২॥

পুনঃ — মিতজিরা শাস্তমতে ব্রাক্ষাদি বিবাহিতা সন্তান
নারাথিয়া লোকান্তর প্রাপ্ত হইদে তাহার স্ত্রী
ধন কে পাইবে। এবং আসুরাদি বিবাহিতার
স্ত্রীধন বাকে পাইবে।

আসো) অপুক জীধনণ ভারু বুলিকাদিয়ু চতুরু পি। আসুরা তরণ) দিয়ু যল্লকণ তচ্চ মাতুং স্ততঃ পিতৃং । মিতাক্ষরা শান্ত বিদাণ বিদাণ নিগদিতণ মতং ॥

আসা } অপুজ জ্ঞীধনণ ভতু বু জাদিষু চতু বৃশি। দুহিতু ণাণ পুনাণণ > পুসূতা চেচ্ছেষেষু ভত্গানি তদিত ৰাজ্যবন্ধা বচনণ ।।

পুর্: — বিবাহের পূর্ব যে লোকান্তর গমন করে ভাষার ধন কে পাইবে ।।

অসাপু ী স্বাক্তথ মৃত্যায়ঃ কন্যারা গৃত্তীযুঃ সোদরাঃ বর্ষণ।
মাণানি বিদ্যানে ভবেন্দাতুত্তদভাবে ভবেন্দ পিতৃঃ। ১ ।
ভবিনীশুদু নোদর্যাণান্ড পার্পোধ্যোভর্মী
ব্যরণ। ৩। ইতি বৌধারন গৌতন যাজবন্ধী
বচনানি ।। ১৩৪।

পুশং — যেন্থানে ছুজিরা পিতৃথন বিভাগ করিবেন্ সেন্থা নে অবিবাহিত ভুজি বা ভেগিনী যদি থাকে তাহা রনিগের বিবাহ কি সাধারণ ধনহই ত দিবেন্ ॥ অস্যা ব্যাস অস ক্রাস্ত্র যে তত্র ভগিন্যো ভুজিরো থবা। ভ্রম বিবাহ কর্ত্রা ভুজিল পূর্যসংস্কৃতি । সাধারণ ধনৈনোচেৎ কর্ত্রা স্বধনৈরণি ॥

অন্যপু) অসংকৃতা ভ্ৰাতরম্ভ যেস্যুন্তন্ত্ৰ রবীয় । সংকঃ
নাণানি) যাঁঃ পূর্ব সৈতে বৈপৈতৃকাক্ষ্যগান্ধনাৎ । ১ ।

যেষান্তনক্তাঃ পিত্রা সংগক্ষাবিধয়ঃক্রমাৎ । কর্ত্ত
থ্যা ভ্রাতৃ ভিত্তেষাং গৈতৃকাদেব ওন্ধনাৎ । অবশ্য
কার্যাঃ সংক্ষারা ভ্রাতৃভিঃ পূর্বসংক্তিঃ । ২ ! অ
সংক্ষতন্তে সংক্ষার্যা ভ্রাতৃভিঃ পূর্বসংক্তিঃ । ২ ! অ
সংক্ষতন্তে সংক্ষার্যা ভ্রাতৃভিঃ পূর্বসংক্তিঃ । ৩ ।
ইতি বৃহস্পতি নারদ যাজবল্প ব্দনানি ॥ ২৩৫ ॥
পুনঃ — ভ্রতারা পিতৃধন বিভাগকালে কিছু ক্ষলকার
ৰাজীধন ভগিনীকে দিবে কি না ॥

ভারে। এ সমসংখ্যাবিমাবল্প ধনং যদি তদাপুনঃ। ভগিনী ভারে। এই ভাল্চ চভূর্থাংশো দাতব্যো ভ্রাতৃতিঃ সদা। বিভাগ কালে ইলঙ্কারোদেরঃ শক্তানুসারতঃ । বৈবাহি ক' ধনা দেরং যুক্তংবছধনস্থলে । সর্বাত্ত তুর্থাংশনিয়মো নহি সিদ্যাতি। বিচনাস্ভবৈকবাকো ন সংস্কারার্থান্ত লভ্যতে। দীয়তে চাপি তল্লোকৈ রিতি শাল্প বিদাং মতং॥

আগাপু) সমাংশা মাতরত্বোং তুরীয়াং শাশ্চ কন্যকাং । গ্রি মাণানি) বেভ্যোংশে ভাস্ত কন্যাভাঃ পুদ্দুভূ তিরঃ পৃথক্ । বাংশাক ভুরারং পতিতাং স্যুরদিৎসবং । ২ । কন্যকানাস্ত্রু দন্তানাং চতুর্থো ভাগ ইয়াতে । পুত্রা গাঞ্চ ব্যোজাগা যাম্যং অনু ধনে স্কৃত । । ৩ ॥ অসংস্কৃতাস্ত সংস্কার্য্য ভূাতৃতিঃ পুর্বস্কৃতৈঃ । ভগিনাণ্ড নিজাদং শাদ্যাংশাস্ত তুরীয়কং ॥ ৪ ॥ কন্যাভাশ্চ পিত্দুবাদেয়ং বৈবাহিকং বসু । ৫ । বিভাল্যনানে দায়াদ্যে কন্যালস্কারং বৈবাহিকং জীধনক্ষ লভেৎ । ৬ । ইতি বৃহস্পতি মনু কাত্যা য়ন বাজ্ববুল্য দেবল শহুবচনানি । ১৩৬ ।

পুনঃ --- অপুত্ত ধন যে গুহণ করিবে সে মৃত ব্যক্তির পর ত্রোপকারার্থে সেধন হইতে কছ ধন দানাদি ক্রিবে ৷৷

্কালো) মৃতপুেত্যোপকারার্থ তথ্নার্থেন তে পুন: । । । । । । । বিজ্ঞানানি দায়াদা শু'শ্বান্সাসিকানি চ । দায়

ভাগে তু निथिष लारिकर्नवावद्वीतर् । उपर्विह ব্যয় (কঞ্চিৎ কর্দ্ধরণ সর্বসম্মত ।।

अनार् । नमूद्रशमः क्रनाम्बं जिम्रार्थ श्राप्त । मान बार्ष रे बान्ताजिरक भारत वर्षिरकृ भुषकुरुः । ३ । बरस्र बानी वार्थान् जनत्थ्यु धर्म्यकृत्जायु नित्याकरप्र क्रू হিতাবা। ২। ইতি বৃহস্পত্যাপস্তম্বচনে।: ৩५।

দানের দেশ ও কাল ও পাত্র ও পুকার কি এবং শাল্তেতে কোন দানকে সাত্ত্বিক কহিয়াছেন 🔃

খান্যো) ভককেত্ত পুরাগঞ গন্ধানাগরসক্ষণ । এগর্ব 🕤 ত॰ নৈমিষণ্ড কাশী কাঞ্চী তথাপুনঃ । গছাদি भूगा की थीं नि (मनाक गुरुशे मिकः । को नः नीवः मजिमुद्दि विम्विम् वृक्तिन खथा। छेलकः तमनुम्हिना শুদ্ধা দীয়তে তু যথ। শাস্ত্ররীত্যা নিগদিত তদা ন॰ সাত্তিক বিদুঃ।

ু বারাণশা অফক্তেত্র পুয়াগ পুক্তরাণি সক্ষীন ্শাণাৰি ∫ মুদুতীরঞ নৈনিযামরকণটক॰। ভীপর্ভ মহা কাল গোকণ বেদপর্ঘত। ইত্যাদ্যাঃ কীর্ছি তা দেশাঃ সুরশিদ্ধনিসেবিতাঃ ৷ ১ ৷ গুর্ণোদ্ধাহ मः का खियां वा मिश्रुमत्येषु ए। मानः निमि खिकः জ্ঞেয়॰ রাত্রাবিপি তদিষ্যতে । ২। বিদ্যাযুক্তা ধর্মশীলঃ পুশান্তঃ ক্ষান্তোদান্তঃ সভাবাদী কৃতি 🐯 । বৃত্তিপ্লানো গোহিতো গোশরগ্যে দাতা যদ্ধা বুলিকণঃ পাত্ৰমাজঃ ৷৷ অবুডানামনজাণ জাতিমাত্রোপজীবিনা °। নৈষা পুতিপুট্ল দেনঃ

পুরঃ — জ্ঞালোক্ আপন জ্রীধনের যথেষ্ট দানোপভোগ করিতে পারে কি না।

জাস্যা) বিনা ভর্রনুজ্ঞাত নচ দ্রী জ্রীধন বায়ে। অথবা ভর প্রণাদ্যথে ষয় তয় নিযোজ য়ে । গৃহিণত বছ পোষ্যাণামাপ ছঙ্কা যতঃ সদা। অতো নিবেদ্য ভ ভারমুপযুক্ত তুয়ভবে । তৎ দ্র্যাদিতি বৈদ্যা মাণ মত নিগদিত ময়া।।

অসাপু) ন নিহার জিয়া (জয়া। জটুখাবছস্থাগাঁও)। সাণ) অকাদপি চ বিভাগ্নি অসা ভজুরনাভয়েতি। ননুবচন া। ১৩ ॥ পূর্বত পুকার জীধন নির্দেশ করিয়াছেল নে मकरमञ्जे अरह अई निम्नम कि कानर खीरानत मानामि खी लाक कतिए भात ।

্ৰিভ্ৰি দ্ৰাতিরিক্তে তু সৌদায়িক ধনে জিয়াঃ। স্বা ∫ তন্ত্র্য° স্থাবরে পি স্যাদিতি শাঘে বিনি-চিত•াঃ 🎺

অন্যপু) নৌদায়িক ধন পাপা জ্বীণা ছাতত্তা নিযাতে। শাণানি ∫ যক্ষাভদা নৃশংস্যাথ তেইত মুণ্লীবনং।। সৌদা য়িকে সদান্ত্রীণা° স্বাতন্ত্র্যু॰ পরি কীন্তি ত° । বি क्रांत्र रेठव मात्मठ यत्पष्टे श्रावृद्धवृत्ति ॥ १ ॥ ७ खु माद्या मृत्य शत्यो विनारमञ्जी यत्यष्टेयः। वि

मामात्न ज् न॰ तत्क्क ज् क्रशराय ज्वरत्वर नाया। रा ইতি কাত্যায়ন নারদ বচনানি ॥ ১৪০ ॥

-স্থামিমণানস্তর ভত্ট্দউস্থাবরথনের দানবিক্রয় ন্ত্রী করিতে পারে কি না।।

অবৈন্) ভত্ত দত্তাবরনা ভোগমাত্র স্ত প্রিয়াঃ। প 🕽 ভৌমৃত্তেং প্রস্বতন্ত্রা দানাদৌ সা নতা॰ মত॰ ॥ ो छद्धी शीरजन यमखा खिरेश जिम्मूर ज जू उर्। ুপুনাণ॰ 🔰 मा येथो कोमभी श्राप्तगां ह्या ভাব ৱাদ্তে । ইতি ৰার म वहनः १ ३८३ ॥

🗕 **সাধা**রণ স্থাৰ**র পুঞ**পৌত্র ভুাতাদিগের অসমতি তে দান বিক্ৰয় করিবে না এইৰূপ প্ৰুমাণ পাইয়া हि किञ्जूयि कित्रिया थारक छाहा निष्कि , हर्देरव কেবল দাতা প্রত্যবায়ী হইবেন এ রূপ একশত বেচনেও দন্তবন্তর অন্যথাকরিতে পারেন। ইহাজী মূতবাহন লিথিয়াছেন এ ব্যবস্থা সকল শাস্ত্র সন্ম তা কি না।।

ভাস্যা) সর্কার কিন্মতি মন্তরেণ সাধারণভাবরসৈয়ক কৃ ভারণ ১ তম পি দাবাদিক ন সিদ্ধাতীতি মত বছপুাচীন পুঞ্জুইজত দিতি বিদুষা সম্মত । চ

আস্যা । সং টেন্নিভানু আতং যৎ কি**ণিংৎ স্থাবরে ক্উং।** পুনাণং । তও বর্ষনকৃতং জ্ঞেয়ং বেদ্যকো**পি ন মন্যতে** ইতি পুজাপতি বচনং॥১৪২॥

্রপুণ্। — বিভাগ সনয়ে যদি কোন অংশী কোন দুব্য লুক্ষা থ্রিত করিয়া থাকে পশ্চাৎ জানাগেলে তাহা কিই পুকারে অংশ করিবে ॥

আস্যো } বিভাগকালে যদুবাং নিজ্তং যেন কেন্চিজ ভরং বিভটজেদ্'শাভে পশ্চাদ্যদি তভু সমাজেতিঃ তেন সার্জ বিভজ্ঞবাং,ন তেন পাপভাক্স তু

সর্ধান্ত্রত ছেত্রিজ্ঞেয় কবিস্কারেঃ।।

আসাপু) ঝানে ধনেচ সর্বন্ধিন পুরিভক্তে যথা বিধি। পাশা । সাণানি) দ্শোত যত্কিঞ্ত্ তত্সর্ব সমতাং নয়েত্। । আন্যোন্যাপজ্জ দুবাং বিভক্তে যুৱি দৃশ্যতে। তব

পুনতৈঃ সমৈর শৈবিভালের লিতিছিতিঃ ॥ ২ ॥ পুন্তাদিত তুষদ্ যেনপুনরাগত্য তত্ সম । ভালে

া। শায়দন্তকরত্নাকর।।

আন্যোল্যাপছত দুব্যু দুৰ্বিভক্তঞ্চ যন্তবেত্^ন পশ্চাত্পুাঞ্চ বিভজ্যেত সমভাগেন হড্ঞঃ।৪। বিভক্তেনৈৰ যত্পুাপ্ত তভূদ্যেৰ ধনং ভবেত্। ছত নইস্ত যলক পুাগুক্তঞ পুনর্ভবেত্ ॥ ৬ ॥ ইতি মনু যাজ্ঞবলা কাত্যায়ন ভৃগু নারদ বচ नानि ॥ ३८० ॥

📤 বিভাগের পূর্ব সাধারণ ধনকোন অংশী যদি অ হিক্ভোগ বা দান বিভরণ করিয়া থাকে ভা ছার স্থানে বিবাদ করিয়া লইতে পারে কি না।। আসো) পূর্ব বিভাগাদ্যদ্যেন ভুক্তণ তথাত তদন্দ নাল र्जित्य शृहीजू॰ यहतरमय॰ खिछ॰ **ज्यवज्ञा**णाहिन।

অস্য } বন্ধুনা পহতে দুব্য বলান্নৈব পুদাপয়েত্। ুনা পুৰাণ } মবিভক্তানা ভোগ নৈব পুদাপয়েদিতি কাত্যা র্ন বচন ° 11 ১৪৪ 11

পুগৃহীয়াদিতি শান্তবিদাণ মত°।।

পুনঃ — কৃত বিভাগে যদি সন্দেহ হয় থে এ বিভক্ত বটে কিনা সে স্থানে কি পুকারে সন্দেহ নিবারন **रुहेरव ॥**

্ব ভাগে স্বতীতে সন্দেহো যদি স্যাদণ শিশাণ তদা। ছির॰ \iint পুথমণ জ্ঞাতিভিটেশ্চব্ৰজাভিশ্চান্য সাক্ষিভিঃ । জ্মেণ ভাগলেখ্যেন কন্ত্রান্তস্য শাজরীতা৷ নিগদিত প্রাচাষা মত যথা গ

্অস্পু । বিভাগধন্সনেহে দায়াদানা বিনির্ণয়ঃ । জ্ঞা ীনাণানি ∫িতভিভাগলেথ্যেন পৃথকার্য্য পুবর্তনাৎ।। ১ূা। ৰিভাগনিহ বে জ্ঞাতিবন্ধু সাক্ষ্যভিলেথিতৈঃ। বিভাগভাবনা ক্রেয়া গৃহক্ষেত্রৈশ্চ যৌতকৈঃ ৷ ২ [গোত্রভাগ বিভাগার্থে সন্দেহে সমু পরিতে । গো ভ্রেশ্চাপরি জ্ঞাতে ঘলং সাক্ষিত্ব মর্হতি। ৩। ইতি নারদ যাজবল্য শহু বচনানি ॥ ১৪৫ ॥

পুশঃ - — বিভাগ পত্র কি পুকার হয়॥

অন্যো ৄ বিভাগ্নময়ে প্রীত্যা ভ্রাতর চ পরক্ষর াাঁ বি ∫ ভাগপাত্র° স্বযু`্যস্তে যদ্ ত্ত° তত্ত্ব সাক্ষিণঃ । যে সূ্য उयां ज नामानि पुरानिष शुथक् श्वक् । निरवना বর্ষমাসাদি বৈহস্তাকরচিছ্লিত । কৃত্যা তথা কারি য়িত্বা সাক্ষিণাঞ্চ পৃথক্ পৃথক্। তত্তালিপিজ্ঞো यোন্যেন সমত° লেখছেভুসঃ। লেখকোপি লি খেলান স্বকং নাক্ষিসমী পতঃ। এবস্থিধং ভাগ্যক খ্যা গুল ক্ষা তু বন্ধু ভি: একমেক স্কু-স্পরক্ষ্য স্বে স্থোনে পুযত্নতঃ। কদাচিদপি চেত্তস্য ভবেৎ কালে প্রোজন । দর্শয়িত্বাতু সন্দেহ সর্বেষা বারয়েৎ খলু।পঞ্জিতানা নত ছেত্ছিছেয়ে কবি সঞ্জরৈঃ 🕦

অসাপু 🔰 ভ্রাতরঃ সংবিভক্তায়ে স্বৰুচ্যাতু পরস্পরং ধবিভাগ সাণানি ∫ পত্ৰ॰ স্বস্থি ভাগলেখা॰ তদুচ্ছত ৷ ১ বি ক শ্চিদর্থো নিফাতঃ ২ ফচ্যাত পরিস্পরণ। লেখা

স্তু সাক্ষিমৎ কার্য তি অধিনিক পূর্বি । সম্পূ মাসতদাহণীমজাতি স্বগোত্রকৈঃ । সমাপ্তার্থে ঋণী নাম ঘহন্তেন নিবেশয়েছে। মতং মেহ মুক পূথস্য যদকোপরি লেখিত । ২ । সাক্ষিণশ্চ স্ব হতেন পিতৃনামক পূর্বি । অত্রাহ্ মনুকঃ সাফ্ষী নিখেযুরিভি তে সমাঃ । উভয়াভার্থিতেনৈত ময়া হ্যুকসুনুনা ।। লিখিত হ্মুকেনেতি লেখ কোস্তে ততো লিখেছ ।। তা অলিপিজ্ঞো ঋণীয়ঃ স্যাহ সমত তু স লেখয়েছ । সাফ্ষী বা সাক্ষিণা ন্যেন সবসাক্ষি সমীপতঃ । ইতি বৃহস্পতি যান্ত্র বল্বা নারদ বচনানি ।। ১৪৬ ।।

ু নঃ — যেস্থানে সাকৃ কিন্তা বিভাগ পত্রনাথাকে সেস্থল কি পুকারে বিভাগের নিশ্চয় হইবে ॥

আঁস্যা) সাক্ষিভ্যোবলবজ্জের ওদাং চেলিথিত গ ः। ভরং) তদভাবেং নুমানের পূথপায় ব্যরাদিনা। নভ্যৈঃ সুধীভিঃ কর্তব্যা বিভাগস্য বিনিণ্যাঃ।।

আসাপু । সাক্ষিত্ত পুীতিভাষ্যঞ্চ দানত পুছণমেবচ। বিভ মাণানি । জা ভাতরঃ হুষ্টান বিছক্তাঃ কথঞ্চন। যেবাসে তাঃক্রিয়া লোকে পুবল্পজ্জেষরিক্থতঃ। বিভক্তা নবগছেযুর্লেখ্যম পাস্তরেণ তান্। । সাহসত হা বর্ণন্যাসঃ পুর্ণিভাগত রিকিথ্নাত। অনুমানেন বিজ্ঞের নস্যাতাত প্রসাক্ষিণে। ২ । বলানুবল্প ব্যাঘাতা হোটি সহিদীভাবক । স্বস্য ভোগঃস্থাব রস্য বিভাগস্য পৃথক্ ধন । পৃথগায় ব্যৱধনা । ছসীদঞ্চ পরস্পার । বিণিক্ পথঞ্চ যে ছযু ত্রিক্ত জাত্তে ন সংশয়ঃ ।। ইতি নার্দ বৃহস্পতি কাতা। যুন বচনানি ।। ১৪৭।।

পূলঃ — গোষ্ঠার মধ্যে যদি এক অংশী দুরদেশে গিয়া থাকে বহুকালানন্তর বিভাগের পরে বা পুর্থে যে কিম্বা তাহার পুঞ্জ পৌত্রেরা আইসে তবে তাহার। নাধারণ ধনের অংশ পাইবে কি না।

জানে।) দারাদানাং মধ্যে যঃ কশ্চিদ্বস্থকালং দেশাস্ত্ররগ ন্তর্মণ ঠতঃ পশ্চাৎ কৃতে২ কৃতেবা বিভাগে যদি স কিয়া মৃতপিতৃকতৎ পুত্রপৌঞ্জ পুপৌত্র পুত্র পৌত্র পুপৌত্রশ্চা গডাঃ ভবন্তি তদা সাধারণধনস্যাংশ্ ভাজঃ স্যারিতি বিদুষাং সন্মতং ।

য়সাপু) কৃতেং কৃতেবিভাগে বা ঋকথী থক পুদৃশাড়ে।
মাণানি) সামান্য চেন্ডবেদ্যন্ত তক্ত ভাগহরন্ত সং । ঋণ
ক্ষেত্র গৃহ লেখা যাস পৈতামহ ডবেং। চির
কালপুোষিতোপি ভাগভাগাগতন্ত সং । গোক্ত
সাধারণ তান্ত্র যোলাদেশ সমান্তিং । তত্ব
শ্রাগিতসাংশঃপুদাতবাল সংশয়ং । তৃতীয়ং
পঞ্চনশৈতব সপ্তমোবাশি য়োভবেং। ক্ষমনাম
পরিজ্ঞানে লভেতা শ ক্ষমাগড় ।। ১ ।। বং
পরক্ষারয়া মৌলাঃ সামস্তাং বামিন বিদঃ । তদ্ধ

শ্বসাগত্নী শৈ শৈতব্যা গোত্ৰজৈৰ্নহীজ্ঞি স্পতি পূজাগতি বচনানি ॥ ১৪৮ ॥

পূন্ধ — মধ্যস্থদারা বিভাগ নিশ্চিত হইলে পরে পশ্চাণ বিদেশাগত ব্যক্তি যদি বান্ধবাদি নিকটে স্থিতি আপন বিভাগকে মন্দ্রভান করিয়া স্বীকার নার্থ রে তবে পুনর্বার বিভাগ হয় কি লা 11

আন্যো } শান্ত্রীয়বিভাগস্তু সক্তদেব ভবতি তত্ত্ব যদ্যেক ভর স্থাসংমভিস্তদা তেনান্যভাগং গছাতব্যং বিভাগ পান্ত্রিক দিতি সতাং মতং॥

অস্যপু) সক্দংশোনিপত্তি সক্ৎ কন্যা পুদীয়তে । সক্ মাণানি) দাহ দদানীতি ত্রীন্যেতানি সক্ৎ সক্ৎ ।। ১ ।। ইতি মনু বচনং ।। ১৪৯ ।।

পুশঃ — মধাস্থিত লোকের দিগের অন্ধন্ত শুকুজ যদি বিসদৃশ বিভাগ হইয়া থাকে দুর্বি এ ইইয়া ছে বলিয়া সকল ভ্রাতারা তাহাতে সন্দেহ করিলে পুন্র্বার বিভাগ হয় কিনা ।৷

আন্সো } বিভক্তানা সর্বেষা দায়াদানা পুঞ্জ বিভাগে ভর
ইয়াদ বিসদৃশ বৃদ্ধি ভবতি তদা সর্বনেকী কৃত্য বি ভাগঃ কর্ত্য ইতি বিদা সম্মত ।।

আসাপু } বিভাগে যত্র সন্দেহো দায়াদানাং পরস্পারং। পুন বাং । বিভাগঃ কর্ত্রা পৃথক্ স্থানস্থিত সনু বচনং।। ১৫০।। ্ পুশঃ — যে ব্যক্তি আপনি ইচ্ছায় অংশ বিবেচনা পূর্বক লইয়া পশ্চাৎ বলে যে এভাগ ভাল হয় নাছি সকূ ল্ একত্র কর পুন্নার বিভাগ করিতে হইনে সে স্থানে কি কর্ত্ব্য ।।

আম্যা বিভাগ স্বীকৃত্য যঃ কশ্চিৎ পশ্চাদুবিভাগ ভর ইতি ক্থা বিপুতি পদ্যমানঃ স রাজ্ঞা নিবার নীয়োই ভাগুছে দ গুশেচতি বিদাণ সম্মত ।।

অসা) স্বেচ্ছাগতবিভাগো যঃ পুনরেব বিসং বদেং। স পুমাণং) রাজ্ঞাংশে স্বকে স্থাপ্যঃ শাসনীয়োনুবন্ধ কৃদিভি বৃহস্পতি বচনং॥ ১৫১॥

পুনঃ — পিতার অবিদ্যনানে গৃহের রক্ষক জ্যেষ্ঠ অথবা অন্য কোন যোগ্য ভ্রাতা যদি লোভাক্ট হইয়া কোন ভ্রাতার অংশ বঞ্চনা করে তবে সে পাপ ভাগী এবং রাজার নিকটে দ্বাহাইৰে কি না।

অস্যো) পিত্মরণান্তর° যো গৃহা ধাক্ষাভাতা লোভা ভর° > দনাভাত্ব্ভাগাদ্ধগ্যতি স রাজ্ঞাদজ্যো নির°শী চকর্ত্বাঃ ভাুাত্রাদি বৃদ্ভিচ্ছেদজনা পাপাভাগীচেভি বিদুযা° সম্যত° ॥

অস্য } যো লোভাদ্বিনিজরী ত জ্বোষ্ঠো ভাতৃণ যবীয়সঃ ব পুমাণ বি সোহ জ্বোষ্ঠঃ স্যাদভাগশ্চ নিয়ন্তব্যশ্চ রাজ্ভিঃ। ১ যো বৈ ভাগিন ভাগামুদতে চয়ত এবৈন সম্দি চৈন॰ মচয়তে ২থ পুত্ৰমথ পৌত্ৰঞ্চ চয়ত ইজি সমূ পৌতম ৰচনে ॥ ১৫২ ॥

পুনঃ — জ্রাচারা বিভাপের পরপরস্পরঅধুনতিবাজিরেকে আর ব্যার ও সাক্ষ্য প্রাতিভাব্য এবং আশন স্থাবিকের কান বিজ্ঞান করিতে পারে কিনা।

অবেগা বিভক্তা মন্তর ভূতিভিঃ পাক্বলি বৈশাদ্বায়

নায় প্তিভাবাৰেথাসাক্ষাহাবরদানবিজ্ঞানুতি

গুলান্ত প্তক প্ৰস্লাৰ্যা যন্তু ব্যুম্পতিবচন বিভ

ভা শ্বিভ্তা বা সপিশুঃ স্বারে সমাঃ। ভাজ্

নাশ, স্বল দানাব্দন বিজ্ঞা ইতি পিবি

ভা মুন্নি বাৰ্হারসৌকার্যার্থনে তিপাদ

হতি গুলাদ্যুম্নতিবদিতি স্বার ই নিয়ন্ত

সাক্ষ্যাদ্বিগনে বিভাগাবিভাগনিগ্রোদ্দান্যঃ

সাহ কালান্তরে। সভান্ত্র্মুম্নতা বিভাগনি

গ্রানপেক্ষা এব ব্যবহারঃ সিদ্ধাতি স্থান্থ

ভা দত্রাদিত্যাশায় ইতি বিভাগেশারা দয়

ভা দত্রাদিত্যাশায় ইতি বিভাগেশারা দয়

ভাল্যকতঃ বিভক্তা যদ্যুন্নতি স্বভিত্তি ভদা

ব্যবহারসৌকর্যামাত্র° তবতি। যদি ন দ্বস্থিত থাপি ন দানাদ্যনিক্ষান্তির্যতঃ কৃতে বিভাগে দ্ব দ্বাক্ষানা দুর্বাক্ষানা দুর্বাক্ষানা ক্রিপ্রতিপত্তিশঙ্কা পূর্বাক্ষানা দিকরণে কা বিপ্রতিপত্তিশঙ্কা পূর্বাক্ষানা দানবিজ্ঞানিক প্রাাবিরোধেন প্রার্জিত দুবাসা দানবিজ্ঞানিক পিতৃদুবাসিবরাধেন প্রাজ্ঞান ওদ্পি দানবিজ্ঞানিক প্রাজ্ঞান ওদ্পি দানবিজ্ঞান

পিটি তাংগক্ষন তিও রোঃ পিতুর্যাদার্থ ন তু ান্য তিলাভার্যনিতি বিদাং সমতং।।

আজনপু । কাজি হা বুং কিভাবাঞ্চ দানং পুহণদেবচ। বিজ

লাগনি) জা ভাতরং লযুগ্লাবিভক্তাঃ ওরণপরং ॥ ১॥

বলেব হাতা বহুবঃ পৃথপ্তমাঃ পৃথক্ জিলাঃ।
পৃথক্ নভাগোপতা নচেৎ কাৰ্যোলু সন্বালাঃ।
অভাগান্যদি দদ্যতে বিজ্ঞানীযুং রখাপিবা ।
জ্যুব্থেষ্ট তেৎ গর্মীশাতে অধনন্য বৈ।।

একপাকেন ধসতা। পিতৃদেবছিজাজনিত। এক ভবেছিভজানা। তদেব সাংগ্ৰেছ গৃছে ।। ২ ।। ভাতৃণামথ দম্পতো। পিতৃঃ গুল্লনা গৈব হি । পুৰিভাবাস্থ সাক্ষা নবিভজেন তৎ শৃতণা। থা ইতি নায়দ বৃহ**্পতি যান্তবল্য বচনানি ।। ১৫৩ ॥**

ইতি দ, হবিভাগসা ত্রিপঞ্চাশক্ত বিধিকা। দায় দত্তকস্থাক্তে ব্যবস্থাঃ সমুদীরিতাঃ।। ইতি।। 'n,

॥ দায়ভাগসা ক্রেড্পত্র ॥

পূশুঃ — বিবাহ কালে জানা হাকে শ্বন্ধ যদি কিছ্ ভুন্যা দি দিয়া থাকে পুৰস্থার ঐ জানা হা আন কা বিবাহ কলে পশ্চাৎ দৃই জ্ঞান সন্তান রাখিয়া ঐ ব্যক্তি লোকান্তর চইলে পূর্বশ্বন্তা কভ ভুন্যাদি পুরস্থাক্তি প্র পাইবে হি মহল পুরেরা স্যাপন ক্রিয়া অইবে ইতি ।

আলো।) বিবাহনময়ে পালরেণ জালাভারমুদিশা যৎ
ভার॰) ভাবরাদি ধনং দত্তং তত্ত্র তস্যাভি মঝিন্ন মুহতু
দৌহিতাগানিদং ভববিতি পূর্ব পত্নীজাত প্লাণাং
তত্ত্বাধিকার ইতি স্তাং সন্মত্ত ॥

অসাপু বিবাহ কালে যথ কিখিছৱা আদিশা দীয়তে।
মাণ কন্যায়াস্তভ্তবেদি ভ্ৰমবিভাল্যঞ্চ বন্ধু ভিরিতিব্যা

স্বচন । অন্যদ্পি পামানিকবচন ধদ্ত দুহি
ভঃপত্যে স্তিয়মেব তদ বিয়া । মৃতে জীবতি বাপ
তৌ তদপত্য মৃতে স্তিয়া ইতি ।

॥ অথ দত্তকৰাবস্থানি গ্রঃ॥

ূলং — - উর্ল ্লাভারে ইদানীস্তবোক সক্র মন্ত ংল ১৮০ হৈ পুল করিছে পাচ , হি মান

লাম্ব ্ৰ ক্ৰিয়েয়াল' শ্চ জেন্ত গৌনসুত্ৰ **পুনঃ ।** প্ৰায় ক্ৰিয়াল বিষয়ে ক্ৰেইটা হস্ত্ৰ জ'ট বিষয় গান্**ড জটনঃ।** প্ৰায় বিষয়ে প্ৰায় বিষয়ে শ্ৰে**য়াল গাড়িছ গাড়িছ ।**

পু্ৰ: --- অপ্একৰাজির দত্তকপুপ্ৰগুছণের আষশীক্বিধি আছে কি যথা স্বেচ্ছা য়

আসো । পুরামনিরয়ভাগাৎ গ্রেহবাৎ সল্যভাবতঃ পিণ্ডো ভর॰ । দক জিয়াছেজোর্মান সংকীর্নায়চ । দভএবৌর সভাবে সর্বর্গেশ সর্বা। পুরুপুতিনিধিঃ কার্য্যঃ সর্বশাস্ত বিদাং মতং । অন্যথা পুতাবায়ঃ স্যাদ্রি ধিত্যাগাৎ পর্ব্রচা পির্ণাদ্বিশুক্তরায়াতি স্বর্গো পি শাস্ত্রতঃ ।। অস্যুণ ব্যুপ্তেশের কন্তব্যঃ পুলপুতিনিধিঃ সদা বিজ্ঞোত নাগানি বিক জিয়াহেতে গ্রাম স্থাৎ পুষত্নতঃ ।। ১ ।। জপু প্রেণ সূতঃ কার্যোগ্য বাদক্ তাদক্পুষত্নতঃ বিজে দক জিয়াছেতে লানসংকীতনায়ত ।। ২ ।। জায়মা গো বুল্লাজিভিজানবান্ জায়তে বুল্লাফিলি ক্ষাবি নাল নালি বিজ্ঞান কার্যাজনি । ২ ।। এ ।।

থ্যবাজনি হিঃ পুলী হজা বুল্লালিত জিন্দু
বচনোগ্রাকাল বিজ্ঞান ।।

পুত্র — দত্ত পুজের লক্ষণ কি !!

পুশু: — জ্রীলোক আগন ভাষ্ট্র মত্র পুদ্ধ করিতে বা দিতে পারে কি ভা

আসো । ভর্ত নুজাং বিশ্ব করি জারিন সূতং। অপু
ভর
 ত্রেণেত্যনেনিভি নির্ধানিক বেছিল।

নুজ্যাপি গুভজন্মে করি গড়ং বিদুর্যথা। তথা

তস্য পুতিনিধিকরণে ইপি নিনিভ্তা।। তথাদা
নেপি বিজ্ঞেরং সর্থনাজ বিদাং সতং॥

শি জা পুত্র দ্বাহে পুতি পুক্রারারানাতানুজানা ভুত্র উজ্লোগি তসন্তবঃ পুক্ষো মাতাপিত্ নিমিত্তকস্তমা পুদানবিক্র পরিত্যাগেষু মাতা পিত রৌ পুত্রত ইতি বশিষ্ট বচনং ॥ ৪॥

প্রাং — দুর্ভিক্ষাদি সমধ্যে শ্রীলোক পতির ঋনুমতি ব্যতি রেকে পুত্র দান করিতে পারে কি না ॥

व्यत्मा । भागा का विमाणि वी प्रकार मगार मगारि । वदः । व्यारशाव नुसरका है। भाग विमाणि ॥

শতি পিতৃত্য'নুং সৃষ্টিয়ের রণ্যতরেও বা ॥ ১ ॥

লগৎ কলি চ কত্ব্যা দানং বিক্রয় এববা

লগ্যান প্রভেতি ইতি শাস্ত্রিশিক্ষ ইতি

বেবল কা জন বচবেয়া ও ॥

St. 18---- (A) (1) 1 - 18 1 - 18

ক্ষাৰ বিষয় প্ৰায় কিছিল প্ৰায় কিছিল। নৈকপুৰ্ব কিছিল সভা । বৈকপুৰ্ব কিছিল সভা বিষয় কিছিল।

জ্ঞান বিভাগ কর্মান ব্রদান ক্ষাচন। বহুপুত্তেশ প্রাথ প্রাথে) ব্যবহার পুরুষ প্রায়তঃ । । । নত্তেক পুত্র দ্যাথ পুতি বিভাগ সহি স্থানায় পুর্বেষ। মিতি শৌনক বশিষ্ট বচনে । । ৬ ।।

প্রাঃ — যাহার দুই পুত্রস্থাতে সে ব্যক্তি এক পুত্র দিতে পারে কি না ॥ আন্যো } বিপুএন্ত পুঞ্জনান কর্তুন শকু রাৎ কৃষ্ণিং । দৈব।
ভর

দকস্তে নপ্তেম পুঞ্জ সাদিতি স্বরং। অনুদেশ্র
পুচলিত চন্দ্রিকাকার সন্মতং।।

অসা) একপুলোহ পুলোমে মতঃ কৌরবনন্দ । এক॰
পুমাণ) চন্দুর্যথা চন্দুর্নাশে ভস্যান্ধ এব স ইতি মহীভারতে
শান্তনুবাক্য । ৭।

্পুন্নঃ — অনেক পুঞ্জের মধ্যে কোন পুজ্জে দান করিছে।
পারে॥

অস্যো } নদাতব্যোজাইপুঞ্কনিষ্ঠোনধ্যমোধবা। দেয়ঃ
ভর॰ সাজে নিগদিতঃ শ্রিভিত্ত পুরাতনৈ ।!

ৈজস্য) ন জ্যেষ্ঠ পুত্র দদ্যাৎ । ১ । জ্যেষ্ঠন জা ত্যাত্ত্বন পুমাণে) পুত্রী ভবতি মানবঃ। পিভূণা মন্ণশৈচৰ স ভ্যাৎ সর্মান্তি। যদ্মিন্ত সন্নয়তি যেন চানন্তামশূতে। সূত্রৰ ধ্যাজঃ পুত্রঃ কানজানিত্রান্ িূর্তি ্ বৃশিষ্ঠ মনুবচনে। ৮।

পুশুঃ --- কোন সলছইতে গুত্ত গুহুণ করিৰেক।

জন্যা) সপিগুলাসগোত্রালা কর্ত্তরঃ পুত্রসংগৃহং ! তদ্ভা ভরং) বেস্বজাতো তু সর্বেষাসপায়ং বিধিঃ । সম্বন্ধসা। বিৰুদ্ধোষ ইতি শাস্ত্র বিদাং মতঃ ।

 ভাগিৰেয়ঞ্চ মাতৃষস্মৃত বিনা। ব্ৰাহ্মণো ব্ৰাহ্মণ পুষ্যেৎ নকভবোন্যতঃ কৃচিৎক্ষ ত্ৰিয়াণা স্বজাতী তু গুৰুগোত্ৰসমেইপিবা। বৈশ্যানা বৈশ্যজাতী যু শুদ্ধাণ শুদুজাতিষু। সর্বেষাঞ্চৈব বর্ণানা জাতিষ্বে নচান্যতঃ । ২ ॥ স্বজাতীয়সূতো গুল্ভঃ পিশুদাতা স্বাক্ত্যভাগিতি শাক্তনশৌক বিল্যু বচনানি। ১।

পুশঃ — শুদুেরা দৌহিত্রকে এবংভাগিনেয়কে দন্তককরিতে পারে কি নাঃ

অস্যো প্রিক্তি ভাগিনেয়ে বা গুলিং শূদ্ৈ বু সর্বদা।
ভর ব্যাক্ষণক্ষত্রিরবিশাং বিধিনাস্তীতি সূচিত।
অস্যপু ব্যাক্ষণদি ত্রে নাস্তি ভাগিনেয়ঃ সুতঃ কৃচিৎ।
মাণং বিদীহিত্রো ভাগিনেয়শ্য শূদ্রেস্ত ক্রিয়তে সুত ইতি
শৌনক বচনং। ১০।

থে পুকারে দত্তক গুহুণ করিবে তাহার ইতি কর্ত্রাক্স যাসূর্তি শৌনক ঋষি এবং গৌতম ও বশিষ্ঠ করিয়াছেন তাহা । পৃথক২ পুকাশ করিতেছি।

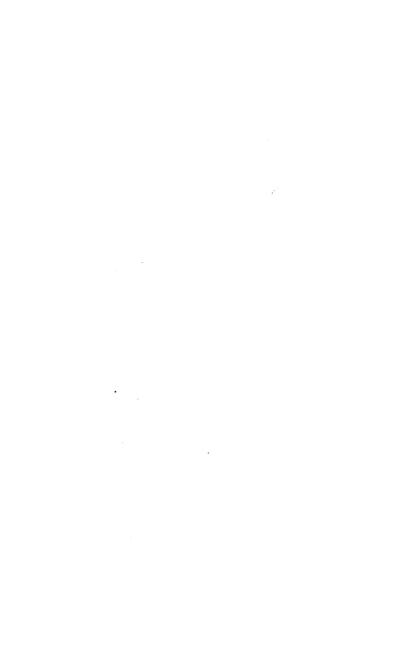
॥ অথপুত্র পুতিগু হ পুকারঃ॥

শৌনকোহণ পুবক্ষানি পুত্রণণ্ড্রমুক্তমণ । অপুত্রো মৃত পুত্রোবা পুত্রার্থণ সমুপোষ্যচ ৷৷ বাসসী কণ্ডলে ছত্রসূফী শংচাণগুরীয়ক ৷ আচার্যাণ ধর্মসংযুক্তণ বৈফব বেদপা

त्रण ॥ मनुदार्क्य मण्युका बाकालः व विवृत्ति अधीनु । सन्तू नारुद्ध नर्शा छ शुभिषाभिन अवह। रख्य नःस्वाः उत्राप्ता दृष्ट-ণা॰শ্চ বিলেষ ভঃ। বহিঃজলসর টের পালাক কেন্দ্রাসং । **এতানাদৃত্য বন্ধু শেচ**জ্ঞাতীনাভ্র বহুতঃ । জ্বাধিদানিজ ভত্ত করাহোৎ প্রদান্তক । । দাত্র বসক বর্ষচপ্তংদ 📆 বাচয়ে । দানেসমর্থে দাতালৈ য়ে যটেজরিতিপঞ্চ ভিঃ।। ততেৰিতা অচন্য পুৰাৰায়ম্য দেশকালী চদংকী তা শ্রীপরনেখর প্রীভার্থণ প্রদানমহণ করিয়ো। ইতি সংক ब्रागः। न॰ न॰ नृष्ठा ठाउमु खिष्ठेम् शक्षमान् देश शूबमारनियाः। यक्तिमहिक । शामनाति यक्तिता । है अटड हेव॰ शुद्ध उत्रास्त्र কর্ণাপাকরণ পুলামনরকভাগ সিদ্ধার্থমাত্মণঃ শ্রীগরমেশ্বর 🗟 शींजार्थ जूजाबर ने शुरेत । न मम शींज गुरीजूः शूखा ভবান ইজ্যক্ত। পুতি গুহীতৃহত্তে সঙ্কেত জলং নিঃক্ষিণে । ভতঃ পরিপুহীতা পরিগৃহ্লাতি ধর্মায় স্বাণ পরিগৃহ্লামি সম্ভ তৈয় ত্বা° পরিগৃহ্লামি। তথাদেবস্বাহ্বতি নত্ত্রে। হস্তাভ্যা° 💽 পরিগৃহ চ। অসাদ্যাদ্ট॰ জ্ঞা আবায় শিশুমুর্জনি। বজা দিভিরল° কৃত্য পু্ুজ্লায়াবহ° সুত°। মৃত্যগীতৈশ্চ বা দৈয় ***6 श्रिलंदन*६ म॰यूउ॰। গৃहमत्या उ**मावाय हक क्वा वि - **ধানতঃ। যস্তাদৃতে**ত্ৰু চাচৈত্ৰ ভুৰু সংগুৰু চৈত্য়া । সোমো দদান্বিত্যেতাভিঃপৃত্যুচ°পঞ্জিত্তথা। বন্ধনৌ চমস্তু পায়স° ত্ৰৰাজ্য চশতসংখ্যক্ষ হোনয়েৎ। পূজাপতেনৰদেতানি ত্যুদ্দিশ্য পুজাপতিং। দক্ষিণাং গুরবে দদ্যাং ৰণাশক্তি ৰিজোভনঃ । বলিগোপি । পুৰু পুতি গুহীবাৰুৰ নাহুর

রাজনি চাবেদা নিধুবশনসা মধ্যে বাাছভিভিছ**্থা অদূর** ্ বাক্ব° বজু সন্নিক্<u>ট</u>এব পুডিগ্<u>ছীয়া</u>ৎ।১১।

সামগানামিভিপ্রোক্ত যজ্বেদিমতেপুনঃ। কথয়ানি भशासिन् यथारिवास्ता नुवी । अथ शूब्रशृ छ शु इविधि । ব্যাথাসি)ানঃ। শুক্রশোণিভদম্ভবঃ পুরোমাতাপিত্নিমূত্র কঃ ৷ ত্যা পুদানপরিত্যাগবিজ্ঞয়েশ্ব মাতাপিতরৌ পুঁ জুকী তঃ। নত্বেকং প্রাণ্ডলাও প্রিণ্ড্রীয়াদা দহি সন্তানায় शृह्याः । गद्धी शूदः मगाह शुक्तिगृङ्कीगाविशा**नानुकाना** खबुं है। প্রিগুছীয়া ক্র্লাতে ছেবাসনী ছে **জগুলে ३**°গুরী য়ক° চ আচার্য্য' বেদপারগ° জশনয়'বহিঃ প্রাশময়মি খুমব কুর রাজনি নিবেদ্য পরিয়দি চাগারমধ্যে বুঁক্ষিণা নল্লেন পরিতোষ্য পুণ্যাভ্রু স্বস্তিঋদ্ধিনিতি বাচয়িত্বা অথ দেব যজনোল্লেথেন পুৰ্ভ্যাপুণীতাভাঃ কৃত্বা দাতুঃ সমকং গতাপুত্রণ নে দেহীতি ভিক্ষেত দদানীতি দদ্যাৎ ধর্মায় ত্রা মহং গৃহানি সন্তত্যৈ আমহং গ্রামি ইত্যথৈনং বত্রজগুল ভাাম অরীয়কেন চালফ্ভা পরিধানপু ভূতাগ্রিমুখাৎ কৃত্যু পারসেন জুহোতি যন্ত ছাদাকারিণামন্যমান ইতি পুরোনু বাকামনূদা যদ্মৈ অ॰ শকাতে জাতবেদ ইতি জুহোতি । অথ ব্যাঝতিভিছ আ স্বিষ্টিক্ৎ পুভৃতিসিদ্ধনাধেনুরবদান দক্ষিণা॰ দদাত্যেতে চবাসদী পরিধায় এতেহওলে এত চ্চা গুরীয়ক ততঃ পাক্ সক্তি স্বস্তিব চন নানিন্দাদাদি পূর্বক জাতকথাদি সংকারান্ স্বর্হীত।। ১২ ॥



বজ্াচাধিকারিণাস্ত্রিতি বিশেষমাছ শৌনকঃ পৰিত্রপা वि शावाना यमा प्रमकात्नी ह न की छामम अशुकादनुयुक গৈতৃক্ঋণাপাকরণ পুলামনরক্তাণ্যারা প্রীপরমেশ্বর পুর ত্যথাশোনকোক্তবিধিনা পুঅপুতি গুহুমহণ করিয়ে ৷ তদ क्राक्रे चेखि शूगोहराहनः चाहार्यातत्र बाहार्यमा मधुनार्व ণাছনং বিষ্ণুপুজনং বন্ধুবৰ্গ ব্ৰাহ্মণে ভো**ন্নদানং চক্ৰিক্যৈ।** जराकी निर्दिष्ट्रजांत्रिकार्थः भगशिष्ठ शूक्तमाहः कतिर्या 🕼 ইতি সংকল্লাবরণান্তং কৃত্বা মধুপর্কান্তে পিতৃণাং ছলদেবত 📑 ত এবনাং প্রীতার্থ ব্রাহ্মন বন্ধু শেচ ভোলয়ে **। ভত**ু গাচাৰ্যো দেশকালো সংকীত্য যজমানানুজ্য়া পুলপুতিনি ধি গুহারত্বেন বিহিতহোম করিষো ইতি সংকল্লাগ্লিপু ত্যাপানান্ত ক্ষাধান স্বৰ্যাৎ। চক্ষুসী আজোন ইত্যন্তে ইত্র পুথান সকুদ্গি, ষদ্বার সুর্যাসাবিত্রী অফণাগি বায়ু সূর্যাণ পূজাপতিও চাজ্যেন শেষখিষ্টি কৃতনিত্যাদি অষ্টাবিং শতি মুষ্ট নিৰূপ্য তাৰৎ কৃত্তঃ প্ৰোক্ষ্য আজ্যোৎ প্ৰবনাস্ত•ি ক্ষাবান্ধনৈঃ সহ দাতুঃ সমক্ষণ্গচ্ছেৎদাতার পুতামেপুত্র দেহীতি ব্ৰাহ্মণ**দারা যাচ্ঞা॰কারয়ে** । ততঃ **ছভিনোমিমী** তামিত্যাদি মত্ত্ৰৈঃ স্বপৃহমানীয় হস্তৌ পাদৌ পুক্ষাল্যাচন্মা ্লেঃ পশ্চিমতোমাতুক্ৎসঙ্কে অদক্ষিণতোবালমুপ্ৰেশা আচাৰ্য্যো দক্ষিণ তঃ ষয়মুপৰিশেৎ। তত আচাষ্ট্যোৰহিষী স্তরণাঘারাজ্য ভাগাস্ত স্বর্যাৎ চক্রমবদানবিধিনাবদায়স্থ ও্তৃতাকী বিশেতিদ্বয়ো রাত্রয়ো ব্ছশ্রুত**্। ঋষির**াপুর্দে ব্ৰতাৰিষ্টুপ পছনঃ ৷ প্ৰপ্তিগ্ৰালগোচা বিভিন্নাল

যকুহানে বি থাগ ছয়ং জনে গাঠিছা স্বাহেতি জুহুযাদ্যা দানঃ স্থায়ে ইদং। পুনর বার তৃতা নগ্নে ইতি মন্ত্রনা সুর্যা।
সাবিত্রী থায়ে সুনানাবিত্রী দেব হাছে অনুষ্ঠুগৌ ত্রিজনানী
চতুরা তিষ্টু প্রথমনা নষ্ট্রগ। পুনরবানা পঞ্চিজ্ ইয়াহে।
সর্বত্র সুন্যাসাবিত্রা ইতি হ্যাগঃ। হতে নহান্ত নমন্তর্মহাব্যা
হাতি হাজা হা বিভিন্ন দিনে হাল সমাপ্যাচন য ধেনুং দদ্যাহ ব্যক্ষণান ভোজ হোল ক্ষাণঃ সংপ্রতা বিহ্যাইরাপনিং স্থবা হি ইতি পৌনক্ষাক্ত প্রতারিগুল কারঃ ।। ১২ ।।

আসাপু । যদি বাক্তসংকারো যদি বাতীতলৈশবঃ। গুহুণে
সাণানি । পঞ্মান্ত্রাত্ পুলেষ্টিং পুথমং চরেত্যা । যাবুকাব
চ্চ স্কানার্থা বিপ্যাণাংপঞ্চমে শুভং । পূর্বং বিবা
হাচ্ছু দুনিং গুছুঃ সন্ডিঃ পুতিষ্ঠিতঃ।। ২ ।। অন্য
শাথোন্ডবোদতঃ পুতদৈচবোপনায়িতঃ। স্থাগেরে
গ স্থাথোন্ডবিধিনা হস্ত্রশাথভাক্।। ৩ ।। দত্তা
দ্যাহাণি তম্মাণিজগোরেণ কাব্তা আয়াজি

পুথতা প্ৰাগন্ধীয় সম্ভবাইতি শৌনক মনু ঘশিষ্ঠ কালিক। পুৱাণ বছণানি 11 ১৩ 11 পুৰাল শৌনকোক্ত দত্তক বিধান ব্যতি রক্ষে যদি কোন ব্যক্তি পুথ গুহুণ করিয়া থাকে যে দত্তক মিদ্দি হয়

ં વિનાહ

আনো । শৌন ছেকেবিবিন। কৃতোদন্তঃ সুসিদ্যাতি ।।

বিনা বিত্তানন ক্তে। দাসইতা ভিনীয়তে ॥
পুনিভু ঘন ভাগুস্যাদিতি শান্তেবিনিশ্চিত ॥

্বনাপু । অবিধায় বিধান খং পরি গৃহ্ণাতি নন্দন । বি

াব । বাং বিধিনাহা ত' ব ধ্যাদ্দন ভাঁজন ।। > ।।

চ্ডাদ্যা যদি সংস্কার। নিজ্পোদেশ বৈক্তা দ্ভা

দ্যা স্তন্ত্রাক্তে সারন্যথা দাস উচ্যাতে ॥ ইতি বিধা

ন্যালা শৌনক বচনে ॥ ১৪।।

পুনঃ—— দভক খুত্র জনকের গোত্র ত্যাগ করিয়াছে কিন্তু মে নোত্রে বিবাহ করিতে পারে কি না ॥

অলো) জনকনা সলে চানা দত্তকনা স্থিত।। পঞ্চী ছবং । সভনীটেন বিবাহনা বিরোধীনী ॥ পিতৃ মাতৃদ্ধ লে জেয়া সর্বাাস্ত্র মতন্তিদং ॥

জ্মাপু) উদ্ধান পাত্ৰজ্ ভাঃ ৰাজিনশ্চ মাত্ৰজু নাণানি) ভাঃ পঞ্চনাৰ ॥ ১॥ আস্থ্নাৰ পঞ্চনাত ৰজু ভাঃ পিতৃ নাতৃতঃ ॥ ২ ॥ নপিওতাতু বিজ্জো গোত্ৰতঃ সাধ্যেশিক্ষী ॥ ৩ ॥ উদ্ধেহ পিতৃ

मखोस मधमी॰ शक्षमी॰ विना ॥ १॥ ७५ मुक পুকারেণ পিতৃবন্ধযু সপ্তমাং। উদ্ভূমেব বিবাহ্ षः शक्षमात्रा वृद्धा है।। शक्षमी मध्मी **ইঞ্চৰ মাতৃতঃ পিতৃতস্তথা ৷৷** ৬ ৷৷ প্ৰত্ত**ি** ছে পু क्काना॰ नीमनक्षुः मिलका। गर्मी मिल्रेकी १ १८ **গোত্র তথ**্যবিক্ষা তেতিগৌতন্**র্য**ালত সতু মার্ক্তের পুরাণ বিশ্বরণসন্তর বশিষ্ট রুল্ভার বচনানি ॥ ১ : ॥

পুশঃ — বিবাহের নিমিত্তে এপুকার পণিওতা করিয়া/ ছেন বটে কিন্তু সংগ্ৰাহ দতকেব স্থিতি ভারত কিছু বিশেষ আছে কি না ॥

মধ্যো । সাপিন্ডা ছিবিষ প্রোক্ত নিডেনবিষ্ট নছ । **७त॰** । जनकमाञ्चित्रकार गुरीतृशीय प्राथम । जनायाः (िष्ठमात्मन साणिष्ठाः माष्ट्रि लोक्यः । हान **পুথ**িবুরতভুবানাবুপলভাতে। ন বিবাছ । তেও 😘 ত্রত্বাৎ সালিগুয়াচ্চ পিতৃঃ স্ত 🕕

অস্পু) যাবস্তঃ সিতৃবর্গাঃ স্মুস্তাবডির্নড্রেময়ঃ । শু মাণানি 🕽 তানা যোজন স্বুটিঃ স্কীয়েঃ পিতৃভিঃ নহ ছাভ্যা॰ সহাথ তৎপুলাঃ পৌলুহৈচকেন কৎ সম॰ ।। চতুর্থে পুরুষে চ্ছেদণ তক্ষাদেষ। ত্রিপৌৰু ষী। ১। দত্তকানম্ভ পুত্রাণ সাপিঞ্চণ স্যাঞ্জি (लोक्य॰। जनकमा घरन उधर्ग्रीयू तिजिधा

জগা। ২ ।। সগোত্তেতু কৃতাংগ্ৰুদ্ৰভালি । বর্তাঃ বিধানা গোত্ততা থান্তি ন সাপিন্তা বিধা প্রতি । বৈভিকাফ জিনি হার্তাত গৌতম ব্রুদ্ধানি । ১৯ বং

ুটা হৈ তাল প্ৰান্ত হঠাত প্ৰস্কু গুহুণ করিয়া থাকে।

তাল তালাইন লাভকভাৰত প্ৰতিক্ৰের অলৌচ ভাগা

তা বি প্রের প্রত্তক্ষা পরশার । নস্যাদ বি বি বি জার বিশাস্থিতিবিস্কানার ।।

(বার্তিকে বিনিয়ান্তিবিদ্ধিরেদ্রিসংসূত।গোত্ররিক্থা নাম বি বিজ্ঞানি বি শ্রুবির অদ্যাত ইইবে ।।

আন বিভারে বি শ্রুবির অদ্যাত ইইবে ।।

েতা, ৰূপ্তিশাৰণ ব্যৱতিশীত পুৰীত্যতিক**লা চানিরণে**ক্ষা বিভাগৰ বিদাপনিগতি নাত**া আপু,তাগো**ক্ষিত্ত ভালা একা**ংলচ সপিভিনাণ। এতকু গৌড়দে**শীয় পভিতৈ নি**হ গৃহতে**।।

স্তকে স্তকে চৈব তিরাত্র° পর পূর্রাঃ এক।
ানি ∫ হস্ত সপিগুনাণ তিরাত্র° যত বৈ পিতৃঃ । ১ ।
ভিরগোত্রঃ সগোত্রোবা নীতঃ সংস্কৃত ইচ্ছয়ৢ ।
জননে মরণে তসাত্রাহাশৌচণ বিধীয়তে । ২ ।
ঔরসণ বর্জয়িত্বা তু বির্বাণেষু সর্বদা । কেত্রজা

দিযুপ্তেষ্ জাতেষু চ মৃত্যু চ । জালীচন্ত জিরাজ্প্যাৎ সমান্মিতি বিশ্চয়ঃ । ৩ । পর পূর্বাষু ভার্যাষুপ্তেমুক ক্ষু চ । ভূর্গোজে জিরাজ্প্যাদেকাহন্ত নপিঞ্জিনাপ । ৪ । জন্যা শূতেষু দারেবুপরপদ্মীসুতেষু চ । গোজেবঃ দ্লান শুদ্ধে সু জিরাজেবৈর তত্রিদিতি মর্লিপরাশর বুদ্ধপুরার হারীত পুজাপতি বচনানি । ১৮ ॥

পুশঃ — দভকের পুহীভূপিত। লোকাস্থর গৰন করি ল ভাহার অশৌচদত্তক ক্য়দিন করিবে।।

জ্বেশ । দশরত্রনশোগর দত্তস্য ঘটতে নতেই । তথা পি ।
ভারত প্রতকার্যার্থ পুর্ধানোচং বিধীয়তে । চূড়াঞ্জি ক্রণান্তন্য জাচার্যার্থ মহাওকঃ ।

আসা) গুরোঃ প্রেতসা লিষ্যন্ত পিত্মেধণ সমাচন্ ।
পুমাণে) প্রেতাহারৈঃ নমণ তত্র দশরাত্রেন গুরাতি । ১ ।
আক্রা প্রেতকার্য্যানি প্রেতসা ধনহা , ৯ ।
বর্ণানাণ যদ্ধে প্রোক্তণ তত্ত্বণ্নিয়কণ চঠাবিশি
মরীচিশল্পবচনে ॥ ১৯ ।।

প্রাঃ — দত্তক মৃতাহে পার্বণে করিতে পারে কিনা এবা পার্বণে কয় পুক্ষকে পিঞ্চিবেক আর দত্ত প্র পূপ্র ও গৌরেরা বা কয় পুরুষকে দিনে ইতি ।।

শাস্যা) মৃতাহে পার্বণ কর্তুণ দ্বকোনৈব শনু য়াব। পা

আস্যে। মৃতাহে পার্বণ কর্তু দ একোনৈর শকু রাব। পা ভরং বিণে পি গুইালাদি এয়াণাং পিও দস্তুনঃ।। দভ ফ্যা সুতো দ্বাভামে ক্সৈত হ সুতো বপেও।।

। পুতাক পার্নিনের বিধানা কেত্রজীরসৌ। ছ ttalia) याजीवड व्युप्तदक्षिक नुजानमा । शि ভুঞ্চস্য দেব[ু] ীরসম্য ত্রিপৌক্ষণ। সর্বতানেক প্রোত্র, নানে, কোমি স্তর্গ ক্ষরে ইহান। ২। যাবস্তঃ িপি ভূবনাঃ স্বাহতি ইত্রকাদয়ঃ । পিতৃণা**ংযাজ** भ॰ ऋबु १६ द्विनिदेश शिज्जिक महा । । **बाज्या॰ न** ছাৰ তহ প্ৰাঃ পোপ্ৰাফৈকেন ত**ং সমণ।। চত্ত**ে গুতাৰ ক্ষেণ চৰ-দেখা বিপৌক্ষী। ইতি **জাতু** क्ष अञ्चाराज काक । जिनि रच्यानि ॥ २०॥ — াত্তৰ গ্ৰুণেয় পাচ যদি স্তীয়**স পুঞ্হয় তদেখাদ্য** শ্ৰানেৰ কলিবে পাল মন্তক জোপ্ৰাপ পাইবে

18 81 II

্লা, । ইবংস প্রকংশ র জাদ্যপুদি (দিক সহ। স্বই)। ভুক্ক । সভ্র দভক্স) জেটিজ নৈব বিষয়ভা।

্ব কর্ব ভিত্তিত সূজ্য। তথাদাল শুলিয়েড্দা । পুলাবে ∮পুল্যক দত্তকঃ হায়াত্ পিণ্ডাৰুঃ ষ্ডিভিভিডিঃ ১ । পুনজীতে ক্রিলেচ তেষু জ্যৈষ্ঠাণ নবিদ্যা তে ইতি মরীচিদেবল ৰচনে ॥ ২১॥

 পু হী তালোকা হর পত ধ্ইলে তাহার ভাবরা ভাব র সমস্ত ধন দত্তক পাইবে কি পিতা বা ছাতা অ থব। ভূতি পুল ইহারাকি কিছ্ পাইবে।।

🕽 गृत्व धनवानिनि कु छेहत्ना गाँख 🖣 छन्। मचे श्वाबराताम्बः मनिष्टिः श्विकीछिणः ।।

॥ দায়দত্তকরত্নাকর ॥

অসাপু নুর্তিরো ন পিতরঃ পুরাদায়হরাঃ পিতুঃ।
নাগানি ঠতথালের্য়নঃ শের্য়সোভাবে পাপীয়ান্ক্থ মই
তি । বহবশেতভু সদৃশাঃ সরে থাক্থথন। ভা
গিনঃ। ১ । পূষঃ পুরঃ অন্তা জোটো, জঘনো।
যোষ উত্তরঃ। জনাদেতে পুবত্ততে কৃতে পিত
রি তদ্ধনে । জাায়সোজাায়সোইলাভে জঘনো।
যোষ আপুয়াত্। ২ । পিগুদোণন হরদৈচ্যাণ
পূরীভাবেপরঃ পরঃ। ৩ । সরে হানীরস্কা
তে পুত্রা দায়হরাঃ অন্তা ইতি নারদ যাজ্যভ্রা
দেবল বচনানি। ২২।

পুর্মঃ — দ্তক পিতামহ ধন পাইতে পারে কি না।।
উত্তরং গুড়াতুঃ পৈতৃকমপি ধনং দত্তক আগুরু ।

অসাপু

প্তান্ ছাদশ যানাহন্ণা॰ স্বায়স্থাননুঃ থা॰
নাবে

বড়বলু দায়াদাঃ বড়দায়াদবাক্বানা ওরসংক্রে

জাশ্চের দ্বঃ কৃত্রিন এবচ। গুটে ত্পায় পরিজশ্চ
দায়াদাবাল্ধবাশ্চ ষট্।। ১।। ঔরসং পুত্রিকা পুত্র
ক্ষেত্রজং দত্তকৃত্তিমো। গুটংচেরাপরিজ্ঞ ঋক্থ
ভাজং পুচক্ষতে ইতিমনুবোধায়ন বচনে। ২৩।

পুশাঃ — ঔরস পুঞ্জেরসহিত দত্তক পুঞ্জের কি পুকার অংশ কল্পনা হইবে ৷

অসো । গ্র্হীতে বিধিনাদত্তে কদাচিত্রেরিলো ভবেত্। বি ভর° । দিট্টার সমাযুক্তোধাঞ্চিকঃশীলবান্ যদি । সল

ভেত তৃতীয়াংশং ঘাংশমৌরস আণু ফ্লাৎা। 🔑

অসাপু । উৎ পল্লে জৌরসে পূথে তৃতীয়াং শহরাঃ শ্তাঃ ।।

য়াগানি । সবর্ণা অসবর্ণাস্ত প্রাসাচ্ছাদনভাগিনঃ প্ররসে পুন

কৎ পল্লেডেষু জ্যৈষ্ঠং ন বিদ্যাতে ।। তেষাং সবর্ণা

যে পূজান্তে তৃতীয়াংশ ভাগিনঃ ।। উপপল্লো গুলাঃ
সর্বিঃ পুলোষস্য তু দ্ভিনঃ ।। সহরেতের তদ্ক্থং
সংপুল্গোপ্যনাগোত্রতঃ ।। ইতি কাত্যায়ন দেবল

মনু বচনানি ।। ২৪ ।।

প্রায়ঃ — নিগুণ দত্তক কয় অংশ পাইতে পারে 🕊
উত্তরং — নিগুণস্য তুদত্তকস্য চতুথাংশোবিধীয়ক্তে।।

জারা } তিঙ্গিংশেচৎ পুতি গৃহীতে ঔরস উৎপদ্যেত্ স চতু পুষানে ∫ থা নাগলাগী যদি নাভ্যদিয়িকেযু পুযুক্ত স্যাৎ।।১।। যদ্যেব ক্ত ঔরসঃ পুএ উৎপদ্যেত তুরীয়ভাগে পুভবতি।।ইতি দক্ষ বৌধায়ন বচনে।।২৫।।

পূখা - - যদি বিধি ু কি দত্তক গুহণ লা করিয়া থাকে
পশ্চাৎ ঔরস্বহয় সে স্থানে কি পুকার অংশ
হইবে ॥

উত্তর°—বিধানেন বিনা হস্ত গৃহীতো দত্তকঃ কৃচিৎ ॥

অসাপু) অংশভাজং নতং স্বর্যাৎ বিদনভাক্চ সঃ॥

নাণানি) অবিধায় বিধানং যঃ পা নন্দনং ॥ বি

বাহ বিধিভাজ স্তংন ॥ তিন্দিন

জাতেসুতে মতেন ক্তেচ বিধানকে ॥ তৎ ।
তবৈষ্ব বিভ্না যা যামী পিত্রজ্বা॥ হীনা
প্রীবেষ্পুলিছাদন সভ্তাঃ ॥ ইতি বিশ্ব
মালা দেবল বহনানি ॥ ২৬ ॥

শ্রীমসুদাধরতকবাগীশ ভটাচার্যাত্মজ শ্রীনজ্যী। মালস্কার বিরচিতে দায়দত্তকরতাকরে দতক ব্যা শাসুকান্তয়নিশাস দশমোক্তরঃ সমাপ্তঃ।।



कार्डमूट परवन कृष्ड ह विधानरक ॥ उरक् ठरेमार विख्ना यह सीभी शिङ्ब्छना॥ हीन्। । शृकीरवश्धा नाष्ट्रामन नाष्ट्राहा॥ हैकि विधान मो ना रहतन रहनानि ॥ २७॥

মানুদাধরতক্রাগীশ ত টাচার্যাত্মজ ভীলতান ধালস্কার বির্চিতে দায়দতকরতাকরে দলক ব্যাদ চনুকান্ত স্থিনীয় দশকোওকং নমাঞ্চা



